MPHIN36951
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 01, अंक 06 मासिक पत्रिका
दिसंबर 2021

हर-हर महादेव

हमारा देश हमारा अभिमान

सोशल मीडिया
बना जान का दुश्मन..!

लम्बत्स पिङ्गल जटा मुकुटोत्कटाय दंष्ट्राकरालविकटोत्कटभैरवाय।
व्याघ्राजिनाम्बरधराय मनोहराय त्रिलोकनाथनमिताय नमः शिवाय।।

जो लटकती हुई पिङ्गवर्ण जटाओं के सहित मुकुट धारण करने से जो उत्कट जान पडते हैं। तीक्ष्ण दाढों के कारण जो अति विकट और भयानक प्रतीत होते हैं। साथ ही व्याघ्रचर्म धारण किए हुए हैं तथा अति मनोहर हैं तथा तीनों लोकों के अधीश्वर भी जिनके चरणों में झुकते हैं। उन भगवान शिव शंकर को मेरा प्रणाम।

हमारा देश
हमाराअभिमान

वरिष्ठ संरक्षक मंडल
• अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
• श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
• श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी श्री धूमेस्वर धाम
• श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल
• श्री लोकेश चतुर्वेदी • श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
• श्री अरविंद जैन • श्री अरुण कांत शर्मा, महेश पुरोहित
• विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
• श्री मनोज भारद्वाज, अनिल जैन, निर्मल वासवानी

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित : प्रमुख परामर्शदाता

विशेष संवाददाता
• रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार
एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर हाई कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन- साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार
• डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
• डॉ. मुकेश चतुर्वेदी, • डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
• अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी • सुरेश शर्मा
• नारायणदास गुप्ता, • पीयूष श्रीवास्तव

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
• सुनील • हरशूल • संजू

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी ।
(सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
कवर स्टोरी	04-05
	06-07
कोरोना	9
नशा	9
देश-प्रदेश	10-11
महाकाल नगरी	12
खेल	13
अर्थव्यवस्था	14
खेल	15
गौरव	17
आस्था	18
सवाल	20
प्रदेश	21
राजनीति	28
नई व्यवस्था	29
इंदौर	30
निमाड़ अंचल	31
स्वास्थ्य	32
परवरिश	33
वास्तु	35
पर्यटन	36-37
मौसम	40
खानपान	43
धर्म	44-45
ग्लैमर	46-47-48

संपादकीय

आंदोलन तो खत्म हो गया... अब कैसे नेतागिरी करेंगे राकेश टिकैत...

नए कृषि कानून के खिलाफ आंदोलन खत्म हो गया है। इस आंदोलन के माध्यम से राकेश टिकैत ने यह साबित कर दिया है कि वह भी अपने पिता चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की तरह बड़ा आंदोलन चलाने की काबिलियत रखते हैं। पिता महेंद्र सिंह टिकैत अपनी जिद्द के बल पर किसी भी सरकार को बैकफुट पर खड़ा कर दिया करते थे। नया कृषि कानून वापस हो गया है, इससे किसे फायदा होगा, किसको नुकसान, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि साल भर से अधिक समय तक चले आंदोलन में कई उतार-चढ़ाव देखने को मिले। आंदोलनकारियों में जहां सत्ता पक्ष के प्रति तल्खी दिखाई दी तो विपक्ष ने भी खूब सियासी रोटियां सेंकी। मोदी सरकार ने भी आंदोलन खत्म करने के लिए कई हथकंडे अपनाए। कई महीने तक तो किसान नेताओं और सरकार के बीच किसी तरह का कोई संवाद ही नहीं हुआ। आंदोलनकारियों पर आरोप लगा कि उन्हें विदेश से फंडिंग की जा रही है, खालिस्तान की मांग करते लोग भी यहां दिखाई दिए। 26 जनवरी को लाल किले पर जो हुआ उसे भी कोई याद रखना नहीं चाहेगा। वह घटना किसान आंदोलन पर एक बदनुमा दाग था। आंदोलन के विस्तार की बात की जाए तो यह आंदोलन कभी पूरे देश के किसानों का आंदोलन नहीं बन पाया। पंजाब, हरियाणा में आंदोलन का जबरदस्त प्रभाव देखने को मिला तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ जिले ही आंदोलन से प्रभावित हुए। किसान नेता राकेश टिकैत की लखनऊ में डेरा डालने की हसरतें पूरी नहीं हो पाईं। आंदोलन खत्म जरुर हो गया है, मगर किसानों क़ी कुछ मांगें बाकी हैं, जिसमें एमएसपी की मांग प्रमुख है। जिस पर सरकार और किसान नेताओं के बीच बातचीत जारी रहेगी।

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

लड़कियों की विवाह की बढ़ाई... नारी जीवन में एक नया उजाला

मोदी ने 2020 के स्वतंत्रता दिवस सम्बोधन में घोषणा की थी कि देश में लड़कियों की शादी की न्यूनतम उम्र को 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 किया जाएगा। वे जो कहते हैं, उसे साकार भी करते हैं, यही कारण है कि करीब एक वर्ष बाद ही प्रधानमंत्री ने अपनी घोषणा को क्रियान्वित कर दिखाया है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में महिलाओं के लिए विवाह की कानूनी आयु 18 से 21 वर्ष तक बढ़ाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। अब इसे संसद में पेश किया जाएगा।

निश्चित ही इस नयी व्यवस्था के बनने से नारी जीवन में एक नया उजाला होगा। एक मंजिल, एक दिशा और एक रास्ता, फिर भी स्त्री और पुरुष के जीवन में अनेक असमानताएं रही हैं, समाज की दो शक्तियां आगे-पीछे चल रही थीं। इस तरह की विसंगतियों एवं असमानताओं को दूर करने के लिये सोच के दरवाजे पर कई बार दस्तक हुई, जब-जब दरवाजा खोला गया, दस्तक देने वाला वहां से लौटता दिखाई दिया। लेकिन मोदी ने दस्तक भी दी और इसे साकार भी किया है, जिसका स्वागत होना चाहिए। क्योंकि इससे नारी तेजी से विकास करते हुए अपने जीवन में पसरी अनेक विसंगतियों को दूर होते हुए देख सकेंगी। लेकिन कानून बनाने का फायदा तभी है, जब उसे संपूर्णता में लागू किया जाये। परिवार व समाज को बेटियों के व्यापक हित के लिए ज्यादा ईमानदारी एवं संवेदना से सोचना अपेक्षित है। अब भारत में पुरुष और महिला, दोनों के लिए विवाह की न्यूनतम आयु सीमा 21 हो जाएगी, जो एक आदर्श एवं समतामूलक समाज की संरचना को आकार देगी।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

सोशल मीडिया बना जान का दुश्मन..!

शेयर और लाइक्स पाने की चाहत में खुद की जान से भी कर रहे खिलवाड़

इंदौर। आज तेजी से हर कोई सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है। कुछ भी कार्य करने के बाद तत्काल सोशल मीडिया पर फोटो और वीडियो वायरल कर दिए जाते हैं। फिर इंतजार रहता है लाइक्स, कमेंट्स और शेयर का। कई बार जब यह नहीं मिलता है तो मन उदास हो जाता है। यही सोशल मीडिया अब लोगों की जान का दुश्मन भी बन रहा है। कुछ लोग सोशल मीडिया पर प्रसिद्धी पाने के चक्कर में खुद की जान से खिलवाड़ भी कर रहे हैं।

मानसिक बीमारियों का भी हो रहे हैं शिकार

हाल ही में शहर में दो ऐसे मामले सामने आए हैं, जिसमें एक नाबालिग के गले में मौत का फंदा कस गया। वहीं सेल्फी लेने के चक्कर में एक छात्रा की जान चली गई। दरअसल अधिकांश नाबालिग और युवा वर्चुअल वर्ल्ड को ही रियल समझने की गलती करते हुए तनाव के चलते मानसिक बीमारियों का भी शिकार हो रहे हैं। वर्चुअल वर्ल्ड में प्रसिद्धी पाने के लिए नाबालिग बच्चे और युवा वर्ग काफी हद तक जोखिम उठाते हैं और कभी-कभी हादसे का शिकार भी हो जाते हैं। देखा गया है कि चलती ट्रेन के साथ सेल्फी लेना या यू ट्यूब के लिए वीडियो बनाना। चलती गाड़ी पर सेल्फी लेना सहित खतरनाक स्थानों पर फोटो खिंचने के दौरान हादसे हो जाते हैं। मानसिक चिकित्सक और एक्सपर्ट भी मानते हैं कि सोशल मीडिया के कारण मानसिक रोगों में बढ़ोतरी हुई है और कई लोग तनाव में आकर इन रोगों की गिरफ्त में आ रहे हैं।

रील्स बनाने के शौक में गई जान

इंस्टाग्राम पर वीडियो अपलोड करने के लिए वीडियो बनाने के दौरान 10 वीं के एक छात्र की मौत हो गयी। वह एक इंस्टाग्राम स्टार था और अक्सर रोचक अंदाज में वो शॉर्ट वीडियो इंस्टाग्राम पर अपलोड भी करता था लेकिन वीडियो बनाना महंगा पड़ गया और जरा सी चूक के चलते उसकी जान चली गई। दरअसल, छात्र की मौत का सनसनीखेज मामला इंदौर के हीरानगर थाना क्षेत्र का है। जहां कबीटखेड़ी लाहिया कालोनी में रहने वाले 10 वीं के छात्र आदित्य पिता देवीलाल नायक की मौत खेल-खेल में हो गई। जानकारी के मुताबिक 14 साल के आदित्य को इंस्टाग्राम रिल्स और शार्ट वीडियो बनाने का बहुत शौक था और वो स्वयं को इंस्टाग्राम स्टार मानता था और आदित्य का ये ही शौक उसकी जान के दुश्मन बन गए। आदित्य खेल-खेल में फांसी लगाने का नाटक कर उसका वीडियो बना रहा था जब वह कुर्सी पर चढ़ता है और फांसी का फंदा गले में डाल लेता है। जैसे ही हाथ छोड़ता है तो कुर्सी अनबैलेंस होकर गिर जाती है। फिर वह फंदे पर झूल जाता है। बताया जा रहा है कि जिस वक्त ये हादसा हुआ था, उस समय घर पर आदित्य और उसका छोटा भाई मौजूद थे। घटना के वक्त मृतक आदित्य के माता पिता पारिवारिक शादी समारोह में शामिल होने जावरा गए हुए थे। इधर, जब आदित्य फांसी पर झूला तो वहां मौजूद उसके भाई ने शोर मचाया तो आस पास के लोग आ गए और उसे अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने आदित्य को मृत घोषित कर दिया। आदित्य के पिता देवीलाल नायक की माने तो जिस वक्त ये सबकुछ हुआ उस वक्त वो बाहर गए हुए थे।

पति-पत्नी के रिश्तों में...

दरार डाल रहा सोशल मीडिया

पति-पत्नी के रिश्तों में दरार आने की एक वजह सोशल मीडिया भी है। इस साल में ऐसे कई मामले महिला पुलिस के पास पहुंचे हैं, जिनमें सोशल मीडिया के कारण दांपत्य जीवन में कड़वाहट फैल गई। रिश्ते टूटने की कगार पर पहुंच गए, लेकिन पुलिस ने सूझबूझ से इन मामलों को सुलझाया और पति-पत्नी के बंधन को और मजबूत धागे से बांधा। हालांकि इसके बाद भी इन केसों में कोई कमी नहीं आई है और हर महीन पांच से दस मामले पुलिस अफसरों के सामने आ रहे हैं। भले ही सोशल मीडिया से जुड़े रहना आज के दौर की जरुरत हो गई है, लेकिन पति-पत्नी के बीच विवाद की मुख्य वजहों में भी ये शामिल हो चुका है। पुलिस के पास आने वाले ज्यादातर मामलों में पति-पत्नी के बीच विवाद की वजह दहेज प्रताडऩा या सास- ससुर से पटरी न बैठना के बजाय सोशल मीडिया ही बन रहा है।

20 से भी ज्यादा मामले

महिला थाने में दहेज प्रताडऩा, सास-ससुर की प्रताडऩा, पति द्वारा परेशान करना जैसे अन्य कई शारीरिक व मानसिक प्रताडऩा के मामले आते हैं। अब हर महीने 20 के आसपास केस सोशल मीडिया से जुड़े आ रहे हैं। महिलाओं की शिकायत हैं कि पति दिनभर मोबाइल के जरिए सोशल मीडिया पर व्यस्त रहते हैं और परिवार को समय नहीं देते। पति भी कुछ ऐसी ही शिकायत करते हैं। उनका कहना है कि पत्नी परिवार, बच्चों को छोड़ दिनभर चेटिंग में व्यस्त रहती है। पति-पत्नी में छोटी से विवाद पर घर टूट जाता है, जिसका सबसे ज्यादा असर बच्चों पर पड़ता है। ऐसे मामले लगातार न बढ़ें और टूटे रिश्तों को दोबारा जोडऩे की कोशिश की जाए, इसलिए महिला थाने में ही महिला परामर्श केंद्र बनाया गया है, जहां पति-पत्नी की काउंसलिंग कर समझाइश दी जाती है।

सेल्फी के चक्कर में मौत

उधर, एरोड्रम थाना क्षेत्र में 12 साल की एक मासूम बच्ची की सेल्फी लेने के चक्कर में जान चली गई। घटना एयरपोर्ट के सामने मां वैष्णो देवी नगर की है। यहां 12 साल की आयुषी सोलंकी पिता अतुल सोलंकी अपने कमरे में थी। काफी देर तक बाहर नहीं आने पर परिजन जब उसके कमरे में पहुंचे तो वह फंदे पर लटकी मिली। पुलिस ने मामले में आशंका व्यक्त की है बच्ची घर पर कुर्सी पर खड़ी होकर फांसी लगाने की एक्टिंग कर सेल्फी ले रही थी। इस दौरान बैलेंस बिगड़ा और कुर्सी सरक गई, जिससे फंदा गले में कस गया और मासूम की मौके पर ही मौत हो गई।

साइट विजिट कर पूरी जानकारी जुटाने के बाद कर रहे वारदात

सोशल साइट्स पर साइबर अपराधियों की नजर...

इन दिनों तेजी से इंटरनेट का उपयोग हो रहा है और लगभग हर व्यक्ति सोशल मीडिया से जुड़ा है। फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि पर लोग अपडेट रहते हैं और अपने व अपनों की सारी जानकारी इस पर पोस्ट करते हैं। ठगोरे सायबर अपराध को अंजाम देने के लिए इन सोशल मीडिया अकाउंट पर निगाह रखकर वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। दरअसल ये ठगोरे सोशल साइट्स विजिट कर सारी जानकारी जुटा लेते हैं और फिर उसे झांसे में लेकर ठगी करत हैं। पिछले दिनों राज्य सायबर सेल पुलिस के इंदौर जोन कार्यालय और क्राइम ब्रांच पर ऐसी अनेक ठगी की शिकायतें पहुंची है, जिनमें आरोपियों ने पहले सोशल मीडिया के जरिए दोस्ती की और फिर ठगी कर दी। इस तरह के मामले सामने आने के बाद जांच में भी खुलासा हुआ है कि उन लोगों के साथ ज्यादा ठगी हुई है, जो सोशल साइट्स पर अपनी सारी जानकारी अपलोड करते हैं और किसी भी अनजान व्यक्ति से भी दोस्ती कर लेते हैं। चूंकि वर्चुअल वर्ल्ड में बहुत ही कम लोग एक -दूसरे को आमने-सामने जानते हैं, इसी का फायदा उठाकर ठगोर ठगी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं।

फिमेल वाइस में होती है बात

अपराधियों की एक अन्य तीसरी टीम किसी से भी संपर्क करती है तो वह फिमेल वाइस में ही आरोपी बात करते हैं, जिससे सामने वाले को पूरी तरह विश्वास ले लिया जाएगा। इसके बाद बातचीत का सिलसिला चलता है और फिर ठगी करने की प्लानिंग होती है।

खुलवाते हैं फर्जी अकाउंट

चौथी टीम के सदस्य मजदूर और गरीब तबके के लोगों को झांसा देकर उनके आधार कार्ड सहित अन्य जानकारी लेकर उनके बैंक खाते खुलवाते हैं। बाद में कुछ रुपयों का लालच देकर उनके एटीएम अपने रख लेते हैं। इसके बाद पांचवी टीम के सदस्य इन अकाउंट से एटीएम की सहायता से रुपए निकाल लेते हैं।

ठगी से बचाव के तरीके

चूंकि वर्चुअल वर्ल्ड में हमारी हर किसी से अच्छी तरह जान पहचान नहीं होती है अतः हम किसी पर पूरी तरह विश्वास न करें। सायबर ठगी से बचने के लिए सबसे जरूरी है कि आपके अकाउंट का पासवर्ड स्ट्रांग हो। प्रोफाइल लॉक हो और उसमें कोई हस्तक्षेप न कर सके। कभी भी किसी अनजान से तब तक दोस्ती न करें, जब तक उसकी पूरी जानकारी आपके पास न हो। वहीं दोस्ती के बाद उससे आकर्षित न हो। किसी से भी दोस्ती के पहले उसकी प्रोफाइल चेक कर लें और दूसरों से भी उसकी जानकारी लें।

टीम बनाकर करते हैं ठगी

सोशल साइट्स पर ठगी करने वाले अपराधियों की टीम होती है। एक टीम के सदस्य सोशल साइट्स पर पर एक्टिव रहते हैं और फेस बुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि पर निगाह रखते हैं कि कौन व्यक्ति क्या पोस्ट डाल रहा है और उसकी पसंद नापसंद क्या है। दूसरी टीम रिसर्च के बाद फर्जी प्रोफाइल बनाती है और जिस व्यक्ति को ठगना उसके आउपपुट पर निगाह रखती है। साथ ही यही टीम सोशल साइट्स पर दोस्ती भ्झी करती है और फिर उसे आकर्षित किया जाता है।

अपना घर-अपना मोहल्ला हो सुरक्षित अभियान में सभी जगह सीसीटीवी लगाने की तैयारी

इंदौर में घर के बाहर खडी महिलाओं से चेन लूटने, सूने मकान की रैकी कर चोरी करने, बाहर खड़े वाहन चोरी करने जैसे घटनाएं बढ़ रही है लेकिन पुलिस धरपकड़ भी कर रही है। कई मामलों में सीसीसीटीवी की चैन खंगालने से बदमाशों का सुराग लगना आसान हो जाता है इसलिए अब पूर्वी इलाके की कॉलोनियों में कैमरे लगवाने का अभियान शुरू किया जा रहा है। अपना घर- अपना मोहल्ला हो सुरक्षित अभियान के तहत पुलिस, नगर सुरक्षा समिति रहवासी संघों से मिलेगी और घर के सामने तथा गली के मुहाने पर कैमरे लगाने के लिए तैयार करेगी।

बाणगंगा इलाके में 13 अक्टूबर की सुबह पोलोग्राउंड मे आकाश की हत्या हुई तो बदमाशों ने जांच को गुमराह करने के लिए आंख में मिर्च डाली और चाकू मारते समय कहा कि भइया के रुपए लौटा देना। मृतक पर कर्ज था इसलिए पुलिस कर्ज देने वालों को ढूंढ़ती रही। आंख में मिर्च डालने से लूट की आशंका पर भी काम करती रही लेकिन बाद में मामला प्रेम संबंधों को निकला। बदमाशों ने चलाकी तो की, मुंह पर कपड़ा बांधकर फरार हुए। काफी दूर जाकर उन्हें लगा कि अब पुलिस तलाश नहीं कर पाएगी तो एक बदमाश ने चेहरा से कपड़ा हटा दिया और वहीं कैमरे में आ गया। पुलिस ने श्रंखलाबद्ध तरीके से रास्ते का नक्सा बनाकर सीसीटीवी खंगाले। करीब 100 स्थानों के कैमरे खंगाले और पुख्ता सुराग हासिल कर बदमाशों को पकड़ लिया। ऐसे ही विजयनगर, एमआइजी, लसूडिया

में चेन स्नेचेरों ने आतंक मचा दिया था। पुलिस ने हर संभावित गली में जाकर लोगों के कैमरों की रिकार्डिं देखी तो बदमाशों का चेहरा दिख गया। आरोपियों को पकड़ा तो 16 चेने बरामद हुई। बदमाश पकड में नहीं आते तो दीपावली पर कई जगह इस तरह की घटनाएं करने की तैयारी में थे।

कैमरे लगाने को करेंगे जागृत

एसपी, पूर्व आशुतोष बागरी के मुताबिक, इन घटनाओं में फुटैज के महत्व को देखते हुए अब लोगों को कैमरे लगाने के लिए जागृत किया जाएगा। पुलिस टीम व नगर सुरक्षा समिति की टीम कॉलोनी, मोहल्लों में जाकर रहवासी संघ के पदाधिकारियों से मिलेगी। लोगों को कैमरे का महत्व समझाया जाएगा। प्रयास रहेगा कि गली के दोनों मुहाने व घर के बाहर की ओर कैमरा रहे ताकि हर आने जाने वाला उसमें कैद हो जाए। मुहाने पर लगने वाले कैमरा इस तरह का हो कि गाड़ी की नंबर प्लेट भी दिख जाए। एसपी का कहना है, सभी जगह कैमरे लग जाएंगे तो बदमाश वारदात करने से डरेंगे और वारदात हुई तो पकड़े भी जाएंगे।

कैमरे से निगाह : खजराना में पुलिस ने वारदाते रोकने के लिए मुख्य सड़क को शुरूआत से अंत तक कैमरे की जद में कर दिया है। यहां मुख्य सड़क का एक भी हिस्सा ऐसा नहीं था जो तीसरी नजर की जद में न आए। इसका फायदा भी हुआ।

ऑनलाइन फ्रॉड पर शासन की व्यवस्था 24 घंटे में होगा 100 प्रतिशत रिफंड

इंदौर। ऑनलाइन फ्रॉड के मामले लगातार बढ़ रहे है, लोगों को हर दिन लाखों का नुकसान हो रहा है। इसे ध्यान में रखते हुए शासन ने एक टोल फ्री नं. 155260 बनाया है। ऑनलाइन फ्रॉड होने की स्थिति में इस नंबर पर कॉल कर जानकारी देंगे तो 24 घंटे में शत प्रतिशत राशि का रिफंड होना तय है। ऑनलाइन फ्रॉड के मामलों में लोग पुलिस अथवा बैंक को सूचना देने में देरी करते है जिसका नुकसान होता है। क्राइम ब्रांच और साइबर सेल में हर दिन 4-5 शिकायतें आती है। चूंकि लोग देरी से शिकायत करते है इसलिए राशि वापस नहीं मिल पाती है। सरकार ने इसे ध्यान में रखते हुए टोल फ्री न. 155260 बनाया है। इस नंबर के साथ साइबरक्राइम डॉट जीओवी डॉट कॉम पर सूचना देकर राशि वापस मिल सकती है। साइबर सेल के एसपी जितेंद्रसिंह के मुताबिक, टोल फ्री

नंबर 155260 से सभी बैंकों को जोड़ा गया है। इस नंबर पर ऑनलाइन फ्रॉड की सूचना दी जाए तो तुरंत कार्रवाई होती । आमतौर पर ऑनलाइन फ्रॉड में राशि दूसरे बैंक अथवा ई वॉलेट में ट्रांसफर होने में थोड़ा समय लगता है। लोग तुरंत सूचना दें तो संबंधित बैंकों को जानकारी मिल जाती है और वे ट्रांसफर रुकवा देते है जिससे राशि वापस मिल जाती है।

कोरोना में ज्यादा सक्रिय थे ठगोरे

ऑनलाइन ठगी में ओटीपी फ्रॉड व फर्जी फेसबुक प्रोफाइल बनाकर दोस्तों से ठगी के मामले ज्यादा आ रहे है। कोरोनाकाल में भी बदमाशों ने ज्यादा वारदातें की। कोविड वैक्सीन रजिस्ट्रेशन के नाम पर फर्जी मोबाइल एप्लीकेशन, आर्मी अफफसर बनकर कोविड व अन्य टेस्ट कराने के नाम पर झांसा देकर ठगी के कई मामले हुए लेकिन लोगों को राशि नहीं मिल पाई। अब केवायसी अपडेट करने के नाम पर इंटरनेट बैकिंग हैक कर ठगी और बच्चों के ऑनलाइन गेम्स खेलने के कारण माता को होता है नुकसान के ज्यादा मामले आ रहे है।

इंदौर-भोपाल बनते जा रहे हैं हॉट स्पॉट

कोरोना : फिर खौफ और दहशत

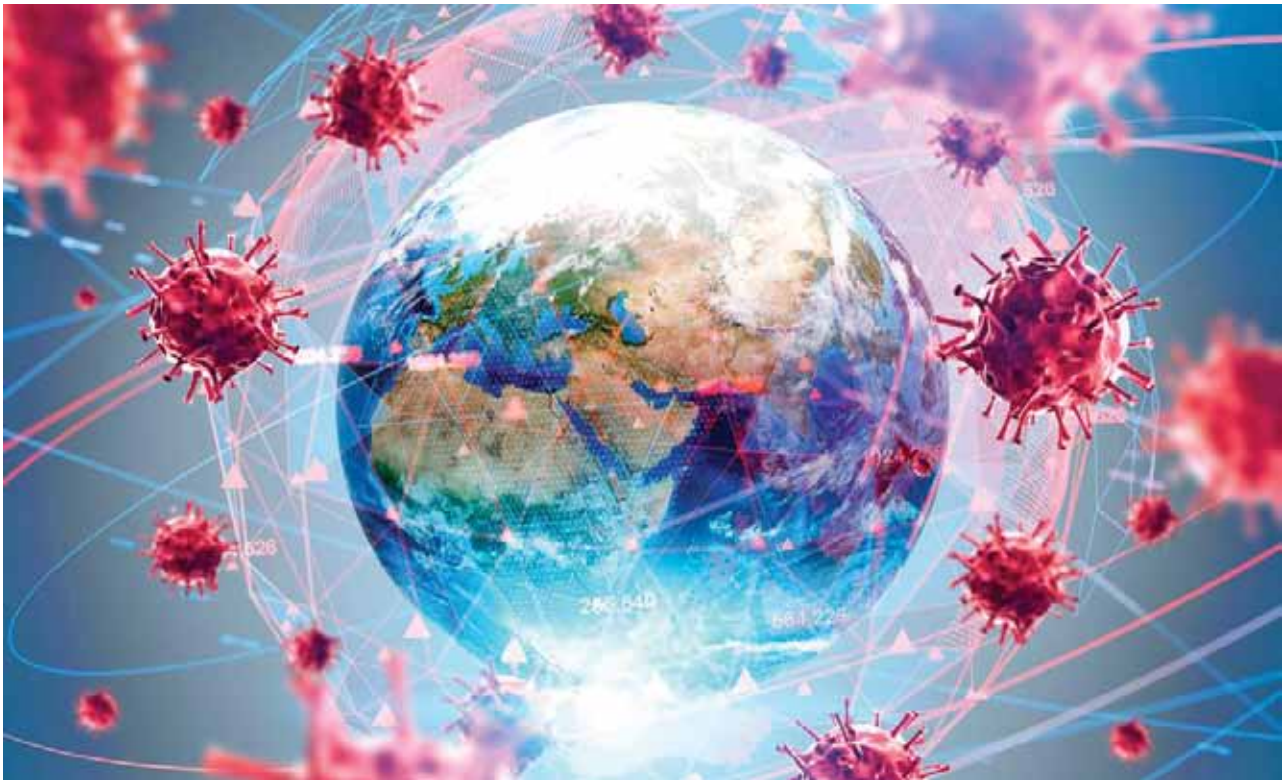

महामारी कोरोना की पहली लहर के बाद दूसरी लहर ने जमकर तांडव मचाया था और शहर में अनेक परिवारों को उजाड़ दिया था। इस महामारी ने ऐसा दुख दिया है कि कई लोग तो जिंदगी भर नहीं भूल पाएंगे। केंद्र व राज्य सरकार के साथ जिला प्रशासन के अधिकारियों, हमेश मरीजों की सेवा में तैनात रहने वाले डॉक्टरों और आमजन के प्रयास से इस जानलेवा बीमारी पर काबू पाने के प्रयास रंग लाने लगे और एक समय ऐसा भी आया, जब लाखों की आबादी वाले इंदौर शहर में मरीज मिलना ही बंद हो गए। लेकिन अब एक फिर से इस महामारी का नया वैरिएंट आने के बाद मरीज मिलने लगे हैं, जिससे फिर भय, खौफ और दहशत देखी जा रही है। इंदौर और भोपाल हॉट स्पॉट बनते जा रहे हैं। दरअसल कोरोना प्रतिबंधों से छूट मिलने के बाद एक बार फिर से मध्यप्रदेश में नए केस तेजी से बढ़ रहे हैं। 13 दिन में प्रदेश में 169 संक्रमित मिले हैं। इनमें भोपाल में सबसे ज्यादा 65 और इंदौर में 64 केस हैं। राजधानी और इंदौर कोरोना के हॉटस्पॉट बन गए हैं। इनके अलावा, जबलपुर-ग्वालियर जैसे बड़े शहरों के साथ रायसेन, दमोह, शहडोल, बैतूल, नरसिंहपुर, बड़वानी और होशंगाबाद में भी संक्रमण फैल रहा है। प्रदेश सरकार ने 17 नवंबर को कोरोना के सभी प्रतिबंध हटा दिए थे। इसके बाद कोरोना के केस में भी बढ़ोतरी होने लगी, क्योंकि अब शादी में न तो मेहमानों की संख्या निर्धारित है और न ही कोई रोक-टोक है। ऐसे में लोग भी संक्रमितों के संपर्क में आकर पॉजिटिव हो रहे हैं। अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 1 से 15 नवंबर के बीच प्रदेश में कोरोना के कुल 123 केस मिले थे। यह आंकड़ा 17 से 29 नवंबर के बीच 169 पर पहुंच गया।

प्रदेश की राजधानी भोपाल में 24 घंटे में 9 नए केस

मध्यप्रदेश में 24 घंटे में कोरोना के 12 नए केस मिले हैं। इनमें भोपाल में सबसे ज्यादा 9 पॉजिटिव हैं। पिछले 2 दिन में ही राजधानी में 13 केस मिल चुके हैं। 9 नए केस को मिलाकर आंकड़ा 22 पर पहुंच गया है। एक्टिव केस के मामले में भी भोपाल-इंदौर से आगे है। भोपाल में अभी 47 एक्टिव केस हैं, जबकि इंदौर में एक्टिव केस का आंकड़ा 42 है।

क्या कहते हैं डॉक्टर

कोरोना के नए वैरिएंट की दस्तक के बाद एक बार फिर से सतर्कता बढ़ा दी गई है। कोरोना को लेकर सीएम शिवराज सिंह चौहान की अहम् बैठक के बाद जिले में एयरपोर्ट रेलवे स्टेशन पर विशेष सतर्कत बढ़ाई है। जिला प्रशासन के अधिकारियों ने लोगों से अपील की है कि अभी सब खुला है, कोड प्रतिबंध नहीं है इसलिए सावधानी बरती जाए। डॉ. संजय दीक्षित, डीन, एमजीएम मेडिकल कॉलेज का कहना है कि साउथ अफ्रीका में मिला नया वैरिएंट कितना घातक है, यह चिकित्सकीय रूप से प्रमाणित नहीं है।

इंदौर में 9 दिन में 1 मौत, 56 केस

20 नवंबर से 29 नवंबर तक 9 दिन में ही इंदौर में 56 मरीज मिल चुके हैं। एक मौत भी हुई है। 20 नवंबर को 6 पॉजिटिव मिले थे। 21 नवंबर को 4 पॉजिटिव तो 1 मौत भी दर्ज हुई थी। 22 नवंबर को 3, 23 नवंबर को 13, 24 नवंबर को 5, 25 नवंबर को 2, 26 नवंबर को 12, 27 नवंबर को 10 पॉजिटिव मिले। 28 नवंबर को 1 केस मिला है।

भोपाल-इंदौर के आंकड़ों में भी अंतर

1 से 15 नवंबर के बीच भोपाल में 44 और इंदौर में 38 केस मिले थे। यह आंकड़ा पिछले 13 दिन में काफी बढ़ गया। भोपाल में 65 और इंदौर में 64 संक्रमित मिले हैं। जबलपुर में 8 और ग्वालियर में 1 केस ही मिला, लेकिन रायसेन, दमोह जैसे छोटे जिलों में आंकड़ा चौंकाने वाला रहा। रायसेन और दमोह में भी आंकड़ा दहाई के अंक पर पहुंच गया है।

4 लाख को नहीं लगा दूसरा डोज

शहर में अभी करीब 4 लाख लोग ऐसे हैं, जिनका दूसरा डोज बाकी है। कुछ लोग तो ऐसे मिले, जो नए वैरिएंट ओमिक्रॉन से अनजान थे। कुछ ने तो सरकार पर ही सवाल खड़े कर दिए। उनका कहना था कि सरकार को जो करना है, वो तो कर नहीं रही। सरकार बसों और ट्रेन में बिना वैक्सीन वालों को टिकट देना बंद करे।

हत्या, हत्या के प्रयास, चोरी, लूट के आरोपी नशे के आदि

नशा करा रहा अपराध

प्रदेश में लॉक डाउन खत्म होने के बाद से ही अपराधों का ग्राफ भी तेजी से बढ़ा है। इन अपराधों में जहां, हत्या, हत्या के प्रयास, चोरी, लूट के मामले सामने आए हैं और जब इन आरोपियों को पुलिस ने पकड़कर सलाखों के पीछे तो धकेल दिया है, लेकिन इनसे हुई पूछताछ में चौंकाने वाला खुलासा हुआ कि अधिकांश अपराध नशे के कारण किए गए हैं। यानि अधिकतर अपराध की जड़ नशा ही है। हाल ही में शहर में हुई हत्याओं के मामले में भी नशा ही कारण रहा।

तीन हत्या, दो में नाबालिग आरोपी

गत दिनों लसूड़िया थाना क्षेत्र में रियल एस्टेट कंपनी के सेल्स डायरेक्टर देवांशु मिश्रा की हत्या के मामले में पुलिस ने किन्नर जोया और उसके दो साथियोंको गिरफ्त में लिया। आरोपियों से हुई पूछताछ में पता चला कि वह रात में नशा करके निकले थे और खाना खाने के लिए उनके पास रुपए नहीं थे। इसके चलते किसी को लूटने की योजना बना रहे थे। रास्ते में देवांशु और उसका दोस्त सतीश दिखाई दिए तो इन्हें रोक लिया और लूट के लिए चाकू से हमला कर दिया।

14 साल के बालक ने कर दी हत्या

लसूडिय़ा में पिछले दिनों हुई युवक की हत्या में 14 साल के नाबालिग को पुलिस ने पकड़ा था। चाइल्ड लाइन की टीम पहुंची तो पता चला कि नाबालिग नशे का आदी है, यहीं नही उसकी बस्ती के कई नाबालिग नशा करते है, कुछ लोग आकर उन्हें नशा दे जाते है। चाइल्ड लाइन ने इस बाबद जिम्मेदार अफसरों को रिपोर्ट भी दी थी लेकिन आरोपी हाथ नहीं लग पाए।

अनेक राज्यों से जुड़े हुए हैं तार...

नशे के मामले में प्रदेश में इंदौर लगातार कुख्यात होता जा रहा है। यहां पकड़ाई एमडी सप्लायर की गैंग ने इंदौर से मुंबई, सूरत, दिल्ली, हैदराबाद, अहमदाबाद आदि बड़े शहरों में नशा बेचना कबूल किया। हाल की आंकड़े बताते है कि नशे की गिरफ्त में आने वाले सबसे ज्यादा युवा व नाबालिग है। नशे के लत में अपराध की दुनिया में भी शामिल हो जाते हैं।

मुखबिर नहीं, वालेंटियर...

दरअसल नशामुक्त समाज के लिए आमजन को सहयोगी बनाते हुए विभाग द्वारा पोर्टल बनाया गया है। इससे जुड़? के लिए नारकोटिक्स कार्यक्रम चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में इच्छुक स्वयं सेवकों, सामाजिक संस्थाओं चिकित्सक, शिक्षक छात्र, व्यापारी एवं अन्य संस्थाओं को अधिक से अधिक वालेंटियर बनाए जाएंगे। यह शिकायत और सुझाव तो देंगे, लेकिन यह मुखबिर नहीं रहेंगे।

हर महीने बन रहे नशे के 152 केस...

नशे के मामले में सबसे पहले अवैध शराब का नाम आता है जिसमें पुलिस आबकारी एक्ट में कार्रवाई करती है। इस साल औसतन हर महीने 406 केस दर्ज हुए। गांजा, चरस, ब्राउन शुगर, एमडी आदि के मामले एनडीएसएस एक्ट के तहत दर्ज होते है। इस साल हर महीने एनडीपीसी के औसतन 152 केस दर्ज हुए। पिछले दो सालों के मुकाबले यह ज्यादा केस है। इसमें पीने वालों की संख्या ज्यादा है।

नशेड़ी बदमाशों के खिलाफ फिर चलेगा अभियान

लसूडिया थाना क्षेत्र में रियल एस्टेट कंपनी के सेल्स डायरेक्टर देवांशु मिश्रा और एक नाबालिग की हत्या में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों ही मामलों में पता चला कि आरोपी नशे के आदि हैं। इसका खुलासा होने के बाद एक बार फिर यह तय हो गया कि नशा जान भी ले रहा है। इसके बाद अब पुलिस नशेड़ी और चाकूबाजी करने वाले बदमाशों की तलाश में जुट गई है। इसके चलते अब नशा बेचने वालों पर भी शिकंजा कसा जाएगा और नशे पर रोक लगाने के लिए सामाजिक संस्थाओं व आमजन भी सहयोग लिया जाएगा।

यहां बिक रहा नशाः पुलिस ने हाल ही में जो कार्रवाइयां कि उससे पता चला कि कुछ इलाके नशा बेचने के मामले में कुख्याय हो गए है। महिलाएं भी नशा बेचने में पीछे नहीं है। बार, पब, रेस्टोरेंट, क्लब व जिम में एमडी व कोकिन नशा उपलब्ध कराने में आंटी उर्फ प्रीति जैन गिरफ्तार भी हुई लेकिन फिर भी बिक्री बंद नहीं हो पाई।

बाबा रामदेव ने राहुल गांधी के हिंदू और हिंदुत्व वाले बयान पर किया पलटवार

राजस्थान। हिंदुत्व और हिंदुत्व को लेकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के बयान पर योग गुरु बाबा रामदेव ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति और व्यक्तित्व एक ही हैं। अब तुम कहोगे कि इंसान अलग है और शख्सियत भी अलग।।। ए बावले । इतना पढ़ लेना चाहिए, इतना बावला नही होना चाहिए। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह अक्षर बोध है। संस्कृति और भारतीयता की समझ एक बहुत बड़ा विषय है। यह केवल राजनीतिक प्रचार है, उनकी तरफ से हमेशा कहा जाता है कि मैं ब्राह्मण हूं और जनेऊ पहनता हूं लेकिन मेरे जनेऊ और उनके जनेऊ में अंतर है। साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदू एक संस्कृति है और संस्कृति की भावना हिंदुत्व है। उन्होंने कहा कि सनातन का अर्थ है जो अनादि काल से चलता आ रहा है। इस देश में रहने वाले सभी लोगों को एक धारा की धारा में चलना चाहिए।

एंकर अमन चोपड़ा ने अपने ट्विटर हैंडल से शेयर किया है। जिस पर कई सोशल मीडिया यूजर्स ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। अनामिका दुबे नाम की एक ट्विटर यूजर ने कमेंट किया कि यह राहुल गांधी के लिए एकदम सही जवाब है। दीपक अग्रवाल नाम के एक यूजर लिखते हैं कि बाबाजी आपको सुनकर मजा आ गया। वे नहीं जानते कि हिंदू और हिंदुत्व कहां से अलग-अलग समझते हैं। प्रवीण खंडेलवाल नाम के यूजर ने कमेंट किया कि बावले में इतनी बुद्धि होती तो वंश का विनाश नहीं होता। ढोल पीटने के अधिकारी हैं। कैलाश नाथ यादव (@kailashnathsp) नाम के ट्विटर हैंडल से लिखा गया था- स्वामीजी, एक व्यक्ति और एक व्यक्तित्व में अंतर होता है, इतना ज्ञान आपके पास भी होना चाहिए। अनुज नाम के एक ट्विटर यूजर लिखते हैं कि वह धर्म के विद्वान हैं। जो यह नहीं जानते कि व्यक्ति और व्यक्तित्व अलग-अलग हैं। राम और रावण व्यक्ति रूप थे लेकिन उनके व्यक्तित्व में जमीन और आसमान का अंतर था।

प्रदेश में भीषण शीत लहर और भयंकर सर्दी के मद्देनजर ऑरेंज अलर्ट जारी

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के भोपाल कार्यालय के वरिष्ठ मौसम विज्ञानी पी. के. साहा ने 'भाषा' को बताया कि मध्य प्रदेश के भोपाल, होशंगाबाद, इंदौर, उज्जैन, रीवा, शहडोल, सागर, जबलपुर, ग्वालियर एवं चंबल संभागों के जिलों में अगले दो दिन कहीं-कहीं पर भीषण शीतल लहर के साथ-साथ अनेक स्थानों पर शीतलहर का अनुमान है।

मौसम विभाग ने प्रदेश के 16 जिलों में अगले 24 घंटों में पाला पड़ने का अनुमान जताया है, इस कारण भी ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के भोपाल कार्यालय के वरिष्ठ मौसम विज्ञानी पी. के. साहा ने 'भाषा' को बताया कि मध्य प्रदेश के भोपाल, होशंगाबाद, इंदौर, उज्जैन, रीवा, शहडोल, सागर, जबलपुर, ग्वालियर एवं चंबल संभागों के जिलों में अगले दो दिन कहीं-कहीं पर भीषण शीतल लहर के साथ-साथ अनेक स्थानों पर शीतलहर का अनुमान है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा, प्रदेश के रीवा संभाग के जिलों तथा जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, नरसिंहपुर, मंडला, बैतूल, रायसेन, सीहोर, इंदौर, धार, उज्जैन, शाजापुर एवं दतिया जिलों में अगले दो दिन कहीं-कहीं पर भयंकर सर्दी के साथ-साथ अनेक स्थानों पर कड़ाके की ठंड पड़ने का अनुमान है। साहा ने बताया कि वहीं, प्रदेश के रीवा, उमरिया, छतरपुर,

टीकमगढ़, मंडला, बालाघाट, सीहोर, भोपाल, रायसेन, भिंड, मुरैना, श्योपुर, ग्वालियर, गुना, शिवपुरी एवं दतिया जिलों में अगले एक दिन में पाला पड़ने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि उत्तरी पहाड़ी राज्यों उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में हुई बर्फबारी के कारण वहां से आ रही ठंडी हवाओं से मध्य प्रदेश पिछले दो दिनों से ठंड की चपेट में है। साहा ने बताया कि पिछले 24 घंटों (रविवार सुबह से सोमवार सुबह तक) के दौरान प्रदेश के उमरिया, खजुराहो, नौगांव, सागर, भोपाल, रायसेन एवं ग्वालियर जिलों में तीव्र शीतलहर का प्रभाव रहा, जबकि 17 अन्य जिलों में शीतलहर रही। वहीं प्रदेश के सिवनी, बैतूल, इंदौर, धार एवं उज्जैन जिलों में तीव्र शीतलदिन रहा, जबकि भोपाल एवं जबलपुर सहित 13 जिलों में कड़ाके की सर्दी पड़ी।

समाज सुधार के बिना विकास का कोई मतलब नहीं है : नीतीश

शराब के दुष्परिणामों के आंकडों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा , इस आंकड़े सबलोग गौर कीजिए और हमारा आपलोगों से आग्रह है कि इसके बारे में सभी को बताएं। शराबबंदी के लिए निरंतर अभियान चलाते रहने की जरुरत है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बुधवार को मोतिहारी से समाज सुधार अभियान की शुरुआत करते हुए कहा कि समाज सुधार के बिना विकास का कोई मतलब नहीं है।

पूर्वी चंपारण जिला मुख्यालय मोतिहारी के गांधी मैदान से समाज सुधार अभियान की शुरुआत करते हुए कुमार ने कहा, '' विकास के साथ-साथ हमलोग समाज सुधार के लिए भी काम कर रहे हैं। आपको पता है, हमलोग शराब को लेकर वर्ष 2011 से अभियान चला रहे हैं। एक अप्रैल 2016 को हमलोगों ने पहले ग्रामीण इलाके में देशी और विदेशी शराब पर रोक लगायी जबकि शहरी इलाकों में विदेशी शराब बंद नहीं किया गया था। शहरों में पुरुष-महिलाओं,लड़के-लड़कियों ने शराब के आवंटित दुकानों के खोले जाने पर कड़ा विरोध जताया।

उसके बाद पांच अप्रैल 2016 को राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू कर दी गई।'' उन्होंने कहा कि अधिकारियों के साथ वह शराबबंदी के क्रियान्वयन को लेकर नौ बार बैठक कर चुके हैं और अब बड़े पैमाने पर लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा, '' जब भी कोई काम कीजिएगा तो कुछ लोग गड़बड़ करने वाले होते ही हैं। कई लोग इधर-उधर करके शराब पी रहे हैं और उन्हें गलत चीजें मिलाकर पिलाये जाने से उनकी मौतें भी हो रही हैं।'' कुमार ने कहा कि यह समाज सुधार अभियान है जो निरंतर जारी रहेगा तथा हर गांव और शहर में यह चलता रहेगा।

शराब के दुष्परिणामों के आंकडों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा , ''इस आंकड़े सबलोग गौर कीजिए और हमारा आपलोगों से आग्रह है कि इसके बारे में सभी को बताएं। शराबबंदी के लिए निरंतर अभियान चलाते रहने की जरुरत है।'' उन्होंने कहा , '' समाज सुधार के बिना विकास का कोई मतलब नहीं है। विकास के साथ समाज सुधार होगा तो समाज, राज्य और देश आगे बढ़ेगा। आपलोगों से उम्मीद करता हूं कि आप अपने गांव, इलाकों में जाकर इस अभियान को चलाईयेगा।'' समाज सुधार अभियान की शुरुआत करने के पहले मुख्यमंत्री ने समाहरणालय के सामने स्थित बापू की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर अपनी

श्रद्धांजलि दी।

बाद में समाज सुधार अभियान की समीक्षात्मक बैठक के दौरान पूर्वी और पश्चिमी चंपारण जिलों में इस दिशा में की गई कार्रवाई के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि पुलिस तथा मद्य निषेध एवं उत्पाद विभाग द्वारा जब्त की गई शराब को अतिशीघ्र नष्ट करें ताकि उसका कोई दुरुपयोग नहीं कर सके। उन्होंने कहा कि अधिकारी शराब पीने वाले और शराब का व्यापार करने वालों पर विशेष निगरानी रखें।

उन्होंने निर्देश दिया कि शराब का व्यापार करने वालों को पकड़े जाने पर अविलंब जेल भेजकर सख्त कानूनी कार्रवाई करें। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि कम उम्र में बच्चियों की शादी करने वालों पर नजर रखें और इसके लिए आशा आंगनबाड़ी और चौकीदारों का प्रशिक्षण सुनिश्चित करें।

उन्होंने निर्देश दिया कि पंचायती राज और नगर निकाय से जुड़े लोगों को भी यह जिम्मेवारी सौंपें ताकि बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों पर रोक लगायी जा सके। उन्होंने कहा कि सही मायने में यदि लोग दहेजमुक्त शादी में शामिल होने के लिए संकल्पित हो जाएंगे, तो इसका समाज में काफी गहरा प्रभाव पड़ेगा और यह कुप्रथा समाप्त हो जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि एससी एसटी कानून के तहत दर्ज होने वाले मामलों का निष्पादन ससमय किया जाए।

उन्होंने कहा कि शराबबंदी, बाल विवाह एवं दहेज प्रथा जैसे समाज सुधार की दिशा में जो अभियान चला है, उसका विशेष रुप से ख्याल रखें। शराबबंदी से संबंधित जो भी लंबित मामले हैं उसका शीघ्र निपटारा करें।

ओबीसी कोटे पर गलत तथ्य के लिए कांग्रेस नेता ने सीएम को भेजा कानूनी नोटिस

कांग्रेस नेता ने शिवराज को ओबीसी आरक्षण पर 'गलत तथ्यों' के लिए कानूनी नोटिस भेजा। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को मध्य प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग (एसईसी) को स्थानीय निकाय चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी)के लिए आरक्षित सीटों पर चुनावी प्रक्रिया पर रोक लगाने और इन सीटों को दोबारा सामान्य श्रेणी में कर अधिसूचना जारी करने का निर्देश दिया था।

कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य विवेक तन्खा ने रविवार को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को कानूनी नोटिस भेजा है और उन्हें तीन दिन के भीतर ओबीसी आरक्षण मामले में उच्चतम न्यायालय की सुनवाई के बारे में 'गलत तथ्यों का प्रचार' करने के लिए माफी मांगने को कहा।उन्होंने चौहान से इस समय सीमा के भीतर ओबीसी आरक्षण से संबंधित उच्चतम न्यायालय की सुनवाई के सही तथ्यों को प्रिंट, टेलीविजन और सोशल मीडिया मंचों पर रखने को कहा है। तन्खा ने अपने वकील के माध्यम से कानूनी नोटिस भेजा है। उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को मध्य प्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग (एसईसी) को स्थानीय निकाय चुनाव में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षित सीटों पर चुनावी प्रक्रिया पर रोक लगाने और इन सीटों को दोबारा सामान्य श्रेणी में कर अधिसूचना जारी करने का निर्देश दिया था।

उच्चतम न्यायालय का यह फैसला भोपाल जिला पंचायत के अध्यक्ष कांग्रेस नेता मनमोहन नागर द्वारा शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाने के बाद आया है। उन्होंने अदालत से आग्रह किया कि मध्य प्रदेश में भाजपा सरकार ने पंचायत चुनावों में आरक्षण नियमित आवर्तन (रोटेशन) और परिसीमन पर संवैधानिक प्रावधान का उल्लंघन किया है। उनके वकील शशांक शेखर ने कहा कि तन्खा ने कानूनी नोटिस भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष वी डी शर्मा और राज्य के शहरी प्रशासन एवं विकास मंत्री भूपेंद्र सिंह को भी भेजा है। इस नोटिस पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा की जबलपुर इकाई के अध्यक्ष और वकील जी एस ठाकुर ने कहा कि वरिष्ठ वकील विवेक तन्खा पर निजी रूप से वह कोई टिप्पणी नहीं कर रहे हैं लेकिन नोटिस में कोई कानूनी आधार नहीं है।

महाकाल की नगरी उज्जैन में 21 महीने बाद गर्भगृह मे प्रवेश की अनुमति मिली

श्रद्धालु शिवलिंग पर जल भी चढ़ा पाएंगे

21 महीने बाद सोमवार को महाकाल मंदिर में फिर से गर्भ ग्रह में प्रवेश करने की अनुमति मिल गई है, गर्भ ग्रह में जल अर्पित एवं फूल चढ़ा पाएंगे एवं महिलाओं को साड़ी एवं पुरुषों को धोती पहनना अनिवार्य है,पहले दिन सुबह 7.30 बजे पूर्व संघचालक भैयाजी जोशी, महाकाल मंदिर के प्रशासक गणेश धाकड़, पुजारी समेत 15 श्रद्धालु सुबह 7.30 बजे आरती में मौजूद रहे। सभी ने भगवान महाकाल का गर्म पानी और दूध से अभिषेक कर उनकी पूजा की। इसके बाद आम श्रद्धालुओं को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति दी गई। भक्त अब मार्च 2020 के बाद बाबा महाकाल को स्पर्श कर सकेंगे। भक्तों को केवल जल चढ़ाने की अनुमति दी गई है, वे पूजा नहीं कर पाएंगे।

भस्मरती में शामिल श्रद्धालुओं को आरती के दौरान गर्भगृह में प्रवेश नहीं करने दिया जाएगा। धाकड़ ने बताया कि 1500 रुपये की प्राप्ति पर 2 श्रद्धालु, लघु रुद्र की प्राप्ति पर 3 और महारुद्र की प्राप्ति पर 5 श्रद्धालु गर्भगृह में जा सकेंगे। भक्त केवल भगवान महाकालेश्वर का जलाभिषेक कर सकते हैं। अगर भक्त के परिवार के तीन सदस्यों को गर्भगृह में जल चढ़ाना है तो उन्हें 1500 रुपये की रसीद के अलावा 1000 रुपये की अतिरिक्त रसीद भी लेनी होगी। गर्भगृह में पूजा की अनुमति नहीं होगी। गर्भगृह में किसी भी प्रकार की पूजा, अभिषेक, आरती और दूध, फूल-प्रसाद या किसी भी प्रकार की पूजा सामग्री ले जाने पर प्रतिबंध रहेगा। भगवान को केवल जल ही चढ़ाया जा सकता है।

सुबह 6.15 बजे से 7.15 बजे तक जलाभिषेक दोपहर 1 बजे से 3 बजे तक और रात 8 बजे से 9 बजे तक 1500 रुपये की रसीद प्राप्त कर दर्शन कर सकेंगे। प्रोटोकाल का यह होगा नियमः-गर्भगृह में प्रवेश के लिए 1500 रुपए की रसीद अध्यक्ष एवं कलेक्टर या प्रशासक श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंधन समिति से अनुमति लेकर प्राप्त की जा सकती है। पुजारियों और पुजारियों के लिए भी नियम होगे, श्री महाकालेश्वर मंदिर के 16 अधिकृत पुजारी और 22 पुजारी एक दिन में अपने मेहमानों के लिए 1500 रुपये की अधिकतम 3 रसीद और लगुरुद्र की 2 रसीदें प्राप्त कर सकेंगे। रसीद बनाने वाले तीर्थयात्रियों को अधिकृत पुजारी/पुजारी और उनके प्रतिनिधि से पहचान पत्र लेकर गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी।

कोविड गाइडलाइंस का पालन होता नहीं दिख रहा है। मंदिर समिति के प्रशासक गणेश धाकड़ ने कहा कि कोविड नियमों का कड़ाई से पालन किया जाएगा,प्रवेश के नियमों को वही रखा गया है, जो पहले से ही कोविड दिशा-निर्देशों के तहत निर्धारित हैं। धाकड़ के अनुसार गर्भगृह में प्रवेश करते समय श्रद्धालुओं के लिए कोरोना दिशानिर्देशों का पालन करना अनिवार्य होगा।

जानिए आईपीएल रिटेंशन के बारे में सब कुछ

केकेआर और सीएसके टीम के दिग्गजों ने वेतन में उछाल

यहां आईपीएल 2022 के लिए रिटेन किए गए खिलाड़ियों की सूची दी गई है। इस सूची में कई खिलाड़ी हैं जो अमीर बन गए हैं। कोलकाता के वेंकटेश अय्यर और सनराइजर्स हैदराबाद के उमरान मलिक की सैलरी में 39 गुना का इजाफा हुआ है. वहीं, चेन्नई के ऋतुराज गायकवाड़ को 2022 सीजन में 6 करोड़ मिलेंगे, जबकि 2021 सीजन में इस खिलाड़ी की सैलरी सिर्फ 20 लाख थी।

सबसे ज्यादा पैसा पंजाब के पास

आईपीएल 2022 के लिए मेगा नीलामी है । इस नीलामी में पंजाब किंग्स के पास सबसे ज्यादा पैसा होगा। यह फ्रेंचाइजी 72 करोड़ के साथ नीलामी में जाएगी। वहीं, राजस्थान के पास 62 करोड़ और हैदराबाद के पास 68 करोड़ बचे हैं। दिल्ली के पास सबसे कम पैसा है। वह 47.50 करोड़ के साथ नीलामी में उतरेंगी।आईपीएल 2022 से पहले मेगा नीलामी होनी है। इस बार दो नई टीमें भी शामिल होंगी। दो नई टीमें लखनऊ और अहमदाबाद 1 से 25 दिसंबर तक तीन-तीन खिलाड़ी जोड़ सकती हैं।

इन खिलाड़ियों की सैलरी धोनी से ज्यादा

राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन को राजस्थान रॉयल्स ने 14 करोड़ में रिटेन किया है। वहीं, दिल्ली ने ऋषभ पंत को 16 करोड़, सनराइजर्स हैदराबाद ने कप्तान केन विलियमसन को 14 करोड़, मुंबई इंडियंस के रोहित शर्मा ने 16 करोड़ और आरसीबी ने विराट कोहली को 15 करोड़ में रिटेन किया।

आईपीएल 2022 के लिए रिटेन किए 27 खिलाड़ियों की सूची

मुंबई इंडियंस

रोहित शर्मा	16 करोड़
जसप्रीत बुमराह	12 करोड़
सूर्यकुमार यादव	8 करोड़
कीरोन पोलार्ड	6 करोड़

दिल्ली कैपिटल

ऋषभ पंत	16 करोड़
अक्षर पटेल	9 करोड़
पृथ्वी शॉ	7.5 करोड़
एनरिक नोर्ट्या	6.5 करोड़

चेन्नई सुपर किंग्स

रवींद्र जडेजा	16 करोड़
महेंद्र सिंह धोनी	12 करोड़
मोईन अली	8 करोड़
रितुराज गायकवाड़	6 करोड़

कोलकाता नाइट राइडर्स

आंद्रे रसेल	12 करोड़
वरुण चक्रवर्ती	8 करोड़
वेंकटेश अय्यर	8 करोड़
सुनील नरेन	6 करोड़ रुपये

रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर

विराट कोहली	15 करोड़
ग्लेन मैक्सवेल	11 करोड़
मोहम्मद सिराज	7 करोड़

सनराइजर्स हैदराबाद

केन विलियमसन	14 करोड़
अब्दुल समद	4 करोड़
उमरान मलिक	4 करोड़

राजस्थान रॉयल्स

संजू सैमसन	14 करोड़
जोस बटलर	10 करोड़
यशस्वी जायसवाल	4 करोड़

पंजाब किंग्स

मयंक अग्रवाल	12 करोड़ (14 टीम के पर्स से कटेंगे करोड़)
अर्शदीप सिंह	4 करोड़

भारत समेत पूरी दुनिया में क्यों बढ़ रही है महँगाई की दर ?

वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति की दर के अचानक इतनी तेजी से बढ़ने के कारणों में कुछ विशेष कारण उत्तरदायी पाए गए हैं। मुद्रास्फीति की दर में यह अचानक आई तेजी किसी सामान्य आर्थिक चक्र के बीच नहीं पाई गई है बल्कि यह असामान्य परिस्थितियों के बीच पाई गई है। अभी हाल ही में अमेरिका एवं अन्य यूरोपीयन देशों में मुद्रास्फीति की दर के आंकड़े जारी किये गए हैं। अमेरिका में नवम्बर 2021 माह में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति की दर 6.8 प्रतिशत तक पहुंच गई है जो जून 1982 से लेकर आज तक सबसे अधिक मुद्रास्फीति की दर है। अक्टोबर 2021 माह में भी मुद्रास्फीति की दर 6.2 प्रतिशत थी एवं सितम्बर 2021 में यह 5.4 प्रतिशत थी। अमेरिका में पिछले लगातार 9 माह से मुद्रास्फीति की दर सह्यता स्तर अर्थात 2 प्रतिशत से अधिक बनी हुई है। लगभग यही स्थिति यूरोप के अन्य देशों की भी है। अमेरिका की PEW नामक अनुसंधान केंद्र ने विश्व के 46 देशों में मुद्रा स्फीति की दर पर एक सर्वेक्षण किया है एवं इसमें पाया है कि 39 देशों में वर्ष 2021 की तीसरी तिमाही में मुद्रा स्फीति की दर, कोरोना महामारी के पूर्व, वर्ष 2019 की तीसरी तिमाही में मुद्रास्फीति की दर की तुलना में बहुत अधिक है।

वैश्विक स्तर पर मुद्रास्फीति की दर के अचानक इतनी तेजी से बढ़ने के कारणों में कुछ विशेष कारण उत्तरदायी पाए गए हैं। मुद्रास्फीति की दर में यह अचानक आई तेजी किसी सामान्य आर्थिक चक्र के बीच नहीं पाई गई है बल्कि यह असामान्य परिस्थितियों के बीच पाई गई है। अर्थात, कोरोना महामारी के बाद वैश्विक स्तर पर एक तो सप्लाई चैन में विभिन्न प्रकार के विघ्न पैदा हो गए हैं। दूसरे, कोरोना महामारी के चलते श्रमिकों की उपलब्धि में कमी हुई है। अमेरिका आदि देशों में तो श्रमिक उपलब्ध ही नहीं हो पा रहे हैं, इससे विनिर्माण के क्षेत्र की इकाईयों को पूरी क्षमता के साथ चलाने में समस्याएं आ रही हैं। तीसरे, विभिन्न देशों के बीच उत्पादों के आयात निर्यात में बहुत समस्याएं आ रहीं हैं। पानी के रास्ते जहाजों के माध्यम से भेजी जा रही वस्तुओं को एक देश से दूसरे देश में पहुंचने में (एक बंदरगाह से उत्पादों के पानी के जहाजों पर चढ़ाने से लेकर दूसरे बंदरगाह पर पाने के जहाजों से सामान उतारने के समय को शामिल करते हुए) पहले जहां केवल 10/12 दिन लगते थे अब इसके लिए 20/25 दिन तक का समय लगने लगा है। कई बार तो पानी का जहाज बंदरगाह के बाहर 7 से 10 दिनों तक खड़ा रहता है क्योंकि श्रमिकों की अनुपलब्धता के कारण सामान उतारने की दृष्टि से उस जहाज का नम्बर ही नहीं आता। चौथे, कोरोना महामारी का प्रभाव कम होते ही विभिन्न उत्पादों की मांग अचानक तेजी से बढ़ी है जबकि इन उत्पादों को एक देश से दूसरे देश में पहुंचाने में ज्यादा समय लगने लगा है। अतः मांग एवं आपूर्ति में उत्पन्न हुई इस असमानता के कारण भी महंगाई की दर में वृद्धि हुई है।

मुद्रास्फीति का तेजी से बढ़ना, समाज के हर वर्ग, विशेष रूप से समाज के गरीब एवं निचले तबके तथा मध्यम वर्ग के लोगों को आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक विपरीत रूप में प्रभावित करता है। क्योंकि, इस वर्ग की आय, जोकि एक निश्चित सीमा में ही रहती है, का एक बहुत बड़ा भाग उनके खान-पान पर ही खर्च हो जाता है और यदि मुद्रास्फीति की बढ़ती दर तेज बनी रहे तो इस वर्ग के खान-पान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ने लगता है। अतः, मुद्रास्फीति की दर को काबू में रखना किसी भी देश की सरकार का प्रमुख कर्तव्य है। इसीलिए भारत में केंद्र सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक, मौद्रिक नीति के माध्यम से, इस संदर्भ में समय समय पर कई उपायों की घोषणा करते रहते हैं।

सामान्य बोलचाल की भाषा में, मुद्रास्फीति से आशय वस्तुओं की कीमतों में हो रही वृद्धि से है। इसे कई तरह से आंका जाता है जैसे- थोक मूल्य सूचकांक आधारित; उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित; खाद्य पदार्थ आधारित; ग्रामीण श्रमिकों की मजदूरी आधारित; ईंधन की कीमत आधारित; आदि। मुद्रास्फीति का आशय मुद्रा की क्रय शक्ति में कमी होने से भी है, जिससे वस्तुओं के दामों में वृद्धि महसूस की जाती है।

मुद्रास्फीति की तेज बढ़ती दर, दीर्घकाल में देश के आर्थिक विकास की दर को भी धीमा कर देती है। इसी कारण से कई देशों में मौद्रिक नीति का मुख्य ध्येय ही मुद्रास्फीति लक्ष्य पर आधारित कर दिया गया है। भारत में नवम्बर 2021 माह में खुदरा (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित) मुद्रास्फीति की दर 4.91 प्रतिशत रही है जो अक्टूबर 2021 की दर 4.48 प्रतिशत से अधिक है। नवम्बर 2021 में सब्जियों एवं फलों की कीमतों में हुई वृद्धि के कारण खुदरा मुद्रास्फीति की दर बढ़ी है। नवम्बर 2021 माह में ग्रामीण क्षेत्रों में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 4.29 प्रतिशत रही जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 5.54 प्रतिशत रही। भारतीय रिजर्व बैंक के एक अनुमान के अनुसार भारत में खुदरा मुद्रास्फीति की दर वित्तीय वर्ष 2021-22 की तीसरी तिमाही में 5.1 प्रतिशत एवं चौथी तिमाही में 5.7 प्रतिशत रहने की सम्भावना है क्योंकि इस सम्बंध में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो रहे घटनाचक्र का असर भारत पर भी पड़ने की सम्भावना है।

चित्रकूट में तय हुआ RSS का घर वापसी का प्लान, बड़ी-बड़ी हस्तियों ने लिया हिस्सा

यूपी चुनाव से पहले चित्रकूट में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने हिंदू धर्म छोड़ने वालों की घर वापसी का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि डर ज्यादा समय तक नहीं बांध सकता। अहंकार एकता को तोड़ता है। हम लोगों को जोड़ने का काम करेंगे। भागवत ने यहां चल रहे तीन दिवसीय हिंदू एकता महाकुंभ में शामिल लोगों को संकल्प भी दिया. वहीं, जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने कहा कि हमने हिंदुओं के हितों की शुरुआत की है। A से अयोध्या, K से काशी के बाद अब M की मथुरा की बारी है। कार्यक्रम में श्री श्री रविशंकर ने भी भाग लिया। उन्होंने कहा कि अगर कुछ लोग इकट्ठा होते हैं तो डर पैदा होता है. जबकि जहां संत और हिंदू इकट्ठे होते हैं, वहां अभय होता है। उन्होंने कहा कि देशभक्ति और ईश्वर की भक्ति एक ही है। जो देशभक्त नहीं है वह भगवान का भक्त नहीं हो सकता।

भागवत ने जनसंख्या नियंत्रण, लव जिहाद पर भी बात की, कार्यक्रम के दूसरे दिन मोहन भागवत ने हिंदू एकता महाकुंभ में आए लोगों को करीब 20 मिनट तक संबोधित किया। इसमें उन्होंने हिंदुओं के साथ अन्याय, मठ मंदिर की सुरक्षा, धर्मांतरण पर रोक, जनसंख्या नियंत्रण, राष्ट्रवाद और समान नागरिक संहिता, लव जिहाद, गौ रक्षा, सामाजिक समरसता जैसे मुद्दों पर बात की. इसके अलावा मोहन भागवत ने महाकुंभ में आए लोगों को संकल्प दिया. इसमें उन्होंने आरएसएस प्रमुख भागवत के साथ शपथ लेते हुए कहा, 'मैं हिंदू संस्कृति के धार्मिक योद्धा मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम के संकल्प स्थल पर सर्वशक्तिमान ईश्वर के साक्षी के रूप में शपथ लेता हूं कि मैं अपनी रक्षा और प्रचार करने का संकल्प लेता हूं। पवित्र हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति और हिंदू समाज। मैं जीवन भर सुरक्षा के लिए काम करूंगा।

मैं प्रतिज्ञा करता करता हूं कि मैं किसी भी हिंदू भाई को हिंदू धर्म से मुंह नहीं मोड़ने दूंगा। जो भाई धर्म छोड़कर चले गए हैं, वे भी घर वापसी के लिए काम करेंगे। मैं उन्हें परिवार का हिस्सा बनाऊंगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं हिंदू बहनों की पहचान, सम्मान और शील की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दूंगा। मैं जाति, वर्ग, भाषा, पंथ के भेद से ऊपर उठकर हिंदू समाज को सामंजस्यपूर्ण, मजबूत और अभेद्य बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत से काम करूंगा। हिंदू एकता महाकुंभ के अध्यक्ष जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने कार्यक्रम के दूसरे दिन 5 लाख की भीड़ का दावा किया था, लेकिन यह भीड़ घटकर 1.5 लाख रह गई. कार्यक्रम में बैठने वाला कोई नहीं था, कुर्सियां खाली पड़ी थीं. मोहन भागवत के अलावा श्री श्री रविशंकर, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा आने वाले थे, लेकिन मोहन भागवत ने ही हिस्सा लिया। मोहन भागवत के मंच पर बीजेपी के ज्यादातर चेहरे नजर आ रहे थे। मंच पर स्थानीय सांसद आरके सिंह पटेल भी मौजूद थे।

उसी नागरिकता का समर्थन रविशंकर ने किया था

श्री रविशंकर ने हिंदू महाकुंभ के 12 मुद्दों का समर्थन किया है। इसमें राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक श्री राम मंदिर, पूजा स्थलों की परंपरा को नष्ट करने वाला सरकारी नियंत्रण, धर्मांतरण की अंतर्राष्ट्रीय साजिश, देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून, समान नागरिकता अधिकार, युवा पीढ़ी में लव जिहाद से भटकाव, भारतीय दर्शन आधारित शिक्षा जरूरी है, धर्म की लत है त्याग अनिवार्य होना चाहिए, गौ रक्षा के लिए संयुक्त प्रयास जरूरी है, मातृ शक्ति को सशक्त बनाना, हिंदू धर्म के बारे में प्रचार को रोकना और पर्यावरण प्रदूषण को रोकना आवश्यक है।

मौत की मशीन को मिली कानूनी मंजूरी, बिना दर्द के एक मिनट में होगी मृत्यु

इच्छामृत्यु चाहने वाले को अब आसान मौत दी जा सकती है। दरअसल स्विट्जरलैंड की सरकार ने सुसाइड मशीन सरको के इस्तेमाल को मंजूरी दे दी है। वही कंपनी का दावा है कि इस मशीन में 1 मिनट के अंदर कोई भी व्यक्ति बिना दर्द के मर सकता है। दरअसल जानकारी के मुताबिक इस मशीन को एग्जिट इंटरनेशनल संगठन के निदेशक डॉ. फिलिप निट्स्के ने बनाया है, जबकि एग्जिट इंटरनेशनल का दावा है कि पिछले साल स्विट्जरलैंड में तेरह सौ लोगों ने आत्महत्या की थी, जिसके बाद इन्हें बनाना अनिवार्य हो गया था।

यह मशीन ऐसे लोगों के लिए बनाई गई है जो बीमारी से पीड़ित हैं और हिल नहीं सकते। इस मशीन को अंदर से भी ऑपरेट किया जा सकता है, जबकि बीमार लोग मशीन के अंदर पलकें नीचे करके बैठ सकते हैं। ताबूत के आकार में बनी इस मशीन में बायोडिग्रेडेबल कैप्सूल है। जिसका उपयोग ताबूत के रूप में किया जा सकता है।

ताबूत के आकार की मशीन एक 3डी-मुद्रित कैप्सूल है। जो व्यक्ति के कैप्सूल में प्रवेश करके लेट जाने पर अंदर से सक्रिय हो जाता है। संगठन ने कहा कि एक बार जब कोई व्यक्ति लेट जाता है तो उनसे कई सवाल पूछे जाएंगे और जब उन्होंने जवाब दिया होगा। वे अपने समय में तंत्र को सक्रिय करते हुए, कैप्सूल के अंदर बटन दबा सकते हैं। इसके अलावा इस मशीन के जरिए ऑक्सीजन लेबल को काफी कम किया जाता है। 1 मिनट के अंदर मरीज की मौत हो जाती है। इस मशीन का नाम सरको है। वहीं, मशीन बनाने वाले डॉक्टर निश्चके का कहना है कि अगर सब कुछ ठीक रहा तो अगले साल तक यह मशीन इस्तेमाल के लिए उपलब्ध हो जाएगी। स्विट्जरलैंड में कानून विशेष रूप से सहायता प्राप्त आत्महत्या को वैध नहीं बनाता है, लेकिन सहायता प्राप्त आत्महत्या को केवल तभी दंडनीय बनाता है जब अधिनियम में 'स्वार्थी उद्देश्य' साबित हो जाते हैं। सहायता प्राप्त आत्महत्या स्विट्जरलैंड में असामान्य नहीं है। एग्जिट इंटरनेशनल के अनुसार, देश के दो सबसे बड़े सहायता प्राप्त आत्मघाती संगठनों, एग्जिट (एक्जिट इंटरनेशनल से अलग) और डिग्निटास की सेवाओं का उपयोग करते हुए 2020 में स्विट्जरलैंड में सहायता प्राप्त आत्महत्या से लगभग 1,300 लोगों की मौत हुई।

ट्रेन में किस वक्त TTE किसी भी हाल में चेक नहीं कर सकता टिकट, जानें क्या है नियम

भारत में ज्यादातर लोग ट्रेन में सफर करते हैं। भारतीय रेल नेटवर्क दुनिया का चौथा सबसे बड़ा रेल नेटवर्क है। ट्रेन में सफर करते वक्त हर कोई चाहता है कि उसकी यात्रा आरामदायक हो। लेकिन ट्रेन में होने वाले शोर, टिकट चेकिंग, सीट को लेकर यात्रियों की आवाजाही से अक्सर लोग परेशान होते हैं। क्या आप जानते हैं कि आपकी बगैर मर्जी के कोई आपको डिस्टर्ब नहीं कर सकता। रेलवे के नियमों के मुताबिक रेलवे का टिकट एग्जामिनर (TTE) भी सोते वक्त आपकी टिकट चेक नहीं कर सकता। आइए आपको रेलवे के इन नियमों के बारे में बताते हैं।

रात 10 बजे के बाद TTE नहीं कर सकता टिकट चेक

आपकी यात्रा के दौरान ट्रैवल टिकट एग्जामिनर (TTE) आपसे टिकट लेने आता है। कई बार वो देर रात में आपको जागकर टिकट या आईडी दिखाने के लिए कहता है। लेकिन, आपको बता दें, रात 10 बजे के बाद TTE भी आपको डिस्टर्ब नहीं कर सकता है। टीटीई को सुबह 6 से रात 10 बजे के बीच ही टिकटों का वेरिफिकेशन करना जरूरी है। रात में सोने के बाद किसी भी पैसेंजर को डिस्टर्ब नहीं किया जा सकता। यह गाइडलाइन रेलवे बोर्ड की है।

10 के बाद यात्रा करने वालों पर नहीं लागू होगा नियम

हालांकि रेलवे बोर्ड का यह नियम रात 10 बजे के बाद यात्रा करने वाले यात्रियों पर नहीं लागू होगा। यानी अगर आप ट्रेन में रात के 10 बजे के बाद बैठे हैं, तो TTE आपकी टिकट और आईडी चेक कर सकता है।

मिडिल बर्थ पर 10 बजे के बाद ही सो सकते हैं

मिडिल बर्थ पर सोने वाले यात्री के बार इसे ट्रेन शुरू होते ही खोल लेते हैं। इससे लोअर बर्थ वाले यात्री को काफी परेशानी होती है। लेकिन रेलवे के नियम के मुताबिक, मिडिल बर्थ वाला यात्री अपनी बर्थ पर 10 बजे रात से सुबह 6 बजे तक ही सो सकता है। यानी रात 10 से पहले अगर कोई यात्री मिडिल बर्थ खोलने से रोकना चाहे तो आप उसे रोक सकते हैं। वहीं, सुबह 6 बजे के बाद बर्थ को नीचे करना होगा, ताकि दूसरे यात्री लोअर बर्थ पर बैठ सकें। कई बार लोअर बर्थ वाले देर रात तक जागते हैं और मिडिल बर्थ वालों को दिक्कत होती है ऐसे में आप 10 बजे अपनी सीट नियम के तहत उठा सकते हैं।

दो स्टॉप का नियम

अगर आप की ट्रेन छूट जाती है तो टीटीई अगले दो स्टॉप या अगले एक घंटे तक (दोनों में जो पहले हो) आपकी सीट किसी और यात्री को अलॉट नहीं कर सकता है। इसका मतलब यह हुआ कि अगले दो स्टॉप में से किसी से आप ट्रेन पकड़ सकते हैं। तीन स्टॉप गुजर जाने के बाद टीटीई के पास अधिकार होता है कि वह आरएसी लिस्ट में अगले व्यक्ति को सीट अलॉट कर दे।

इन अधिकारी-कर्मचारियों को मिलेगी अनिवार्य सेवानिवृत्ति

मध्य प्रदेश के रतलाम और सीहोर जिलों के अधिकारी-कर्मचारियों के लिए काम की खबर है। रतलाम कलेक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि इस श्रेणी में खराब प्रदर्शन, 20 वर्ष की सेवा और 50 वर्ष की आयु के मामले में अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी जाएगी। सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों की पेंशन के लिए संयुक्त बैंक खाते अनिवार्य हैं।

दरअसल, गुरुवार को रतलाम कलेक्टर कुमार पुरुषोत्तम ने नगर निगम के कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि नगर निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों के कार्य निष्पादन की परीक्षा ली जाएगी। नगर आयुक्त से

पूछने पर उन्होंने कहा कि तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की सूची तैयार की गई है, लेकिन कलेक्टर ने निर्देश दिया कि नगर निगम के प्रथम और द्वितीय श्रेणी के अधिकारियों को भी लाया जाए और 20 साल की सेवा के दायरे में सूचीबद्ध किया जाए। और 50 वर्ष की आयु। जिन अधिकारियों का प्रदर्शन खराब पाया जाता है, उन्हें 20 वर्ष की सेवा या 50 वर्ष की आयु वर्ग में लाकर अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी जाएगी। उसी सीहोर जिले में, सभी आहरण एवं संवितरण अधिकारी अपने कार्यालय में अगले सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी सेवकों के संयुक्त बैंक खाते (सेवा पुस्तिका में नामित के अनुसार) खोलें और पेंशन फॉर्म आईएफएमआईएस में तभी जमा और उत्पन्न किया जाना चाहिए।

संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विस एग्जाम की पास, 10वी-12वीं में भी जिला स्तरीय टॉपर

पहले प्रयास में ही आईएएस अफसर बनी अनन्या सिंह

संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विस एग्जाम को सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक माना जाता है और इसके लिए स्टूडेंट कई साल तक तैयारी करते है। हालांकि कुछ कैंडिडेट ऐसे भी होते हैं, जो अलग रणनीति और कड़ी मेहनत की बदौलत पहले प्रयास में ही सफलता हासिल कर लेते हैं। ऐसी ही कुछ कहानी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज की रहने वाली अनन्या सिंह की है, जिन्होंने सिर्फ एक साल की तैयारी से यूपीएससी एग्जाम पास कर लिया और पहले प्रयास में ही आईएएस अफसर बन गईं।

10वीं-12वीं में रहीं टॉपर

अनन्या सिंह शुरू से ही पढ़ाई में काफी अच्छी थीं और उन्होंने अपनी शुरुआती पढ़ाई प्रयागराज के सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल से की। 10वीं में उन्होंने 96 प्रतिशत अंक हासिल किया, जबकि 12वीं में उनके 98.25 प्रतिशत नंबर थे। अनन्या दसवीं और बारहवीं दोनों में सीआईएससीई बोर्ड से डिस्ट्रिक्ट टॉपर रहीं। 12वीं के बाद अनन्या ने दिल्ली के श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से इकोनॉमिक्स ऑनर्स से ग्रेजुएशन किया।

रोजाना की 7-8 घंटे पढ़ाई

अनन्या सिंह बचपन से ही आईएएस अफसर बनना चाहती थी और इसलिए ग्रेजुएशन के आखिरी साल में उन्होंने यूपीएससी एग्जाम की तैयारी शुरू कर दी। अनन्या शुरू में रोजाना 7-8 घंटे पढ़ाई करती थीं, हालांकि बेस मजबूत होने के बाद उन्होंने पढ़ाई के लिए 6 घंटे फिक्स कर लिए। एक साल तक अनन्या ने खूब मेहनत की।

ऐसे की एग्जाम की तैयारी

DNA की रिपोर्ट के अनुसार, अनन्या सिंह ने टाइम-टेबल बनाकर यूपीएससी परीक्षा की तैयारी की। उन्होंने शुरुआत में प्री और मेंस एग्जाम की तैयारी एक साथ की। अनन्या कहती हैं कि प्री और मेंस एग्जाम से पहले का समय काफी कठिन होता है और इस दौरान वास्तव में कड़ी मेहनत करनी चाहिए। अनन्या ने बताया कि तैयारी की शुरुआत के लिए सबसे पहले उन्होंने किताबों की लिस्ट तैयार की और सिलेबस के अनुसार किताब जमा किए। इसके साथ ही जरूरत के हिसाब से हैंड नोट्स भी बनाएं। नोट्स के दो फायदे हुए एक तो ये शॉर्ट और क्रिस्प थे, जिसकी वजह से यह तैयारी और रिवीजन में बहुत काम आया। इसके साथ ही नोट्स लिखने की वजह से आंसर दिमाग में रजिस्टर हो गए।

पहले प्रयास में सफलता

अनन्या सिंह ने यूपीएससी की सिविल सर्विस एग्जाम के लिए सिर्फ एक साल तैयारी की और पहले ही प्रयास में सफलता हासिल कर ली। उन्होंने साल 2019 में ऑल इंडिया में 51वीं रैंक हासिल की और आईएएस बनने का सपना पूरा किया। वर्तमान में अनन्या की पोस्टिंग एक आईएएस अफसर के रूप में पश्चिम बंगाल में है।

अनन्या सिंह की फैमिली

अनन्या सिंह के पिता पूर्व जिला न्यायाधीश हैं और उनकी मां अंजलि सिंह आईईआरटी में सीनियर लेक्चरर हैं। उनके बड़े भाई ऐश्वर्य प्रताप सिंह कानपुर में चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के रूप में तैनात हैं। इसके अलावा अनन्या की भाभी ज्योत्सना भी कानपुर में मजिस्ट्रेट हैं।

यूपीएससी एस्पिरेंट्स को सलाह

यूपीएससी एग्जाम की तैयारी कर रहे कैंडिडेट्स को अनन्या सिंह पिछले साल के पेपर देखने और रिवीजन पर फोकस करने की सलाह देती हैं। वे कहती हैं कि पिछले साल के जितने अधिक से अधिक पेपर देख सकें, जरूर देखें, क्योंकि कई बार कुछ विषयों में प्रश्न रिपीट हो जाते हैं। इसके साथ ही वह कहती हैं आपने जो भी पढ़ा है उसका जमकर रिवीजन करना भी बहुत जरूरी है। अनन्या का कहना है कि एग्जाम की तैयारी के दौरान पेपर पढ़ना कभी भी बंद ना करें और इंटरव्यू के पहले तक भी इसे पढ़ते रहें, क्योंकि इससे काफी मदद मिलती है।

वर्ष में एक बार होती है पूजा, नागा साधुओं ने की थी स्थापना, मठ में बनाते है समाधि

मठ हों या मंदिर वहां प्रतिदिन पूजा-पाठ का विधान है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हमारे देश में एक ऐसा भी मठ है जहां साल में केवल एक ही बार पूजा-आराधना होती है। बता दें कि इस मठ की स्थापना नागा साधुओं ने की थी। साथ ही मठ में देवी की प्रतिमा भी उन्होंने ही स्थापित की थी। यही नहीं आज भी नागा साधुओं का इस मंदिर से काफी गहरा नाता है। तो आइए जानते हैं कि यह मठ कौन सा है? कहां है और नागा साधुओं का यहां से कैसा नाता है?

छग के ब्राह्मणपारा में है यह मठ

हम जिस मठ का जिक्र कर रहे हैं वह छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के ब्राह्मणपारा में स्थित है। इसका नाम 'कंकाली मठ' है। इसे साल में एक बार केवल दशहरा के दिन ही खोला जाता है। बता दें कि यह परंपरा लगभग 400 सौ वर्षों से निभाई जा रही है। मान्यता है कि मां कंकाली की प्रतिमा नागा साधुओं द्वारा ही मठ में स्थापित की गई थी। बाद में इसे मंदिर में स्थानांतरित किया गया।

मंदिर में रखे नागा साधुओं के शस्त्र

बता दें कि देवी कंकाली की प्रतिमा तो मंदिर में स्थापित कर दी गई। लेकिन नागा साधुओं के प्राचीन शस्त्रों को मठ में ही रहने दिया गया। यह शस्त्र हजार साल से अधिक पुराने हैं। इसमें तलवार, फरसा, भाला, ढाल, चाकू, तीर-कमान आदि शामिल हैं। इन्हीं शस्त्रों को दशहरा के दिन भक्तों के दर्शनार्थ भी रखा जाता है। मान्यता है कि मां कंकाली दशहरा के दिन वापस मठ में आतीं हैं। यही वजह है कि उनकी आवभगत के लिए दशहरा के दिन मठ खुलता है। रात्रि को पूजा के बाद फिर एक साल के लिए मठ का द्वार बंद कर दिया जाता है।

अनोखी है परंपरा लेकिन निभाते हैं : बता दें कि 13वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी तक मठ में पूजा होती थी। यह पूजा नागा साधु ही करते थे। 17वीं शताब्दी में नए मंदिर का निर्माण होने के पश्चात कंकाली माता की प्रतिमा को मठ से स्थानांतरित कर मंदिर में प्रतिष्ठापित किया गया। आज भी उसी मठ में अस्त्र-शस्त्र रखे हुए हैं। साथ ही मठ में रहने वाले नागा साधुओं में जब किसी नागा साधु की मृत्यु हो जाती तो उसी मठ में समाधि बना दी जाती थी। उन समाधियों में भी भक्त मत्था टेकते हैं। बता दें कि कंकाली मंदिर को लेकर एक मान्यता यह भी है कि मंदिर के स्थान पर पहले श्मशान था जिसकी वजह से दाह संस्कार के बाद हड्डियां कंकाली तालाब में डाल दी जाती थी। और इसी तरह कंकाल से कंकाली तालाब का नामकरण हुआ। कंकाली तालाब में लोगों की गहरी आस्था है। मान्यता है कि इस तालाब में स्नान करने गंभीर त्वचा संबंधी रोग दूर हो जाते हैं।

कंकाली तालाब पर कई शोध

कंकाली तालाब पर कई शोध भी हुए हैं। जिसमें यह बात सामने आई है कि हड्डी के फास्फोरस अंश के घुलने की वजह से ही इस तालाब में नहाने से चर्म रोग दूर हो जाते हैं। यही वजह है कि त्वचा संबंधी रोगों से पीड़ित श्रद्धालु कंकाली तालाब में स्नान करते हैं। इसके बाद मंदिर में झाड़ चढ़ाते हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से उन्हें चर्म रोग से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही अन्य मन्नतें भी पूरी होती हैं।

वैज्ञानिकों ने खोजा ओमाइक्रोन का अलग लक्षण, गले में कुछ है तो संक्रमण पक्का

जो लोग अभी भी ओमाइक्रोन को हल्के में ले रहे हैं, उन्हें याद दिला दें कि कोरोना का यह नया रूप पूरी दुनिया में बहुत तेजी से फैल रहा है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, यह वेरिएंट लगभग 77 देशों में देखा जा चुका है और भारत में अब तक 87 नए मामले दर्ज किए गए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह किसी भी पिछले स्ट्रेन की तुलना में बहुत तेजी से फैल रहा है, इसलिए हमें पहले से ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। हालांकि, दुनिया भर के वैज्ञानिक ओमाइक्रोन के व्यवहार को समझने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं।आपको बता दें कि इस नए वेरिएंट को मौजूदा वैक्सीन से ज्यादा प्रतिरोधी माना जा रहा है। इसलिए यह वैज्ञानिकों के लिए चिंता का विषय है।

सर जॉन बेल, एक ब्रिटिश स्वास्थ्य विशेषज्ञ और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मेडिसिन के रेगियस चेयर और यूके सरकार के सलाहकार ने कहा कि 'शुरुआती आंकड़ों को देखते हुए, ओमाइक्रोन पिछले वायरस की तुलना में थोड़ा अलग व्यवहार कर रहा है। अब तक के परिणाम बताते हैं कि यह नया तनाव वायरस के पहले के रूपों की तुलना में कम गंभीर COVID-19 लक्षणों का कारण बनता है। ताजा खबर के मुताबिक वैज्ञानिकों ने ओमाइक्रोन के एक लक्षण की पहचान की है। यह लक्षण काफी हद तक कोरोना के पिछले स्ट्रेन से मिलता-जुलता है। वैज्ञानिकों ने लोगों को सलाह दी है कि अगर किसी व्यक्ति में यह लक्षण दिखे तो तुरंत उसकी जांच कराएं।

गले में खराश का मुख्य लक्षण

दक्षिण अफ्रीका स्थित डिस्कवरी हेल्थ के मुख्य कार्यकारी ने हाल ही में एक ब्रीफिंग में कहा कि डॉक्टरों ने सकारात्मक परीक्षण करने वाले लोगों में लक्षणों का थोड़ा अलग सेट देखा है। पॉजिटिव आने वालों के शुरुआती लक्षण गले में खराश के रूप में देखे गए। सीईओ डॉ रेयान नॉच ने

कहा कि इसके अलावा नाक बहना, सूखी खांसी और मांसपेशियों में ऐंठन और पीठ के निचले हिस्से में दर्द भी ओमाइक्रोन के कुछ सामान्य लक्षण हैं।

लक्षणों पर ध्यान दें

रेयान नॉच ने कहा कि इनमें से ज्यादातर लक्षण हल्के होते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि ओमाइक्रोम कम विषैला होता है। ब्रिटिश स्वास्थ्य विशेषज्ञ सर जॉन बेल ने बीबीसी रेडियो 4 के टुडे कार्यक्रम में कहा कि भरी हुई नाक, गले में खराश, माइलियागिया और ढीले मल ऐसे लक्षण हैं जिन पर समय रहते ध्यान दिया जाना चाहिए। डेल्टा संस्करण की तुलना में ओमाइक्रोन 2-3 गुना अधिक संक्रामक है सर जॉन बेल ले ने आगे कहा कि यह रोग अधिक संक्रामक है। डेल्टा संस्करण संक्रामक था, लेकिन यह नया संस्करण दो से तीन गुना अधिक संक्रामक है। सर जॉन के मुताबिक अभी तक बीमारी की गंभीरता का पता नहीं चल पाया है। यह अगले कुछ हफ्तों में पता चलेगा कि ब्रिटेन में यह कितना गंभीर है। बता दें कि भारत में गुरुवार को ओमाइक्रोन मामलों की संख्या 87 पहुंच गई है। जिसमें कर्नाटक ने इस नए संस्करण के पांच नए मामले दर्ज किए हैं, जबकि दिल्ली और तेलंगाना में चार मामले सामने आए हैं और गुजरात में ओमाइक्रोन का केवल एक मामला सामने आया है।

ओबीसी के लिए आरक्षित सीटों पर चुनाव प्रक्रिया रुकी जिला पंचायत अध्यक्ष पद का आरक्षण भी स्थगित

मध्य प्रदेश पंचायत चुनाव को लेकर सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद बड़ा फैसला लिया गया है। राज्य चुनाव आयोग ने ओबीसी के लिए आरक्षित जिला पंचायत सदस्य, जनपद, सरपंच और पंच के पदों के चुनाव की प्रक्रिया पर रोक लगा दी है। यह फैसला शुक्रवार की देर शाम लिया गया। इससे पहले पंचायत विभाग जिला पंचायत अध्यक्ष के आरक्षण पद के लिए शनिवार को होने वाली आरक्षण प्रक्रिया को भी स्थगित कर चुका है। राज्य निर्वाचन आयोग के सचिव बीएस जमोद ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुपालन में चुनावी वर्ष 2021-22 के लिए जारी कार्यक्रम के तहत पंच, सरपंच, जनपद पंचायत और जिला पंचायत सदस्य के पदों की चुनाव प्रक्रिया ओबीसी के लिए आरक्षित है। पंचायतों की। स्थगित कर दिया गया है। इस संबंध में सभी कलेक्टरों और जिला निर्वाचन अधिकारियों को कार्रवाई के आदेश जारी कर दिए गए हैं। इधर, पंचायती राज आयुक्त आलोक कुमार सिंह ने कहा कि 52 जिला पंचायत अध्यक्ष पद के लिए आरक्षण प्रक्रिया को रद्द कर दिया गया है। शनिवार 18 दिसंबर को आरक्षण की प्रक्रिया होने वाली थी। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश जारी किया है। इस संबंध में देर शाम आदेश जारी कर दिए गए हैं। आपको बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को राज्य चुनाव आयोग से कानून के दायरे में चुनाव कराने को कहा। ओबीसी के लिए निर्धारित सीटों को सामान्य सीटों में बदलने के लिए अधिसूचना जारी करें, जबकि मध्य प्रदेश में पंचायत चुनाव में 13% सीटें पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए आरक्षित हैं। अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का पालन करने के लिए आरक्षण की प्रक्रिया नए सिरे से करनी होगी। बता दें कि सीटों का आरक्षण संबंधित क्षेत्र की आबादी के हिसाब से होता है। इस संबंध में चुनाव आयोग ने शनिवार को बैठक बुलायी है।

14 हजार 525 उम्मीदवारों ने फॉर्म जमा किया है: राज्य में पंचायत चुनाव के पहले और दूसरे चरण के लिए , अब तक 14 हजार 525 उम्मीदवारों ने फॉर्म जमा किया है। शुक्रवार को आठ हजार 81 नामांकन दाखिल किए गए। जिला पंचायत सदस्य के लिए 186, जनपद पंचायत सदस्य के लिए 695, सरपंच पद के लिए 4 हजार 781 और पंच पद के लिए 2 हजार 419 उम्मीदवारों ने फॉर्म जमा किए। \

चाइल्ड पोर्नोग्राफी पर 14 राज्यों के 77 शहरों में सीबीआई का बड़ा खुलासा

कोविड काल के बाद से चाइल्ड पोर्नोग्राफी का कंटेंट बढ़ा है। बच्चों के साथ यौन शोषण के मामले बढ़ते जा रहे हैं। पोर्नोग्राफी रोकने की दिशा में सीबीआई की कार्रवाई एक बड़ा प्रयास है। चाइल्ड पोर्नोग्राफी को लेकर देश के 14 राज्यों के 77 शहरों में सीबीआई की छापेमारी के बाद मंगलवार को 39 नामजद आरोपियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। 7 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। 13 से अधिक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। सीबीआई को छापेमारी में बड़ी संख्या में पोर्नोग्राफी से जुड़े गैजेट, पेन ड्राइव और लैपटॉप मिले हैं। जब्त किए गए स्मार्टफोन में से एक में 'ओनली चाइल्ड सेक्स वीडियो' नाम का एक व्हाट्सएप ग्रुप भी मिला है। मंगलवार रात तक 10 लोगों को हिरासत में लिया गया, बुधवार सुबह तक यह संख्या 20 पर पहुंच गई। शुरुआती पूछताछ और जांच में पता चला है कि भारत का यह चाइल्ड पोर्नोग्राफी नेटवर्क 100 देशों में फैल चुका है। इस नेटवर्क में शामिल कुछ अन्य देशों के लोगों के नाम भी सामने आए हैं। ओडिशा के ढेंकनाल जिले के एक गांव में छापेमारी करने गई सीबीआई टीम पर स्थानीय लोगों ने हमला कर दिया। सीबीआई टीम पर यह हमला तब किया गया जब टीम ने ऑनलाइन बाल यौन शोषण सामग्री से जुड़े एक मामले में एक शख्स के घर की तलाशी लेने की कोशिश की। सीबीआई टीम पर हमले की सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने किसी तरह उन्हें भीड़ से बचाया।

सबसे अधिक मामले तमिलनाडु, यूपी में

सबसे ज्यादा मामले तमिलनाडु और यूपी में दर्ज किए गए, 14 नवंबर को इस मामले में 83 आरोपियों के खिलाफ 23 नामजद मामले दर्ज किए गए। सीबीआई ने मंगलवार को 39 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया, जिनमें तमिलनाडु-यूपी के 6, बिहार के 5, दिल्ली के 4, राजस्थान, महाराष्ट्र-हरियाणा-ओडिशा के 3, पंजाब, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ के 2, एमपी के 1 और हिमाचल प्रदेश में 1 आरोपी शामिल हैं। सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट और साइबर लॉ एक्सपर्ट पवन दुग्गल ने कहा कि जब 2000 में इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट बनाया गया था, उस वक्त चाइल्ड पोर्नोग्राफी को एक्ट में शामिल नहीं किया गया था। इसे 2008 में संशोधन द्वारा जोड़ा गया था। इसके निर्माण, प्रकाशन और प्रसारण के संबंध में कानून बनाए गए, जिसमें 5 साल की कैद और 10 लाख रुपये के जुर्माने का प्रावधान है, जिसकी धाराएं गैर-जमानती हैं। सच तो यह है कि चाइल्ड पोर्नोग्राफी देश में एक बहुत ही मांग वाला बाजार बन गया है। मौजूदा कानून से इसे रोकना नामुमकिन है। इसमें सख्ती से बदलाव लाना होगा। देश को अमेरिका और कुछ अन्य देशों में लागू किए गए बच्चों के ऑनलाइन गोपनीयता संरक्षण अधिनियम जैसे कानूनों की आवश्यकता है। जिसमें बच्चों के अधिकार, संरक्षण, कानूनी और कल्याण से संबंधित लाभ सख्ती से शामिल हैं।

सभी छात्रों के लिए एक समान कोर्स की मांग, सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर

याचिका में यह भी कहा गया है कि आरटीई अधिनियम की धाराएं एक (चार) और एक (पांच) संविधान की व्याख्या करने में सबसे बड़ी बाधा हैं और मातृ में समान पाठ्यक्रम का नहीं होना अज्ञानता को बढ़ावा देता है। देश में शिक्षा का अधिकार सभी को मिला हुआ है। हालांकि समय समय पर सभी छात्रों के लिए एक समान कोर्स की मांग उठती रहती है। एक बार फिर से यह मांग उठाई गई है। भाजपा नेता और वकील अश्विनी उपाध्याय ने इसको लेकर एक जनहित याचिका दायर की है। सुप्रीम कोर्ट में 'शिक्षा के अधिकार अधिनियम-2009' (आरटीई) की कुछ ''मनमानी एवं तर्कहीन'' धाराओं के खिलाफ और देशभर में सभी छात्रों के लिए समान पाठ्यक्रम अपनाए जाने का अनुरोध करने वाली यह जनहित याचिका दायर हुई है। याचिका में यह भी कहा गया है कि आरटीई अधिनियम की धाराएं एक (चार) और एक (पांच) संविधान की व्याख्या करने में सबसे बड़ी बाधा हैं और मातृ में समान पाठ्यक्रम का नहीं होना अज्ञानता को बढ़ावा देता है।

जनहित याचिका में कहा गया है कि समान शिक्षा प्रणाली लागू करना संघ का कर्तव्य है, लेकिन वह इस अनिवार्य दायित्व को पूरा करने में विफल रहा है और उसने 2005 के पहले से मौजूद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे (एनसीएफ) को अपना लिया है। याचिका में कहा गया है, ''एक बच्चे का अधिकार केवल निःशुल्क शिक्षा तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि बच्चे की सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभावकिए बिना समान गुणवत्ता वाली शिक्षा भी उसका अधिकार होनी चाहिए। इसलिए, न्यायालय धाराओं एक (चार) और एक(पांच) को मनमाना, तर्कहीन और अनुच्छेद 14, 15, 16 और 21 का उल्लंघन घोषित कर सकता है और केंद्र को पूरे देश में पहली से आठवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए समान पाठ्यक्रम लागू करने का निर्देश दे सकता है।

याचिका में यह भी कहा गया है कि केंद्र ने मदरसों, वैदिक पाठशालाओं और धार्मिक शिक्षा प्रदान करने वाले शैक्षणिक संस्थानों को शैक्षणिक उत्कृष्टता से वंचित करने के लिए धारा एक (चार) और एक (पांच) को शामिल किया।'' इसमें कहा गया है, ''याचिकाकर्ता का कहना है कि धाराएं एक (चार) और एक (पांच) न केवल अनुच्छेद 14, 15, 16, 21, 21ए का उल्लंघन हैं, बल्कि ये अनुच्छेद 38, 39 एवं 46 और प्रस्तावना के भी विपरीत हैं।'' याचिका में कहा गया है कि मौजूदा प्रणाली सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान नहीं करती, क्योंकि समाज के प्रत्येक स्तर के लिए भिन्न पाठ्यक्रम है।

युवा देश एवं प्रदेश के निर्माण में बढ़चढ़ कर भाग लें एवं कार्य करें- आनंदी बेन पटेल

उत्तरप्रदेश की राज्यपाल ने बुधवार को छात्र-छात्राओं से आह्वान किया कि वे अपने कार्यों से परिजनो को प्रसन्न और राष्ट्र को सम्मानित करें तथा अपने अथक प्रयासो से भारत को पुनः विश्व गुरूत्व के स्थान पर प्रतिष्ठापित करें।

यहां चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के 33वें दीक्षान्त समारोह में कुलाधिपतिपटेल ने विद्यार्थियों से कहा कि वे प्रण ले कि वे जहां कहीं भी अपनी सेवा देंगे वहां पूरी ईमानदारी, निष्ठा एवं मनोयोग से कार्य करेंगे।

उन्होने कहा कि आपके सत कार्य आपके व्यक्तित्व को प्रतिबिम्बित करते है। उन्होने युवाओं से देश एवं प्रदेश के निर्माण में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया।

दीक्षांत समारोह में कुल 127961 छात्र-छात्राओ को उपाधियां वितरित की गयी जिसमें 42492 छात्र एवं 85496 छात्राएं है। समारोह के प्रारंभ में वंदे मातरम एवं समापन पर राष्ट्रगान हुआ। पटेल ने कहा कि नारी शक्ति आगे बढ रही है। उन्होने कहा कि आज जितने भी अवार्ड दिये गये है उसमें छात्राएं ज्यादा है। उन्होने कहा कि छात्र-छात्राओ के बीच स्वच्छ स्पर्धा होनी चाहिए। राज्यपाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यो का विशेष रुप से उल्लेख करते हुए कहा कि सरयू परियोजना का निर्माण कार्य पूर्ण कराया जिससे 30 लाख किसानों को पानी मिलेगा। पटेल ने मेरठ का जिक्र करते हुए कहा कि ज्ञान और संघर्ष की भूमि के रूप में जानी जाने वाली यह नगरी अब क्रीडा जगत से संबंधित उत्पादों की निर्माता एक प्रमुख नगरी के रूप में भी विकसित हो गयी है। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्रीदिनेश शर्मा ने कहा कि डिग्रियां पाना शिक्षा का अंत नहीं, विद्यार्थी हमेशा अनवरत पढने की भूमिका में रहता है।

कपिल शर्मा के शो में सुरक्षा गार्ड ने स्मृति ईरानी को अंदर जाने से रोका, नाराज मंत्री ने रद्द की शूटिंग

द कपिल शर्मा शो में अपनी किताब 'लाल सलाम' के प्रमोशन के लिए पहुंची केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को सेट के गार्ड ने नहीं पहचाना, गार्ड ने स्मृति को अंदर जाने से रोका, वहीं जोमैटो का फूड डिलीवरी ब्वॉय पहुंच गया। इस बात से नाराज स्मृति ईरानी बिना शूटिंग किए लौट गईं। दरअसल केंद्रीय मंत्री अपने ड्राइवर और दो लोगों की टीम के साथ शो की शूटिंग के लिए शाम को कपिल शर्मा के सेट पर पहुंचे थे। प्रवेश द्वार पर सुरक्षा गार्ड अन्ना उसे पहचान नहीं सका और उसे अंदर नहीं जाने दिया।

स्मृति उसे बताती है कि उसे सेट पर एपिसोड की शूटिंग के लिए आमंत्रित किया गया है, वह शो की विशेष अतिथि है। इस पर गार्ड ने कहा, 'हमें कोई आदेश नहीं मिला है, सॉरी मैडम, आप अंदर नहीं जा सकते। स्मृति काफी देर तक गार्ड को समझाने की कोशिश करती रही, लेकिन गार्ड नहीं माना। तभी जोमैटो का डिलीवरी बॉय आया, वह कलाकारों के लिए खाने के पैकेट देने के लिए अंदर आया था, गार्ड ने उसे बिना कुछ पूछे जाने दिया। इस पर केंद्रीय मंत्री काफी नाराज हुए। जानकारी के मुताबिक उन्होंने प्रोडक्शन टीम और कपिल शर्मा को भी फोन किया, लेकिन बात नहीं हो पाई। आखिरकार नाराज स्मृति ईरानी बिना शूटिंग के लौट गईं। जब सुरक्षा गार्ड को पता चला कि उसने अंदर जाने से रोकने वालों की नहीं सुनी तो वह केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी थीं, तो वह घबराकर सेट से भाग गए। उसने अपना फोन भी स्विच ऑफ कर लिया है। इधर, प्रोडक्शन टीम स्मृति ईरानी को बार-बार कोशिश करने के बावजूद शूटिंग पर लौटने के लिए मना नहीं पाई।

सनी देओल के बेटे की फिल्म का प्रमोशन मंगलवार को हुआ था, भले ही स्मृति के एपिसोड की शूटिंग नहीं हो सकी, लेकिन मंगलवार को सनी देओल कपिल शर्मा के सेट पर अपने बेटे करण देओल की आने वाली फिल्म 'वेले' के प्रमोशन के लिए शूटिंग करने पहुंचे। उनका एपिसोड शूट किया गया था। स्मृति ईरानी की इस किताब के बारे में जानने के लिए अब पाठकों और दर्शकों को थोड़ा और इंतजार करना होगा। थ्रिलर किताब है 'लाल सलाम', इसे लिखने में 10 साल लगे, जानकारी के मुताबिक स्मृति ईरानी ने इस थ्रिलर किताब 'लाल सलाम' को सच्ची घटना पर लिखा है और इस किताब को पूरा करने में उन्हें करीब 10 साल लगे। वेस्टलैंड पब्लिशिंग कंपनी की यह किताब 29 नवंबर को बाजार में आएगी।

ऐश्वर्या कॉलेज के एल्युमनी मीट 2021 कार्यक्रम मे सम्मानित हुई सीरियल कलाकार एवं पण्डित लक्ष्मीनारायण शिक्षा प्रसार समिति के सहसचिव शुभंगी यार्दे को किया सम्मानित

मध्यप्रदेश में पांच हजार से अधिक लड़कियों की हुई खरीद फरोख्त

10 शादियां, 100 से अधिक प्रेमिकाओं वाला 'बांग्लादेशी', इंदौर में गिरफ्तार

इंदौर । इंदौर पुलिस ने एक बांग्लादेशी नागरिक को गिरफ्तार किया है। वह बाणगंगा क्षेत्र में फरारी काट रहा था। उस पर पांच हजार से अधिक लड़कियों की खरीद-फरोख्त करने और उनसे देह व्यापार करवाने का आरोप है।

मानव तस्करी और देह व्यापार के मामले में इंदौर पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। मुंबई के नालासोपारा इलाके में रहने वाला विजय कुमार दत्त 25 साल पहले बांग्लादेश आया था। उसने इंदौर पुलिस के सामने कबूल किया है कि वह अब तक 5 हजार से अधिक लड़कियों की खरीद-फरोख्त कर चुका है। इन लड़कियों को बाद में देह व्यापार में लगाया गया। विजय दत्त इंदौर के बाणगंगा क्षेत्र में फरारी काट रहा था।

इंदौर पुलिस की विशेष जांच टीम ने बाणगंगा क्षेत्र की कालिंदी गोल्ड सिटी में उज्जवल ठाकुर के घर से विजय दत्त को उसके साथी बबलू के साथ पकड़ा है। विजय इंदौर को उज्जवल, बबलू और सैजल की मदद से देह व्यापार का हब बनाया चाहता था। इंदौर से फ्लाइट, बस और ट्रेन आसानी से मिलने के कारण लड़कियों की सप्लाई आसान हो जाती है। वह इंदौर से सूरत, राजस्थान और मुंबई समेत अन्य जगहों पर लड़कियों को सप्लाई करने के लिए एक चेन बनाने की फिराक में था।

इंदौर के पुलिस महानिरीक्षक हरिनारायण चारी मिश्र ने कहा कि विजय कुमार दत्त ने कबूल किया है कि वह 25 साल पहले अवैध तरीके से भारत आकर मुंबई में बस गया था। फर्जी वोटर आईडी और आधार कार्ड बनवाया और फिर पासपोर्ट। वह पत्नी से मिलने के बहाने बांग्लादेश जाता और इसकी आड़ में लड़कियों की खरीद-फरोख्त करता था।

10 शादियां, 100 से अधिक प्रेमिकाएं: पुलिस को विजय दत्त ने बताया कि वह बांग्लादेश की शबाना

व बख्तियार के माध्यम से गरीब घरों की लड़कियों को नौकरी के बहाने भारत लाता था। बाद में उन्हें देह व्यापार में धकेल देता था। बांग्लादेशी लड़कियों को वह मुंबई में नाला सोपारा और अन्य जगहों पर छिपाता था। विजय 10 युवतियों से शादी कर चुका है। उसकी 100 से ज्यादा प्रेमिकाएं है, जिनसे वह देह व्यापार करवाता था। दलालों की चेन बना ली थी पुलिस के मुताबिक विजय दत्त ने इंदौर, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, सूरत, अहमदाबाद, जयपुर, बेंगलुरू सहित कई शहरों में दलालों की चेन बनाई थी। आईजी के मुताबिक पुलिस को विजय के पास से सैकड़ों लड़कियों की जानकारी मिली है। विजय ने इन्हें दलालों के माध्यम से विभिन्न शहरों में भेजा है। कई ऐसे वीडियो भी मिले हैं, जिसमें वह शराब की बोतल हाथ में लेकर लड़कियों के साथ नाच रहा है। पुलिस ने 4 युवतियों को हिरासत में लिया है जिसमें दो बांग्लादेशी है। एनआईए ने विजय दत्त के बारे में जानकारी मांगी थी। इससे पहले विजय नगर थाना पुलिस ने कई जगहों पर छापे मारे, पर कुछ हाथ नहीं लगा। मुंबई में जब दबिश पड़ी तो विजय दत्त इंदौर आ गया था। एसआईटी ने मोबाइल लोकेशन के आधार पर कालिंदी गोल्ड से उज्जवल के घर से विजय दत्त को गिरफ्तार किया।

नालों से करवाते हैं तस्करी

विजयनगर थाना पुलिस के मुताबिक पिछले साल अक्टूबर में एक बांग्लादेशी युवती ने कुछ लोगों की शिकायत की थी। उसने ही पुलिस को बताया था कि शबाना और बख्तियार ने जौशुर (बांग्लादेश) से खेतों-नालों को पार कर उसे भारतीय सीमा में धकेला। बाद में वह विजय के पास ले आए थे। जब भी वह बांग्लादेश लौटने की बात करता उसे गोली मारने की धमकी देते थे।

मध्य प्रदेश शिक्षा विभाग ने जारी नई गाइडलाइन

भोपाल । भोपाल से पिछले कई दिनों से चल रही बयानबाजी और अटकलों के बीच मध्य प्रदेश सरकार के स्कूल शिक्षा विभाग ने कल कक्षा एक से लेकर 12वीं तक की कक्षाएं संचालित करने के लिए नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं । क्रमांक एफ 44-4/2020/20-2 : विभागीय आदेश दिनांक 14.09.2021 द्वारा 11वीं कक्षा के 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को प्राथमिक स्तर की कक्षा 1 से 5 तक 50 प्रतिशत क्षमता के साथ कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए प्रारंभ करने हेतु निर्देशित किया गया है। क्षमता के साथ छात्रावास एवं कक्षा 8वीं, 10वीं व 12वीं के विद्यार्थियों के लिए शत-प्रतिशत क्षमता वाले ओपन स्कूल/ हॉस्टल चलाने की स्वीकृति प्रदान की गई।

जो निम्नलिखित है: राज्य सरकार द्वारा वर्तमान में कोविड-19 के कम प्रभाव को देखते हुए उक्त आदेश के क्रम में निम्नलिखित दिशा-निर्देश जारी करती है:

1 सभी विद्यालयों की कक्षा 1 से 12 तक की सभी कक्षाएं शत-प्रतिशत क्षमता के साथ प्रारंभ की जाएं।

2 कक्षा 1 से 12 तक सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत विद्यार्थियों के लिए आवासीय विद्यालय चलाए जाएं।

3 कक्षा 1 से 12 तक सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत छात्रों के लिए सभी छात्रावास चलाए जाएं।

4 विद्यार्थी माता-पिता की सहमति से ही विद्यालय/ छात्रावास में उपस्थित हो सकेंगे।

5 ऑनलाइन कक्षाओं/शिक्षा के संबंध में डिजिटल माध्यम से निर्णय स्कूल प्रबंधन समिति द्वारा आवश्यकता के अनुसार लिया जाएगा। दूरदर्शन और व्हाट्सएप ग्रुप पर शैक्षिक सामग्री का प्रसारण पहले की तरह जारी रहेगा।

दोहरी खुराक टीकाकरण किया अनिवार्य...

अ). यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी विद्यालयों/ छात्रावासों के शिक्षकों/कर्मचारियों का दोहरी खुराक का टीकाकरण अनिवार्य रूप से किया जाए। टीकाकरण के संबंध में विभागीय आदेश दिनांक 08.11.2021 के समसंख्यक द्वारा जारी दिशा-निर्देश यथावत रहेंगे।

ब). किसी भी शिक्षक या छात्र के संक्रमित होने की स्थिति में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की सहमति से जारी विभागीय सम संख्या आदेश दिनांक (09.11.2021) द्वारा जारी दिशा-निर्देश यथावत रहेंगे।

स). भारत सरकार और राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी एसओपी का पालन करना और कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करना अनिवार्य है।

एक पुस्तक जो बर्लिन से लेकर पूरी दुनिया में पढ़ी जा रही है

आवरण पृष्ठ पर गर्भवती महिला की आकृति और 'इमली का चटकारा' शीर्षक देखकर एक पाठक के रुप में खट्टी-मीठी कहानियों की कल्पना लिए जब मैंने किताब के पन्ने पलटने शुरु किए तो कल्पना ने अपने पंख समेटे और उतर गई वास्तविकता की ज़मीन पर जहाँ इमली के चटकारों के साथ उसके मुँह में सच्चाई की कड़वाहट का स्वाद भी घुलने लगा। पहली ही कहानी ने यह स्पष्ट कर दिया कि जर्मनी की लेखिका डॉ. योजना साह जैन जी ने पाठकों को चौंकाने की पूरी तैयारी कर रखी है। जीवन की खटास और मिठास भरे स्वाद से इतर 'इमली का चटकारा' की कहानियाँ संवेदनशील हैं जो सामयिक और गंभीर प्रश्न उठाती हैं। इन कहानियों में व्यंग्य का पुट तो है लेकिन चटकारे वाली बात कहीं नहीं है। इस कथा संग्रह की लगभग सभी कहानियाँ स्त्री-केंद्रित हैं और जिन कहानियों में स्त्री प्रत्यक्ष रुप से मुख्य पात्र नहीं है जैसे पहली कहानी 'आंदोलन' उनमें नेपथ्य में रहते हुए भी स्त्री, कहानी को एक नया मोड़ देने वाले सशक्त कारक के रुप में उपस्थित रहती है। आवरण पृष्ठ पर अंकित गर्भवती स्त्री की छवि 'इमली का चटकारा', 'फूल की कहानी', 'येलेना माँ बनना चाहती है' जैसे मातृत्व भाव पर आधारित कहानियों के साथ-साथ लेखिका की लेखनी के गर्भ में पल रही संभावनाओं, संवेदनाओं का प्रतीक प्रतीत होती है। किताब की शुरुआत में ही लेखिका ने स्पष्ट कर दिया कि,

"होंठों की हंसी,
आँखों की नमी लिखती हूँ
मैं ज़िंदगी हूँ,
ज़िंदगी लिखती हूँ।"

कहते हैं कि लेखन, लेखकीय व्यक्तित्व का सृजनात्मक विस्तार है इस अर्थ में कला, विज्ञान और व्यावसायिक कौशल-संपन्न डॉ. योजना साह जैन के व्यक्तित्व, उनकी सोच और कल्पना के विविध रंगों से बुनी हुई इन कहानियों को पढ़ते समय हम धीरे धीरे उनके मस्तिष्क में प्रवेश की अनुमति प्राप्त कर लेते हैं। उनकी कहानियाँ कल्पना के रंगों से वास्तविकता की धरातल पर उकेरी जाने वाली किसी कलाकृति की तरह है जिसमें लेखक के व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। उदाहरणस्वरुप 'करियर वुमन' कहानी में एक कामकाजी माँ की विवशता का वर्णन करते समय कहीं न कहीं लेखिका के निजी अनुभव भी समाहित हो जाते हैं। माँ का साथ पाने को तरसती मासूम बच्ची को रुआँसा छोड़कर काम पर जाते समय उनकी मनोदशा कहानी की मुख्य पात्र तृप्ति की तरह होती थी। डॉ. योजना साह जैन अपने व्यवसाय और लेखन को लेकर महत्वाकाँक्षी तो हैं किंतु अपने परिवार के प्रति पूर्णरुप से प्रतिबद्ध भी हैं। लेखिका ने माँ श्रीमती मीना साह, पापा श्री बी. एल. साह, जीवनसाथी श्री प्रफुल्ल जैन और अपनी बगिया में खिले दो प्यारे नन्हें फूल समृद्धि और अद्वैता को आभार प्रकट करते हुए अपनी पुस्तक को अपनी नानी स्वर्गीया गोदांबरी देवी जी को समर्पित किया है।

डॉ. योजना साह जैन ने 2019 में ज्ञानपीठ प्रकाशन से प्रकाशित अपने पहले काव्य-संग्रह में पाठकों को क़ाग़ज पर फुदकती अल्हड़ गिलहरियों की काव्यात्मक अटखेलियों का आनंद प्रदान किया और अब साल 2021में प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अपने पहले कथा-संग्रह में इमली के चटकारे के संग कहानियों का एक नया ज़ायका लेकर आई हैं। बारह कहानियों के इस संग्रह की पहली कहानी का अंत जहाँ पाठकों के मन को उद्वेलित करता है तो अंतिम कहानी का सुखद अंत चेहरे पर मीठी मुस्कान बिखेर जाता है। इन बारह कहानियों को पढ़ते समय आप कथाकार के लेखन की यात्रा के सहभागी बनकर उत्तरोत्तर समृद्ध होते उनके सृजनकर्म के साक्षी बनते जाते हैं। शीर्षक कथा 'इमली का चटकारा' की बारी चार कहानियों के बाद आती है। तब तक आप उनकी वैविध्यपूर्ण लेखनी से भलीभाँति परिचय पा लेते हैं। इस कहानी में मातृसुख से वंचित एक स्त्री की पीड़ा और इमली के प्रति उसकी आसक्ति से विरक्ति की भावनात्मक यात्रा को बहुत संवेदनशील ढंग से उकेरा गया है। इस कथा-संग्रह की हर कहानी में एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश समाहित है। उदाहरणस्वरुप, 'तीसरी बेटी' कहानी में पुत्र-सुख से वंचित बंसल परिवार के मुखिया दादाजी से उनका नौकर रामचरण कहता है कि, " हाँ हम बेटी बेचते हैं। कम से कम आपकी तरह बेटे तो नहीं बेचते। आप तो पैसा भी लेते हैं और लड़की भी"। अपने पहले कथा-संग्रह में डॉ.योजना साह जैन ने जिस तरह आम मुद्दे को एक अलग नज़रिए से देखने का रचनात्मक प्रयास किया है वह सराहनीय है। कल्पना और यथार्थ के इस सुंदर मेल से उपजे पात्रों के सजीव चित्रण को पढ़कर ऐसा लगता है मानो कथाकार का वास्तविक जीवन में इनसे परिचय रहा हो अथवा अनुभवजन्य नहीं होते हुए भी परिस्थिति को तटस्थ रहकर सूक्ष्मता से पर्यवेक्षित करने के फलस्वरुप ऐसे सजीव पात्रों को बारीक़ी से गढ़ा गया हो। अंत में लिखा हुआ एक वाक्य मानो पूरी कहानी का परिदृश्य बदलकर रख देता है। ऐसा लगता है मानो आप कहानी को उस मोड़ पर छोड़ आए हैं जहाँ से आगे जानने की जिज्ञासा बनी रह जाती है जैसे पहली कहानी 'आंदोलन' की आख़िरी पंक्ति जो देर तक ज़ेहन में घूमती रहती है। "पिछले कुछ महीनों में जो अधूरा रह गया था वह था उसका बदन..."

दूसरी कहानी 'लेडीज़ बाथरुम' महानगर के भीतर बसे एक ऐसे इलाक़े से हमारा परिचय करवाता है जो आधुनिक दौड़ में अब भी रेंगता ही नज़र आता है। कहानी की मुख्य किरदार है'कविता'। कहानी में कविता का कितना सार्थक संदर्भ। बड़े शहरों की तंग गलियों का इतना जीवंत सजीव चित्रण मानो हम भी कविता के साथ अपनी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति हेतु उन बदबूदार गलियों में एक अदद साफ़ सुथरे लेडीज़ बाथरुम की तलाश कर रहे हों। कहानी सामाजिक विषमता की गलियों से गुजरती हुई अपनी एक सरल साधारण मूलभूत माँग पर आकर ख़त्म होती है विकास का मतलब साफ़-सुथरा 'लेडीज़ बाथरुम'।

"किसने इसे सुलभ नाम दिया? इससे दुर्लभ इस पूरे बाज़ार में और कुछ भी नहीं"। इन दोनों सशक्त कहानियों के बाद बारी आती है तीसरी कहानी की जिसका शीर्षक है 'वह पुरानी चिट्ठी'। झल्ली सी सलोनी, चिड़चिड़ी सी सारिका और समय का सताया। इस पुरानी चिट्ठी में चौंकाने वाली कोई विशेष बात तो नहीं लेकिन पाठकों के दिमाग़ को थोड़ी देर के लिए राहत अवश्य देती है। चौथी कहानी 'तीसरी बेटी' की नायिका दीया, कुल के दीपक की आस लगाए बसंल परिवार के घर आई तीसरी बेटी जिसके जन्म ने इस परिवार की आस की लौ बुझा दी। जहाँ धनाढ्य परिवार तीसरी बेटी के पैदा होने के शोक में डूबे हुए थे तो वहीं उनके घर का नौकर रामचरण दूसरी बेटी के जन्म पर मिठाई बाँटता कितनी गहरी बात कहता है कि "संतान सारी एक जैसी"। बड़े अहाते में बैठे संकीर्ण विचारधारा वाले दादाजी, तंग गलियों में रहने वाले रामचरण की उदारवादी आधुनिक सोच पर खीज उठते हैं। दीया अपनी कहानी के ज़रिए अपने अस्तित्व पर उठते प्रश्नों का बहुत प्रभावशाली ढंग से उत्तर देती है और बेटे की चाहत में बेटियों को द्वितीय श्रेणी की संतान का दर्जा दे रहे समाज की सोच को बदलने की कोशिश करते हुए सच की एक नई तस्वीर दिखाती है।

शीर्षक कथा 'इमली का चटकारा' का क्रम पाँचवाँ क्यों? एक आम पाठक के रुप में मेरे मन में यह स्वाभाविक प्रश्न उठा था। पुस्तक के संदर्भ में हुई एक चर्चा के दौरान लेखिका ने मुझे बताया था कि उन्होंने इस कहानी को सबसे पहले लिखा था लेकिन पाठकों की जिज्ञासा बनाए रखने के लिए इसका क्रम पाँचवां तय किया गया। इमली का चटकारा की नायिका सोलह साल की चटोरी कंचन तीस की उम्र तक आते आते इतना बदल जाती है कि इमली की खटास अब उसे ज़हर की तरह लगने लगती है। मातृत्व सुख से वंचित महिलाओं के अधूरेपन को दूर करने के लिए सहृदय समाज और उदार मोहल्लेवासी किस तरह

बिन माँगे अपनी सलाह की सौग़ात देकर जाता है इस प्रवृत्ति पर लेखिका ने कितना सटीक व्यंग्य किया है ... "हिंदुस्तान में कुछ और मुफ़्त मिले न मिले, सलाह ज़रुर मुफ़्त है। सलाह देते समय हर कोई उस विषय का सबसे अच्छा जानकार इन्सान बन जाता है"

छठी कहानी के साथ ही जब हम किताब के मध्यांतर तक पहुँचते हैं तो हमें 'फूल की कहानी' सुनाई जाती है जहाँ दस बरस की आयशा अपनी मटको मम्मा से असली कहानी सुनने की ज़िद करती है और इसी ज़िद की वजह से पाठकों को जिस्मफ़रोशी के दलदल में खिले 'फूल की कहानी' सुनने को मिलती है। "मैं बिकती थी पर बिकाऊ नहीं थी" कहानी की मुख्य पात्र है रोशनी जो ज़िंदगी के अंधेरे गलियारों से गुज़रने के बावजूद अपनी ज़िजीविषा के दम पर अपने जीवन का रुख पलट कर रख देती है। इस कहानी को पढ़ते समय मेरे मन में बार-बार ये विचार आता रहा कि इस कहानी का शीर्षक 'फूल की कहानी' की जगह 'रोशनी की कहानी' होना चाहिए।

"ज़िंदगी गुलाब का बाग कम, त्रासदी का राग ज़्यादा

समीक्षक : आराधना झा श्रीवास्तव
सिंगापुर (स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता)
समीक्षक परिचय - पिछले आठ वर्षों से सिंगापुर में प्रवास कर रही आराधना झा श्रीवास्तव, स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता से जुड़ी हुई हैं। पूर्व में आराधना भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली से पत्रकारिता की औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारतीय समाचार चैनल स्टार न्यूज़ (संप्रति – एबीपी न्यूज़) में बतौर एसोसिएट प्रोड्यूसर के रुप में कार्यरत रहीं।

है"। सातवीं कहानी 'येलेना माँ बनना चाहती है' की मुख्य पात्र येलेना इवानोवना की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। रुस से बेलारुस और फिर जर्मनी में प्रवास कर रही येलेना की कहानी। चेर्नोबिल न्यूक्लियर पावर प्लांट से सटे प्रिप्यात कस्बे की कहानी जहाँ येलेना अपनी बुआ जूली आँटी से मिलने आई थी। ये इस कथा- संग्रह की पहली कहानी है जो विदेशी धरती पर अपनी आँखें खोलती है और प्रवासी पृष्ठभूमि में अवसाद और त्रासदी की मार झेल रही येलेना की पीड़ा को छूती सहलाती आगे बढ़ती है। "जैसे यू. एस. एस.आर. विघटित हुआ था, बरसों पहले और अब टुकड़ों में जी रहा था, हर भू भाग अपनी अपनी नई आत्मा रचकर। वैसे ही टूटी हुई, उलझी, टेढ़ी-मेढ़ी जिंदगियों ने नया संसार रचने का संकल्प लिया"।

येलेना के भयावह सपने का वर्णन करते समय योजना जी की लेखनी की धार और कल्पना की उड़ान उनके लेखन को नई

ऊँचाइयों पर ले जाता है। चेर्नोबिल पावर प्लांट में हुए विस्फ़ोट और उसके फलस्वरुप हुए रेडियोसक्रिय रिसाव के दुष्परिणाम को झेलने वाली येलेना अपनी आँखों के सामने तिल तिल कर गलकर मरने वालों को भुला नहीं पाती है और उनके बुरे स्वप्न येलेना की रातों की नींद उड़ा देते हैं। ये कहानी काफी परिपक्व है और स्त्री-विमर्श के कई आयामों को अपने गर्भ में पालती हुई आगे बढ़ती है। एक ऐसी भाषा-शैली, एक ऐसा कथानक और ऐसे पात्र जो आपको अंत तक बाँधकर रखने में सफल होते हैं। मेरे विचार में इसे शीर्षक कथा होने का सम्मान मिलना चाहिए था। आठवीं कहानी, 'श्रृंखला की अधूरी कहानी' भी अपने कथ्य और शिल्प में संपूर्ण लगी। एक छोटे शहर की बड़े ख़्वाब पालने वाली लड़की श्रृंखला जो लालच में पड़कर सदर पुलिस थाने के दरोगा रमेश के साथ शादी करती है और फिर हक़ीकत की दुनिया से रु-ब-रु होती है। दुर्भाग्यवश श्रृंखला की कहानी उस मोड़ पर आकर ख़त्म होती है जहाँ से उसकी नई शुरुआत की उम्मीद बंधती नज़र आने लगती है। "लगता है, ट्रांजिट में हूँ। शायद जिंदगी और मौत के बीच का डिब्बा है यह, जिसमें रूहानी के साथ कुछ जिस्मानी भी महसूस करती होगी एक रुह" ।

नौवीं कहानी – 'करियर वुमन' कहानी है तृप्ति की अनकही पीड़ा की, भीतर के आक्रोश की, झूठे दंभ के टूटने की, दिखावटी रिश्तों के भीतरी खोखलेपन की, और करियर की दौड़ में ज़िंदगी की गाड़ी के शीशे में से पीछे खड़े होकर पुकारने वाले ममता की आस लगाए नन्हें हाथों और आँखों की। घर और दफ़्तर के दो पाटों के बीच अपनी अतृप्त महात्वाकांक्षाओं के साथ पिसते-पिसते थकती जा रही तृप्ति जो सम्मान और समानता सहित कई मोर्चों पर एक साथ लड़ रही है। "आज उसे पता चला कि जब वह राहुल नाम के पिंजरे से बाहर निकलती है तो जाती है रॉय सरीखों के बनाए पिंजरे में। जहाँ वह कुछ नहीं, बस उनकी रखी सजावटी चिड़िया है या काम करने वाली ऐसी मशीन, जो नहीं चली तो फेंक देंगे और चल गई तो अपना बताकर वाहवाही लूटेंगे"।

दसवीं कहानी – 'वह बुरा नहीं था' यौन हिंसा की भयावह तस्वीर पेश करने वाली एक ऐसी कहानी है जो किशोरवय मन के अपराध की ओर प्रवृत्त होने और फिर अपने साथ उसी हादसे के घटित होने की एक वृत्तीय यात्रा है। मानो आपके किए हुए बुरे कर्म आपकी आँखों के सामने आ जाएँ बस तक़लीफ़ इस बात की होती है कि पुरुष सिर्फ़ पश्चाताप करता है और स्त्री को अपनी जान गंवानी पड़ती है। किसी की ज़िंदगी का चिराग़ बुझाने वाला, उसकी और उसके परिवार की ख़ुशियों में आग लगाने वाला किसी और के घर का इकलौता चिराग़ जिसने क्या ख़ूब रौशन किया अपने परिवार का नाम।

ग्यारवीं कहानी 'हिमालय' जिसे पर्यावरण पर आधारित एक श्रेष्ठ कहानी के रुप में देखा जा सकता है। लेखिका ने हिमालय का कितना सुंदर मानवीकरण किया है। । मैंने लेखिका की हिमालय पर आधारित एक कविता पढ़ी थी जो राजभाषा सम्मान से सम्मानित 'गगनांचल 'पत्रिका में छपी थी। इस कहानी को पढ़ते हुए ऐसा लगा मानो कविता ने कहानी का लिबास ओढ़ लिया हो और फुल्की को आलिंगन किए वह अपने प्रवाह में, अपने आवेग में बहती चली जा रही हो। हिमालय ने मानो अपने कलेजा चीर कर रख दिया हो और उसके भीतर से भावगंगा प्रवाहित हो रही हो। "देवता वास करते हैं मेरी छाती पर। मेरे बदन की कोशिकाएँ बन फूटती हैं अखंड नदियाँ। मेरी आँखों से निकलते हैं हजारों हजार जल प्रपात। स्वछंद होकर बसते हैं विशाल जंगल मेरे भीतर"।

बारहवीं कहानी –'विल यू बी माय वैलेंटाइन' पेशेवर जिंदगी की महत्वाकांक्षा की बलिवेदी पर कसमसाते रिश्तों की एक प्यारी सी कहानी है। 'करियर वुमन' कहानी से इतर यह कहानी एक खूबसूरत अंत पर समाप्त होती है और इसी ख़ूबसूरत कहानी के साथ किताब समाप्त होती है। अंत ख़ुशनुमा हो तो किताब समाप्त करने के संतोष के साथ-साथ आपके चेहरे पर सुखद अंत से उपजी मुस्कान भी तैरने लगती है जो शायद इमली के मीठे स्वाद की परिणति कही जा सकती है।

"सूर्य देवता निकल तो आए हैं पर धुंध की चादर लपेटे हुए। यूँ लगता है जैसे उन्हें भी अपनी गरम गरम रजाई से निकलने का मन नहीं कर रहा। रजाई में दुबके वह छोड़ रहे हैं ठंडी भाप अपने मुँह से, जिससे चारों ओर धुआँ-ही-धुआँ दिखाई देता है"।

जिस तरह सूर्य देवता को अपनी गरम रज़ाई से निकलने का मन नहीं कर रहा उसी तरह पाठक को भी एक बार किताब हाथ में लेने के बाद उसे पूरा पढ़े बिना रखने का मन नहीं करेगा। कहानियों को इस तरह क्रमबद्ध किया गया है ताकि बीच-बीच में पाठकों को राहत की साँस लेने का समय मिल सके। जैसे-जैसे किताब अपने मध्यांतर से आगे बढ़ता जाता है वैसे-वैसे डॉ. योजना साह जैन के लेखन और उनके विचारों का फलक विस्तृत होता जाता है। इन बारह कहानियों में लेखिका ने आंदोलन की धुँधलाती ज़मीन से लेकर हिमालय की ऊँचाई तक का लंबा सफ़र तय किया है। ये कहानियाँ एकाध महीने में नहीं अपितु एक दो वर्षों की लेखन-साधना का फल है। पुस्तक की अधिकांश कहानियों की पृष्ठभूमि भारत ही है। आशा है कि लेखिका डॉ. योजना साह जैन की आगामी कथा-संग्रह में पाठकों को 'येलेना माँ बनना चाहती है' की तरह प्रवासी जीवन के विविध रंगों से सजी कहानियों का रसास्वादन करने का अवसर प्राप्त होगा। प्रभात प्रकाशन जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह के द्वारा कहानियों के प्रथम संग्रह का प्रकाशित होना एक नए कहानीकार के लिए बड़ी उपलब्धि मानी जा सकती है।

पुस्तक समीक्षा

इमली का चटकारा

लेखिका - डॉ. योजना साह जैन, बर्लिन, जर्मनी

लेखिका परिचय - डॉ योजना साह जैन एक बहु-प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हैं जो एक ही समय में विज्ञान, व्यवसाय और रचनात्मक कला के विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम कर रही हैं। योजना एक दूरदर्शी कॉरपोरेट लीडर, उद्यमी, होने के साथ साथ लेखक, और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर एक लोकप्रिय सार्वजनिक वक्ता और कवयित्री भी हैं। योजना फार्माकोलॉजी में डॉक्टरेट हैं और दो दशकों से भारत और जर्मनी में फार्मास्युटिकल और हेल्थकेयर सेक्टर में काम कर रही हैं। वर्तमान में, वह हेल्थकेयर टेक्नोलॉजी कंपनी हेल्थप्रेक्ष की संस्थापक और सीईओ हैं। इनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका पिछला कविता संग्रह "कागज पे फुदकती गिलेहरियां" 2019 में "भारतीय ज्ञानपीठ" द्वारा प्रकाशित किया गया था। समय-समय पर योजना के लेख, कविता और कहानियाँ विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। दुनिया भर में आयोजित कई कवि सम्मेलनों, लेखन कार्यशालाओं और सम्मेलनों में इनकी भागीदारी रही है। डॉ. योजना को उनके अकादमिक, नेतृत्व, साहित्यिक और सामाजिक गतिविधियों के लिए कई पुरस्कारो से सम्मानित किया जा चुका है।

राज्य के पहले पशु सरोगेसी से पैदा हुई गिर नस्ल की गाय ने दिया बछड़े को जन्म

15 से 20 लीटर दूध तक दिया दूध

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में पशु सरोगेसी परियोजना के तहत पैदा हुए आठ बछड़ों ने वयस्क होने के बाद अपने परिवार का पालन-पोषण करना शुरू कर दिया है। हाल ही में सरोगेसी से पैदा हुई गिर नस्ल की गाय 311 ने बछिया और 305 ने बछड़े को जन्म दिया है। वहीं, छह गायें कभी भी बछिया या बछड़े को जन्म दे सकती हैं। राज्य में पहली बार गाय श्यामा ने सरोगेसी के जरिए बछड़े को जन्म दिया। जो अब पायलट प्रोजेक्ट से जुड़कर कई बछिया और बछड़ों का पिता बनने जा रहा है। मप्र राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम के डॉ। आनंद सिंह कुशवाहा ने बताया कि 2014-15 में भ्रूण प्रत्यारोपण का काम शुरू हो गया था । मध्य प्रदेश में पहली बार देशी गाय श्यामा सहित 15 गायों का भ्रूण प्रतिरोपण परियोजना के तहत प्रयोग किया गया। केरवा स्थित मदर बुल फार्म में वर्ष 2015-16 में श्यामा सहित 15 गायों ने 7 बछड़ों, 8 बछिया को जन्म दिया।

294 बछिया और बछड़ों का हुआ जन्म

पशु सरोगेसी के माध्यम से देशी गायों ने 294 बछिया और बछड़ों को जन्म दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि कोशिश यह है कि सरोगेसी से पैदा हुई गाय हर दिन 40 से 50 लीटर तक दूध दे सकती है। प्रदेश में पहली बार सरोगेसी से जन्मी किसी गाय ने यहां गिर नस्ल के एक जोड़े से 15 देशी गायों की सरोगेसी की थी। जिसमें मां सिर्फ 2 लीटर दूध ही दे पाती थी। वहीं सरोगेसी से पैदा हुए बछड़े के पास अब 15 से 20 लीटर दूध है।

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं

मप्र राज्य पशुधन एवं कुक्कुट विकास निगम के एमडी डॉ। एचबीएस भदौरिया ने बताया कि दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं । प्रदेश में 2, 14 ,40 , 694 गाय है । इसमें एक औसत गाय प्रतिदिन 2।24 लीटर दूध देती है। एक गाय अपने जीवन काल में केवल 7 से 8 बार कल्पना की, अब सरोगेसी तकनीक से सबसे अच्छी नस्ल की गाय से साल में चार से पांच बार भ्रूण तैयार किए जा रहे हैं। अभी तक साहीवाल, थारपारकर और राठी नस्ल के बछिया और बछड़े कृत्रिम गर्भाधान से पैदा हुए हैं। माता-पिता के इतिहास पर नजर रखते हुए निगम ने सबसे पहले गिर नस्ल की गाय और बैल की सबसे अच्छी नस्ल खरीदी। माता-पिता के इतिहास पर नजर रखना। गिर नस्ल की गाय के नाम पर 16 से 20 लीटर दूध देने का रिकॉर्ड है। गिर नस्ल की गाय को अंडा बढ़ाने के लिए हार्मोन थेरेपी दी गई। इसके बाद कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया से अंडों का निषेचन गर्भाशय में किया गया।

तय करें कि क्या बछिया या बछड़ा होगा

निगम ने दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए गुणसूत्रों को अलग करने की तकनीक का सफलतापूर्वक परीक्षण किया है। इसमें लिंग निर्धारण करने वाले X और Y गुणसूत्रों को अलग किया जाता है। इससे पशुपालक तय कर सकते हैं कि उन्हें बछड़ा चाहिए या बछिया।

बीजेपी ने लगाए आरोप

कांग्रेस नेता सलमान ने अपनी किताब में हिंदुत्व की तुलना ISIS से की

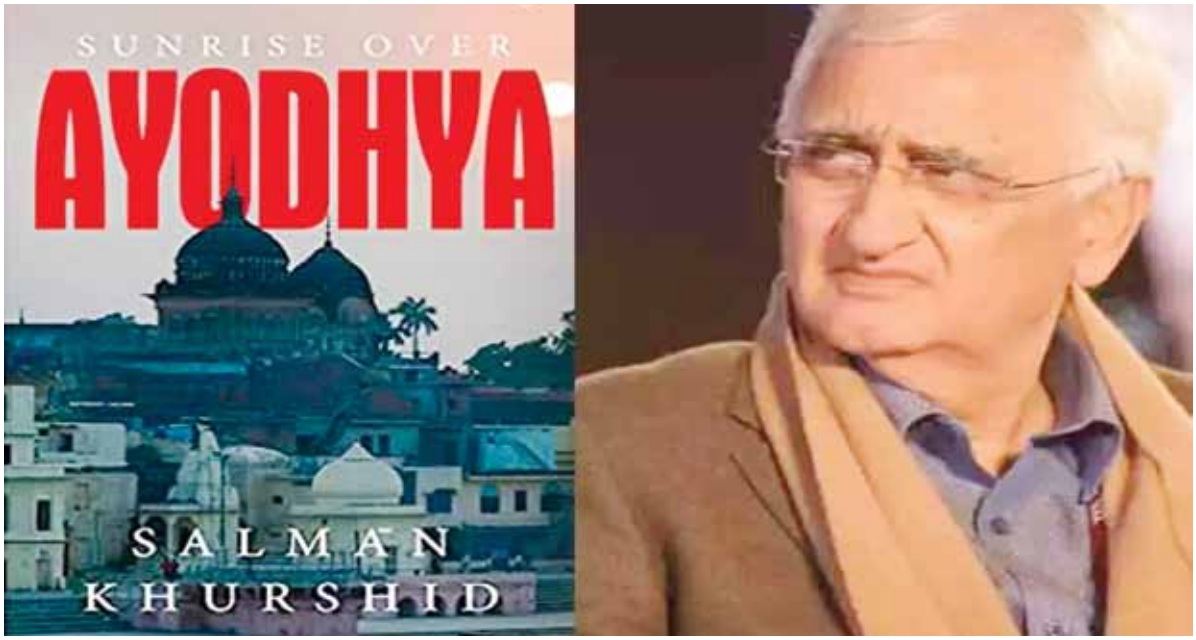

नई दिल्ली से एक बहुत बड़ी खबर निकल कर सामने आ रही है जिसमे कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद की किताब 'सनराइज ओवर अयोध्या' को लेकर हंगामा हो गया है।दरअसल खुर्शीद ने इस किताब में हिंदुत्व की तुलना आतंकी संगठनों ISIS और बोको हराम से की है। खुर्शीद की इस किताब का विमोचन बुधवार को हुआ और 24 घंटे के अंदर उसके खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है। इस मामले में विवेक गर्ग नाम के वकील ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर से केस दर्ज करने की अपील की है। खुर्शीद पर हिंदुत्व को बदनाम करने की कोशिश करने का आरोप है।

बीजेपी का आरोप- ये सोनिया, राहुल के इशारे पर हो रहा है। सलमान खुर्शीद की किताब के जवाब में बीजेपी प्रवक्ता गौरव भाटिया ने सोनिया, राहुल और प्रियंका गांधी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ सलमान खुर्शीद या कांग्रेस के कुछ नेताओं की लाइन नहीं है, बल्कि आज कांग्रेस पार्टी की विचारधारा है। यह विचारधारा यह स्पष्ट करती है कि देश का अधिकांश हिस्सा जिनका योगदान देश को एकजुट करने में रहता है। उनकी भावनाओं को कुचलो। सोनिया गांधी जी और राहुल गांधी के कहने पर ऐसा बार-बार होता है। भाटिया ने कहा कि अगर उत्तर प्रदेश में चुनाव आते हैं तो हिंदुओं को बधाई देते हुए राहुल गांधी और प्रियंका गांधी, क्या वे उत्तर प्रदेश के हर शहर, हर गली में जाने की हिम्मत करेंगे और कहेंगे कि हिंदू धर्म और हिंदुत्व का मतलब आईएसआईएस और बोको हराम की विचारधारा है। है। जिन आईएसआईएस और बोको हराम को संयुक्त राष्ट्र ने आतंकवादी माना है, आप 100 करोड़ हिंदुओं की तुलना कर रहे हैं जिन्होंने पूरी तरह से सहनशील होने का सबूत दिया भाटिया ने आगे कहा कि आज यह कहना जरूरी है कि सोनिया गांधी जी अगर आप हिंदुओं का सम्मान करते हैं। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपको बाहर जाकर चुप्पी तोड़नी होगी। चुप रहना आपका अधिकार हो सकता है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि कांग्रेस की विचारधारा हिंदुओं से नफरत करने की है।सोनिया पर निशाना साधते हुए भाटिया ने कहा कि आप नफरत की राजनीति कर रहे हैं। आपका निशाना कोई और नहीं बल्कि हिन्दू समाज देश का गौरव है। यह भारत की धर्मनिरपेक्षता का अपमान है। यह हम नहीं भूल सकते। कि हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए आपने यहां तक कह दिया कि भगवान राम काल्पनिक हैं।दरअसल खुर्शीद ने अपनी किताब में लिखा है, 'हिंदुत्व ऋषियों के शाश्वत और प्राचीन हिंदू धर्म को अलग रख रहा है, जो हर तरह से आईएसआईएस और बोको हराम जैसे जिहादी इस्लामिक संगठनों की तरह है। खुर्शीद ने अपने तर्क में कहा है कि हिंदू धर्म उच्च स्तर का है। इसके लिए गांधी जी ने जो दिया उससे बड़ी कोई प्रेरणा नहीं हो सकती। मुझे एक नया लेबल क्यों स्वीकार करना चाहिए यदि वह है? अगर कोई हिंदू धर्म का अपमान करता है तो भी मैं बोलूंगा। मैं कहता हूं कि हिंदुत्व की राजनीति करने वाले गलत हैं और आईएसआईएस भी गलत।

खुर्शीद से बीजेपी का सवाल- मन में इतना जहर क्यों? बीजेपी नेता कपिल मिश्रा ने सोशल मीडिया के जरिए सलमान खुर्शीद पर निशाना साधा है। खुर्शीद से सीधे सवाल करते हुए उन्होंने कहा, 'हिंदू बहुल देश में इतना सम्मान मिलने के बाद भी मन में इतना जहर क्यों है? आप क्यों साबित करना चाहते हैं कि आप भी हामिद अंसारी हैं? भारत आज सीरिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान जैसा नहीं है, सिर्फ इसलिए कि यहां हिंदू बहुसंख्यक हैं। ,

सुप्रीम कोर्ट के फैसले की सराहना करते हुए बीजेपी पर तंज कसते हुए सलमान खुर्शीद ने कहा है कि अयोध्या विवाद को लेकर समाज में बंटवारे की स्थिति थी। सुप्रीम कोर्ट ने इसका समाधान निकाला। यह एक ऐसा फैसला है कि ऐसा नहीं लगता कि हम हारे, आप जीतें। खुर्शीद ने बीजेपी की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह घोषित नहीं किया गया है कि हम जीत गए हैं, लेकिन कभी-कभी ऐसे संकेत दिए जाते हैं। सभी को जुड़ने का प्रयास करना चाहिए। वर्तमान में अयोध्या का पर्व एक दल का उत्सव प्रतीत होता है। ' सलमान खुर्शीद ने लिखा है, 'बेशक हिंदुत्व समर्थक इसे इतिहास में अपने गौरव की मान्यता के रूप में देखेंगे। जीवन खामियों से भरा है, जिसमें न्याय के संदर्भ में भी शामिल है, लेकिन हमें आगे बढ़ने के लिए इसे समायोजित करने की आवश्यकता है। यह पुस्तक एक विवेकपूर्ण निर्णय में आशा को देखने का एक प्रयास है, भले ही कुछ लोगों को यह लगे कि निर्णय पूरी तरह से उचित नहीं था। किताब पर बात करते हुए सलमान खुर्शीद ने कहा कि अगर समाज में एकता आती है तो मुझे विश्वास होगा कि किताब लिखने का फैसला सफल रहा। देश में हिंदुत्व की राजनीति के प्रभाव पर चर्चा करते हुए खुर्शीद ने लिखा है, 'मेरी पार्टी कांग्रेस में चर्चाएं अक्सर इस मुद्दे की ओर मुड़ जाती हैं। कांग्रेस में एक तबका है जो इस बात से पछताता है कि हमारी छवि एक अल्पसंख्यक समर्थक पार्टी की है। अयोध्या पर अदालत के फैसले पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उन्होंने घोषणा की कि अब इस स्थान पर एक भव्य मंदिर बनाया जाना चाहिए। इस रुख ने अदालत के उस आदेश की अवहेलना की जिसमें मस्जिद के लिए भी जमीन देने की मांग की गई थी।

शिवराज कैबिनेट फैसला

मप्र में बनेगी देश की पहली साइबर तहसील; बयान होंगे ऑनलाइन

भोपाल। अब मध्यप्रदेश में संपत्ति एवं भूमि के अविवादित हस्तांतरण के लंबित प्रकरणों के निराकरण हेतु पृथक साइबर तहसील यानि हाईटेक राजस्व न्यायालय का गठन किया जायेगा। शिवराज कैबिनेट ने मंगलवार को यह फैसला लिया है। राजस्व विभाग के प्रस्ताव के अनुसार हर दो जिलों के बीच एक साइबर तहसील का गठन किया जाएगा। इसमें पार्टियों के बयान ऑनलाइन होंगे। गृह मंत्री एवं शासन प्रवक्ता डॉ। नरोत्तम मिश्रा ने कैबिनेट के निर्णय की जानकारी देते हुए बताया कि मध्यप्रदेश पहला राज्य होगा जहां साइबर तहसील का गठन किया जा रहा है। इसके लिए अलग से तहसीलदार की नियुक्ति की जाएगी। इस व्यवस्था में खरीदार और विक्रेता को धर्मांतरण के लिए तहसील कार्यालय आने की जरूरत नहीं होगी। आवेदन के बाद तहसीलदार नोटिस जारी करेंगे। आपत्ति न होने पर नामांकन किया जाएगा।

राजस्व विभाग के अधिकारियों का कहना है कि राजस्व न्यायालय में संबंधित व्यक्तियों के हाजिर न होने के कारण अविवादित धर्मांतरण के हजारों मामले लंबित हैं। जमीन या प्लॉट बेचने के बाद विक्रेता ब्याज नहीं लेते हैं। ऐसे मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए अब प्रदेश में साइबर तहसील की स्थापना की जायेगी। यह दो जिलों में से एक हो सकता

है। प्रस्ताव के अनुसार आवेदन मिलने के बाद तहसीलदार संबंधित को नोटिस जारी करेगा। आपत्ति न होने पर आदेश पारित किया जाएगा। कृषि उपयोग के लिए पट्टे पर दी गई भूमि को बेचने के प्रस्ताव पर कोई निर्णय नहीं कृषि उपयोग के लिए पट्टे पर दी गई भूमि को बेचने के प्रस्ताव को कैबिनेट में रखा गया था। कैबिनेट ने फैसला किया है कि यह मामला मंत्री समूह के पास जाएगा। उसके बाद ही इसे पारित किया जाएगा। यदि यह प्रस्ताव पारित हो जाता है, तो राज्य में जिन लोगों को कृषि उपयोग के लिए पट्टे पर भूमि दी गई है और उन्हें स्वामित्व मिल गया है, वे अब भूमि को बेच सकेंगे, हालांकि विशेष परिस्थितियों में, भूमि को कृषि उपयोग के लिए बेचा जा सकता है।

पंचायत राज संशोधन अध्यादेश का समर्थन कैबिनेट ने पंचायत राज संशोधन अध्यादेश 2021 का भी समर्थन किया है। गृह मंत्री ने कहा कि अब पंचायतों के चुनाव 2019 से पहले परिसीमन के अनुसार होंगे। इसके साथ ही 2014 में किए गए पदों का आरक्षण मान्य होगा। आपको बता दें कि दो दिन पहले शिवराज सरकार ने कमलनाथ सरकार के फैसले को पलट दिया था। सरकार ने मध्य प्रदेश पंचायत राज और ग्राम स्वराज (संशोधन) अध्यादेश-2021 को लागू कर दिया है। इसकी अधिसूचना रविवार देर शाम जारी कर दी गई है, जिसके अनुसार सरकार ने पंचायत चुनाव की तैयारियों के बीच ऐसी पंचायतों का परिसीमन रद्द कर दिया है, जहां पिछले एक साल से चुनाव नहीं हुए हैं। ऐसे सभी जिलों, जिलों या ग्राम पंचायतों में पुरानी व्यवस्था लागू रहेगी। जिस वर्ग के लिए पद आरक्षित है, वही रहेगा।

शिवराज सरकार ने चुनाव की तैयारियों के बीच रद्द कर दिया नया परिसीमन

पंचायत चुनाव की तैयारियों के बीच शिवराज सरकार ने नया परिसीमन रद्द कर दिया है । सरकार ने मध्य प्रदेश पंचायत राज और ग्राम स्वराज (संशोधन) अध्यादेश 2021 को लागू किया है । इस मामले पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों ने बताया कि चुनाव से पहले पंचायतों के परिसीमन का प्रावधान है । पंचायतों में जहां परिसीमन हो चुका है, लेकिन चुनाव एक वर्ष के भीतर नहीं होते हैं, तो परिसीमन को शून्य और शून्य माना जाएगा। इसके बाद वहां परिसीमन पूर्व की व्यवस्था लागू होगी। इसके बाद पुरानी व्यवस्था ऐसे सभी जिलों, जिलों या ग्राम पंचायतों में लागू होगी जहां पिछले एक साल से चुनाव नहीं हुए हैं। यानी जिस पद के लिए कैटेगरी रिजर्व है वह पद वही रहेगा । इसकी अधिसूचना रविवार देर शाम जारी कर दी गई।

बता दें कि कमलनाथ सरकार ने सितंबर 2019 में जिले से राज्य में ग्राम पंचायतों के लिए नया परिसीमन लागू किया था, जिसके बाद करीब 1200 नई पंचायतों का गठन किया गया और 102 ग्राम पंचायतों को समाप्त कर दिया गया । इसके साथ ही 1950 की सीमा में बदलाव किए गए।

कांग्रेस ने उठाए सवाल

शिवराज सरकार के इस फैसले के बाद कांग्रेस ने सवाल उठाया है कि क्या सरकार को पंचायत चुनाव का डर है । कांग्रेस प्रवक्ता सैयद जाफर ने सवाल किया है कि क्या मध्य प्रदेश की बीजेपी सरकार ने पंचायत चुनाव को आगे बढ़ा दिया है । क्या मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने पूर्व में ग्राम पंचायतों का परिसीमन रद्द कर दिया है? क्या पंचायत चुनाव से डरी भाजपा सरकार? मध्य प्रदेश में 23,912 ग्राम पंचायतें हैं. 904 जिला पंचायत सदस्य और 6035 जनपद सदस्य त्रि-स्तरीय पंचायत का प्रतिनिधित्व करते हैं. 2014-15 में हुए पंचायत चुनाव के बाद 2020 तक उनका कार्यकाल खत्म हो चुका है।

बाल विवाह कराने वाले और शामिल लोगों पर भी होगी कार्यवाही...

खण्डवा । बाल विवाह एक सामाजिक कुरीति है, जिसके कारण देश में हजारों बालक व बालिकाओं को समय के पूर्व ही पारिवारिक बंधनों में बांध कर माता पिता द्वारा उनके भविष्य से खिलवाड़ किया जाता है। सरकार द्वारा इस कुरीति को समाज से पूर्णतः समाप्त करने के उद्देश्य से बाल विवाह निषेध अधिनियम लागू किया गया है, जिसके अंतर्गत बाल विवाह करवाने वाले वर-वधू के माता-पिता तथा विवाह में शामिल अन्य सभी व्यक्तियों पर कानूनी कार्यवाही की जायेगी। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्री विष्णु प्रताप सिंह राठौर ने नागरिकों स` अनुरोध किया है कि वे अपने बच्चों का विवाह निर्धारित आयु सीमा पूर्ण होने के बाद ही करें। उन्होंने नागरिकों से यह अनुरोध भी किया है कि वे ऐसे किसी भी विवाह कार्यक्रम में शामिल न हो जिनमें वधू 18 वर्ष से कम या वर 21 वर्ष से कम आयु का हो, अन्यथा उनके विरूद्ध भी कानूनी कार्यवाही की जा सकती है।

जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री राठौर ने मुद्रकों से अपील की कि वे विवाह के पूर्व वर एवं वधू दोनों की सही आयु की संतुष्टि के लिए उनके मूल जन्म प्रमाण पत्र, अंकसूची, स्कूल की टी.सी. आदि की सत्यापित छायाप्रति प्राप्त कर अपने पास अनिवार्य रूप से रख लें तथा उम्र सही न होने की दशा में विवाह कदापि न करवाएं और ना ही मुद्रक संस्थाएं ऐसी पत्रिका छापें तथा ऐसे प्रकरणों की सूचना तत्काल जिला महिला एवं बाल विकास विभाग कार्यालय खण्डवा में अथवा उनके दूरभाष क्रमांक 0733-2222140 पर दे सकते है।

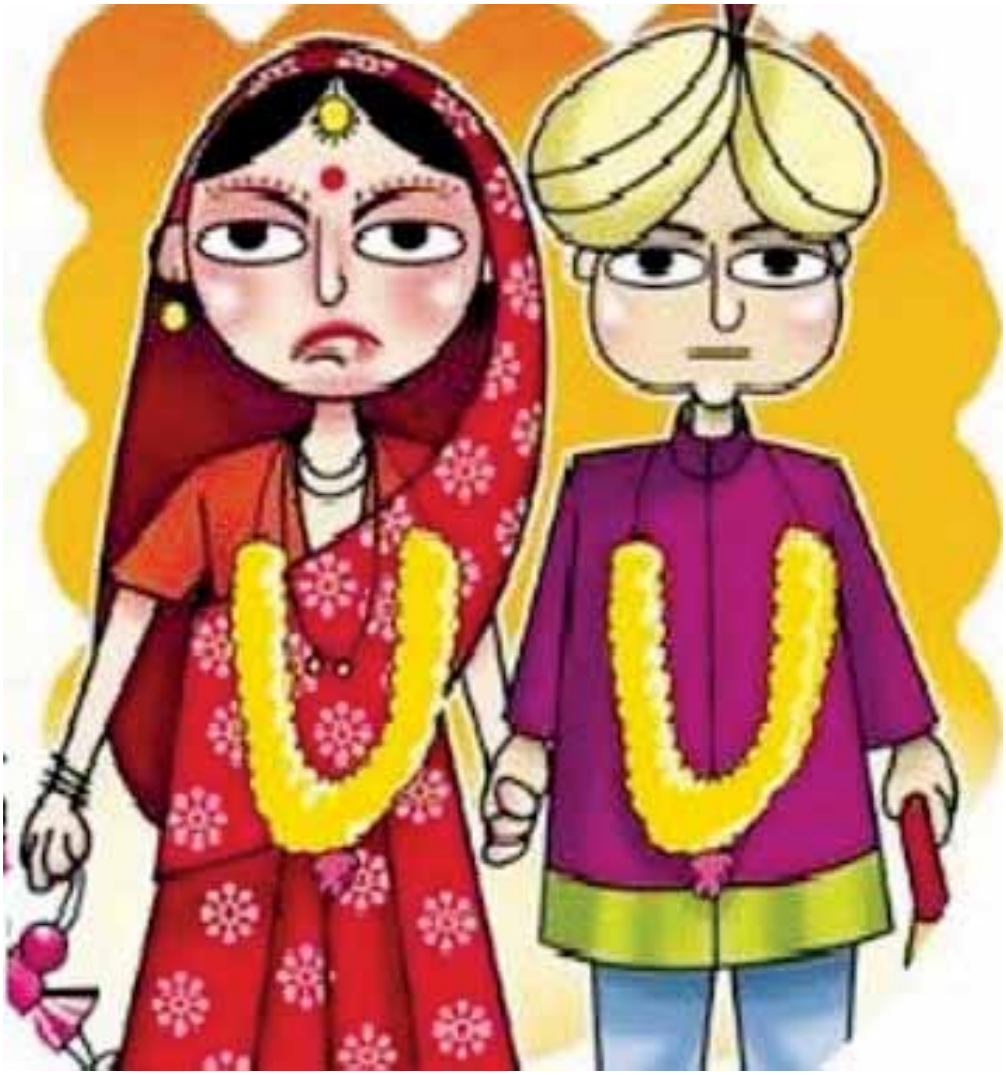

बाल विवाह की रोकथाम के लिए कन्ट्रोल रूम स्थापित

प्रदेश में होने वाले बाल विवाह की रोकथाम के लिए शासन द्वारा चलाये जा रहे लाड़ो अभियान के तहत खण्डवा जिले में बाल विवाह होने संबंधी कोई भी सूचना जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी कार्यालय खण्डवा के दूरभाष क्रमांक 0733-2222140 पर दी जा सकती है। इसके अलावा जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्री विष्णु प्रताप सिंह राठौर के मोबाइल नम्बर 9826072001 एवं सहायक संचालक श्री हरजिंदर सिंह अरोरा के मोबाइल न. 8770831658 तथा मनोज कुमार दिवाकर सामाजिक कार्यकर्ता आई.सी.पी.एस. के मोबाइल न. 8878008776 पर भी इस संबंध में संपर्क किया जा सकता है। बाल विवाह की रोकथाम एवं उन पर त्वरित कार्यवाही करने के लिए कलेक्टर श्री अनय द्विवेदी ने अनु. अधिकारी राजस्व की अध्यक्षता में 6 सदस्यीय समितियों का गठन प्रत्येक विकासखण्ड स्तर पर किया गया है। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्री राठौर ने बताया कि 14 नवम्बर देव उठनी ग्यारस एवं अन्य तारीखों में होने वाले विवाहों, निकाहों एवं सामूहिक विवाहों में बाल विवाह न हों, इसके लिए बाल विकास परियोजनाओं में परियोजना अधिकारी, पर्यवेक्षक एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ता इसके लिए अपने क्षेत्रों में घर-घर जाकर निगरानी करेंगे, ताकि कोई भी बाल विवाह हो ना सके, त्वरित दल के गठन, विशेष पुलिस दल का गठन तथा बाल विवाह पर होने वाली कार्यवाही के प्रचार-प्रसार संबंधी निर्देश जारी करते हुए बाल विवाह रोकने विषयक त्वरित कार्यवाही करने के लिए क्षेत्रीय अधिकारी कर्मचारियों को निर्देश जारी किये गये हैं।

2017
कचरा संग्रहण (डोर-टू-डोर) इंदौर बना पहली बार नंबर वन, हर घर से कूड़ा उठाना चुनौती कूड़ेदान हटाओ। निगम ने यह किया है।

2018
सेग्रीगेशन (गीला-सूखा) ने गीला, सूखा कचरा अलग करना शुरु किया। खुले में शौच मुक्त और ओडीएफ प्लस पुरस्कार जीता।

2019
जीरो वेस्ट (ट्रेंचिंग ग्राउंड) हैट्रिक के लिए निगम ने ट्रेंचिंग ग्राउंड में वर्षों से फैले 12 लाख मीट्रिक टन कचरे के पहाड़ को खत्म किया।

2020
कचरे की अर्थव्यवस्था (41.5 करोड़) अपशिष्ट शुल्क से 40 करोड़ और कचरे से कच्चा माल तैयार करके सालाना 1.5 करोड़ की कमाई।

2021
सीवरेज ट्रीटमेंट (जल प्लस) 21.3 किमी लंबी कान्ह और 12.4 किमी सरस्वती नदी को पुनर्जीवित किया गया।

इंदौर.. इसलिए 5वीं बार नंबर-वन

21.3 किमी कान्ह और 12.4 किमी लंबी सरस्वती नदी को हुआ पुनर्जीवित, कभी लोग इसे नाला समझते थे

इंदौर। इंदौर को लगातार 5वीं बार देश का सबसे स्वच्छ शहर चुना गया। दिल्ली में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इंदौर को नंबर-1 शहर का अवॉर्ड, सफाई मित्र को 12 करोड़ और 5 स्टार रेटिंग दी। 35 लाख की आबादी वाले 139 करोड़ भारतीयों के लिए इंदौर कैसे और क्यों स्वच्छता में रोल मॉडल बना, आइए जानते हैं... सबसे बड़ा कारण यह है कि इंदौर ने 21.3 किमी लंबी कान्ह और 12.4 किमी सरस्वती नदी को पुनर्जीवित किया है। 6 प्रमुख नालों सहित 137.28 किमी में बहने वाले सीवरेज को संसाधित किया जा चुका है। अब नदियों और नालों में कचरा नहीं बहता है। इसी का नतीजा है कि 41 साल बाद शुक्रवार को कार्तिक पूर्णिमा पर लोग सरस्वती के तट पर दीपदान करते नजर आए.

कचरे से सालाना 20 करोड़ की कमाई इंदौर वर्तमान में कचरे से सालाना 20 करोड़ कमा रहा है। इसमें कार्बन क्रेडिट, सीएनजी, कम्पोस्ट खाद, सीएनडी कचरा और सूखा कचरा शामिल है। जानकारों का मानना है कि इंदौर जिस तेजी से कचरा प्रबंधन पर काम कर रहा है, उससे आने वाले तीन सालों में कचरे से हमारी कमाई 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर जाएगी. भारत स्मार्ट सिटी प्रतियोगिता 2020 में बिल्ड एनवायरनमेंट थीम में 56 दुकानों में सबसे स्वच्छ स्ट्रीट फूड, इंदौर द्वारा 56 दिनों के रिकॉर्ड समय में 5.17 करोड़ की लागत से 56 दुकानों का कायाकल्प किया गया। इसे क्लीनेस्ट स्ट्रीट फूड का अवॉर्ड भी मिल चुका है। रोजाना 500 किलो गीला कचरा प्रोसेस करने के लिए दुकानदारों ने खुद प्लांट लगाया है। लोगों को उपहार दिए जा रहे हैं। घर भी रोल मॉडल अली हुसैन रूबी का घर इंदौर की स्वच्छता इंदौर मॉडल की मिसाल है।

दस लाख से अधिक आबादी वाले शीर्ष 20 शहरों में मप्र के सभी चार प्रमुख शहर शामिल हैं। 20वें नंबर पर इंदौर-1, भोपाल-7, ग्वालियर-15, जबलपुर हैं. 10 लाख तक की आबादी में पांचवां नंबर उज्जैन का है. वहीं, देवास को तीन लाख की आबादी के साथ शहर में छठा स्थान मिला है।

राष्ट्रपति डॉ. रामनाथ कोविंद की उपस्थिति में विजयी शहरों और राज्यों का अभिनंदन किया जा रहा है. इंदौर को देश के सबसे स्वच्छ शहरों की श्रेणी में मजबूत दावेदार माना जाता था। हुआ भी यही।

इंदौर साल 2017 से पहले नंबर पर है। उन्हें यह खिताब लगातार पांचवीं बार मिला है। राष्ट्रपति कोविंद ने इंदौर को पुरस्कार दिया, जो पहले नंबर पर था. केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी मंच पर मौजूद हैं. नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेंद्र सिंह, इंदौर के सांसद शंकर लालवानी, विभाग के प्रधान सचिव मनीष सिंह, इंदौर कलेक्टर मनीष सिंह, इंदौर नगर आयुक्त प्रतिभा पाल आदि इंदौर पुरस्कार ग्रहण करने दिल्ली पहुंचे थे. कार्यक्रम में भोपाल के कई जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी शामिल हुए।

स्वच्छ सर्वेक्षण में बेहतर प्रदर्शन करने वाले शहरों की श्रेणी में उज्जैन, देवास, होशंगाबाद और बरवाह सहित इंदौर-भोपाल को भोपाल समेत 6 शहरों ने नामांकित

किया था. भोपाल ने सफाई मित्र, स्टार रेटिंग और स्वच्छ सर्वेक्षण का दावा किया। पिछले साल भोपाल देश के सबसे स्वच्छ शहरों में सातवें नंबर पर था। इस बार रैंकिंग में सुधार हुआ है।

गीला कचराः हर दिन 700 टन गीला कचरा पैदा होता है। इससे उर्वरक और बायोमेथेनाइजेशन प्लांट से सालाना 7 करोड़ रुपये की आमदनी होती है। इस साल इंदौर में कचरे को रिसाइकिल कर खाद बनाने की शुरुआत की गई थी। इसे किसानों और बागवानों को बेचा गया। इससे नगर निगम को सालाना 1.5 करोड़ की कमाई हुई।

2021 में इंदौर में कचरे से गैस बनाना शुरू हुआ। कचरे से इस साल एक साल में 20 करोड़ रुपये कमाए। वाटर प्लस के साथ-साथ इंदौर ने गारबेज फ्री सिटी का खिताब भी अपने नाम किया। अपशिष्ट प्रसंस्करण से इस तरह की कमाई

कीचड़: सीवरेज ट्रीटमेंट के बाद बचे कीचड़ को खाद के रूप में बेचकर सालाना 2 करोड़ की कमाई।

सीएंडडी वेस्ट : निर्माण व विध्वंस कचरे (मलबे) से ब्लॉक बनाकर निगम ने इस साल 25 लाख की कमाई की।

सूखा हुआ कचराः प्रतिदिन 450 टन सूखा कचरा उत्पन्न हो रहा है। इसकी प्रोसेसिंग करने वाली कंपनी निगम को सालाना 2 करोड़ रुपये दे रही है।

क्रांतिसूर्य महात्मा ज्योतिबा फुले एवं मां सावित्री बाई फुले की मूर्ति स्थापना

पूर्व मंत्री अर्चना चिटनिस का योगदान अविस्मरणीय

आखिरकार लंबे समय से माली समाज द्वारा की जा रही मांग पूर्व मंत्री अर्चना चिटनिस (दीदी) के प्रयासों के परिणामस्वरूप पूर्ण हुई। बुरहानपुर में शनवारा-लालबाग रोड स्थित श्री भैरव बाबा मंदिर के समीप महात्मा ज्योतिबा फुले एवं माता सावित्रीबाई फुले की प्रतिमा स्थापित हो गई है।

ज्ञात हो कि तत्कालीन मंत्री चिटनिस द्वारा महात्मा महात्मा ज्योतिबा फुले एवं माता सावित्रीबाई फुले जी की आदमकद मूर्ति नगर निगम को समाज के हस्ते सौंपी गई थी। आपत्तियों एवं अन्य व्यवधानों के कारण महापुरुषों की प्रतिमाओं की स्थापना में रुकावटें आ रही थी। रविवार को समाज के वरिष्ठों एवं जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में प्रतिमा की स्थापना की गई।

इस अवसर पर समाज के वरिष्ठजनों ने कहा कि क्रांतिसूर्य महात्मा ज्योतिबा फुले एवं मां सावित्री बाई फुले की मूर्ति स्थापना में पूर्व मंत्री अर्चना चिटनिस (दीदी) का योगदान अविस्मरणीय रहा। आधुनिक भारत में महात्मा की उपाधि से सम्मानित श्रद्धेय स्वर्गीय ज्योतिबा फुले एवं भारत की प्रथम महिला शिक्षिका श्रद्धेय मां सावित्रीबाई फुले की मूर्तियां स्थानीय भैरव मंदिर-शनवारा रोड की पश्चिम दिशा में स्थापित की गई। वर्ष 2018 में तत्कालीन मंत्री अर्चना चिटनिस के प्रयासों से उक्त स्थान के विकास एवं उन्नयन का कार्य प्रारंभ हो गया था, किंतु बीच में उनके विधायक नहीं रहने एवं कोरोना काल के आ जाने से यह स्थापना का कार्य थोड़ा लंबित हुआ। तत्कालीन समय में पूर्व मंत्री श्रीमती चिटनिस के योगदान से आज स्थापित की गई मूर्ति की व्यवस्था हो पाई थी। नगर निगम एवं अन्य विभागों की अनुमतियां प्राप्त करने में भी उनका पर्याप्त सहयोग रहा। उनके प्रयासों की परिणीति में आज महात्मा ज्योतिबा फुले एवं मां सावित्रीबाई फुले की मूर्तियां नगर में स्थापित हो पाई। संयुक्त माली समाज जिला बुरहानपुर एवं समस्त प्रादेशिक माली, कुशवाह समाज संगठन ने पूर्व मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनिस का महात्मा ज्योतिबा फुले एवं मां सावित्री बाई फुले की मूर्तियों की स्थापना में प्रदान किए गए अविस्मरणीय सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता है।

गत दिनों नवनिर्वाचित सांसद ज्ञानेश्वर पाटिल, नगर निगमायुक्त सहित अन्य अधिकारियों ने स्थल निरीक्षण किया था। सांसद पाटिल ने अतिशीघ्र प्रतिमा स्थापना हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए थे।

पूर्व मंत्री अर्चना चिटनिस ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले व माता सावित्री फुले के द्वारा समाज को दिया गया योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि महापुरुषों की प्रतिमा लगाने से उन्हें देख उनके जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने की सीख मिलती है।

अर्चना चिटनिस ने कहा कि स्त्रियों की शिक्षा को लेकर लोग उदासीन थे, ऐसे में ज्योतिबा फुले ने समाज को इन कुरीतियों से मुक्त करने के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन चलाए। उन्होंने महाराष्ट्र में सर्वप्रथम महिला शिक्षा तथा अछूतोद्धार का काम आरंभ किया था। उन्होंने पुणे में लड़कियों के लिए भारत की पहला विद्यालय खोला। माता सावित्री फुले ने महिलाओं में शिक्षा की अलख जगाई।

वर्तमान में महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में पुरूष से आगे निकल रही है। 1840 में ज्योतिबा का विवाह सावित्रीबाई से हुआ था। उनकी पत्नी सावित्री बाई फुले भी एक समाजसेविका थीं। उन्हें भारत की पहली महिला अध्यापिका और नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता कहा जाता है। बच्चों का अनाथालय भी ज्योतिबा ने खोला। विभिन्न प्रमुख सुधार आंदोलनों के अतिरिक्त हर क्षेत्र में छोटे-छोटे आंदोलन जारी थे जिसने सामाजिक और बौद्धिक स्तर पर लोगों को परतंत्रता से मुक्त किया था। लोगों में नए विचार, नए चिंतन की शुरुआत हुई, जो आजादी की लड़ाई में उनके संबल बने। उन्होंने किसानों और मजदूरों के हकों के लिए भी संगठित प्रयास किया था चिटनिस ने कहा कि महात्मा फुले एक समतामूलक और न्याय पर आधारित समाज की बात कर रहे थे इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओं में किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए विस्तृत योजना का उल्लेख किया है। पशुपालन, खेती, सिंचाई व्यवस्था सबके बारे में उन्होंने विस्तार से लिखा है। गरीबों के बच्चों की शिक्षा पर उन्होंने बहुत जोर दिया। उन्होंने आज के 150 साल पहले कृषि शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना की बात की।

पापा बुलेट प्रूफ जैकेट पहनकर निकले थे, वो जैकेट कहां गई?

महाराष्ट्र के तत्कालीन एटीएस चीफ हेमंत करकरे 26/11 आतंकी हमले में शहीद हो गए थे। वह पाकिस्तानी आतंकियों की गोलियों का शिकार हुआ था। अब 13 साल बाद हेमंत की बुलेट प्रूफ जैकेट को लेकर उनकी बेटी जुई करकरे ने सवाल उठाया है । जुई ने अपने पिता की बहादुरी, उनकी प्रेरणा, देशभक्ति और मुंबई हमले के बाद की कठिनाइयों को साझा किया है। जो हम आपके सामने वैसे ही पेश कर रहे हैं । 'तारीख 20 नवंबर 2008 थी, सुबह हो गई थी। माँ का सामान्य फोन उनकी कुशलक्षेम जानने के लिए था। तब अमेरिका में धन्यवाद सप्ताह चल रहा था, जो वहाँ बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। मैंने अपनी माँ से कहा कि मेरी शिकागो से भाभी मैं उन्हें बोस्टन के दौरे पर ले जा रहा हूं। उसके बाद हम टहलने गए। इसी बीच मेरी बहन को जर्मनी से फोन आया कि पापा हेलमेट और बुलेट प्रूफ जैकेट पहनकर आतंकवादी गतिविधि में जा रहे हैं। मैं मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया मैंने हमेशा सोचा कि पापा एक सुपर हीरो हैं, उन्हें कभी कुछ नहीं हो सकता। वह सभी को बचा लेंगे। घर आते ही मैंने टीवी चालू कर दिया। टीवी पर खबर चमक रही थी कि हेमंत करकरे घायल हो गए थे मैंने और सोचा यह कोई गंभीर मामला नहीं है। खबर आई कि हेमंत करकरे नहीं रहे। मुझे इस खबर पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैं सोच भी नहीं सकता था कि मेरे पिता के साथ ऐसा हादसा हो जाएगा। तभी मेरे पति का फोन आया। मुझे घर आने के लिए कह रहा था। उसकी आवाज सुनकर, मुझे पहली बार लगा कि यह हो गया है। फिर मेरी बहन का संदेश आया कि 'पापा गेले' (पापा नहीं रहे।) मैं बिल्कुल चौंक गया था। जब उसने अपनी मां को फोन किया तो पता चला कि चाचा उसे पिता का शव दिखाने के लिए अस्पताल ले गए थे। उसी दिन हम भारत आना चाहते थे, लेकिन नहीं आ सके, एयरपोर्ट पर रेड

अलर्ट था। दो दिन बाद हम भारत पहुंचे। सामने पापा की चिता जल रही थी। मीडिया हम बच्चे सवाल-जवाब कर रहा था। पहली बार हम मीडिया और इतनी भीड़ का सामना कर रहे थे। पोस्टमॉर्टम के समय स्टॉक में काफी सामान था, लेकिन बुलेटप्रूफ जैकेट गायब थी। मैं चौंक गया कि यह कैसे हो गया। इस सवाल के जवाब में मां की तबीयत खराब हो गई। कई लोग घर में आकर कहते थे कि हम करकरे परिवार के साथ हैं। हमें कुछ समझ नहीं आया। मीडिया और कुछ गैर सरकारी संगठनों ने इन सवालों का अनुसरण किया। मां ने जानना चाहा कि बुलेट प्रूफ जैकेट कहां गई? तब चिदंबरम ने माफी भी मांगी थी। हमें चिंता होने लगी कि कहीं मां की तबीयत न बिगड़ जाए। उन्हें नींद नहीं आई, लेकिन विनीता कामटे जी ने हमारा बहुत साथ दिया। पापा का वॉयस रिकॉर्ड भी भेजा। जब पापा ने कहा कि सेना बुलाओ और कामा अस्पताल का चक्कर लगाओ। लोग कह रहे थे कि पापा को समझ नहीं आया, लेकिन ऐसा नहीं है. पापा का वॉयस रिकॉर्ड इस बात का सबूत है। मीडिया ने मेरे 17 साल के भाई से तरह-तरह के सवाल पूछे। उसने अपने पिता की चिता में आग लगा दी थी। वह अवाक थे कि कोई इस तरह के सवाल कैसे पूछ सकता है? कई दिनों तक लगातार घर में अधिकारी व कई लोग आते रहे। मेरी माँ ने घर के नौकरों को बुलाया और कहा कि एक भी व्यक्ति बिना चाय-पानी के नहीं जाना चाहिए। मैं अपनी मां को देखकर हैरान रह गई कि जिसने अपना जीवन साथी खो दिया है, वह ऐसे समय में ऐसा कैसे सोच सकती है? माँ ने हमारी देखभाल की, वह कहती थी कि जो जन्म लेता है वह जाएगा, लेकिन जो देश को बचाने के लिए अपनी जान दे देते हैं, उन्हें महिमा मिलती है। इससे मुझे काफी ताकत मिली।

पापा बहुत गंभीर थे। उनका मानना था कि जिसने भी अपराध किया है उसे दंडित किया जाना चाहिए, चाहे वह कोई भी हो। वह पीछे नहीं हटे। हालाँकि, माँ चिंतित थी। कोई पत्नी चिंतित होगी। जब पापा विएना में डिप्लोमैट थे तो उनके लिए कई मौके थे, लेकिन पापा को तब अपने देश जाना पड़ा। पुलिस में भर्ती होकर देश की सेवा करनी पड़ी। कभी-कभी मां के मन में यह ख्याल आता था कि अगर हम विएना में रुके होते तो शायद आज ऐसा नहीं होता. मां सोचती थी कि पापा की एटीएस चीफ की नौकरी काफी जोखिम भरी है, लेकिन पापा को ऐसा कभी नहीं लगा। उनका जीवन में एक ही फोकस था कि उन्हें खाकी पहननी है ताकि मैं देश की सेवा कर सकूं। कुछ लोग पापा के बारे में ठीक से नहीं बोलते हैं। यह मुझे दुःख देता है। पापा को किताबें पढ़ना पसंद था। किताब पढ़ते समय अपने आसपास जो हो रहा था उसे भूल जाता था। एक बार वे नागपुर के रामकृष्ण मठ के पुस्तकालय में पढ़ रहे थे। वहां स्वामीजी ने समय पर पुस्तकालय बंद कर दिया। पापा तब दुबले पतले थे, देख नहीं सकते थे। रात हो गई थी, अँधेरे में दादी डर गईं कि पापा कहाँ चले गए। वह उन्हें खोजने निकली। दादी ने स्वामी जी से कहा कि तुम अपना पुस्तकालय खोलो, मेरा बेटा अंदर होगा। ताला खोलने पर पता चला कि पापा वहीं बैठे किताब पढ़ रहे हैं। तब मैं भी डिप्रेशन के दौर से गुजर रहा था। मैंने सोचा कि अवसाद पर काबू पाने और अपने पिता को श्रद्धांजलि देने का सबसे अच्छा तरीका एक किताब लिखना है। मैंने उसी साल 2008 में एक किताब लिखना शुरू किया, जो मेरे लिए एक तरह की थेरेपी थी। जैसे-जैसे मैंने लिखना जारी रखा, मेरे पिता को खोने का दर्द कम होता गया। लेखन ने मुझे ताकत दी। मैं खुद उनसे प्रेरित हुआ। मेरी दो लड़कियां हैं। ईशा और रुतजा। ईशा 10 साल की हैं और रुतुजा 7 साल की हैं। मुझे शुरू में बहुत परेशानी हुई। मेरे माता-पिता एक के बाद एक इस दुनिया को छोड़कर चले गए। मैं बहुत परेशानी में रहता था, लेकिन किताब लिखते समय मैं हमेशा सोचता था कि मेरे पिता ने मुझे क्या सिखाया है, इसलिए मैं चाहूंगा कि दूसरे भी इस किताब को पढ़ें। इस पुस्तक में कई अध्याय हैं। जैसे कोई चैप्टर उनके साथियों का हो। जब पापा विएना में डिप्लोमैट थे, तब राजू नाम का एक रसोइया था। वह उसे वियना ले गया था। पुस्तक में उनका साक्षात्कार भी है। लोग दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और बराबरी करते हैं, लेकिन वह अभी भी कुक पापा को याद करते हैं। पापा हर वर्ग के लोगों के साथ समान व्यवहार करते थे। पापा बचपन से कहते आए हैं कि इंसान की मेहनत रंग लाती है। कोई भाग्य नहीं है। आदमी को मेहनत करनी पड़ती है। में चाहती हू को मेरे पिताजी की सबक अन्य लोगों तक भी पहुंचा। मैंने अपनी किताब में लिखा है कि पुलिस अधिकारी कितनी मेहनत करते हैं। खतरे से खेलो। लोगों को पता ही नहीं है। जो पब्लिक फिगर हैं उनकी भी अपनी निजी जिंदगी होती है। जब मैं दस साल का था तब पापा की पोस्टिंग नक्सली इलाके चंद्रपुर में थी। वह वहां के पुलिस अधीक्षक थे। सुरक्षा गार्ड हमेशा मेरे साथ स्कूल जाते थे। मुझे वास्तव में यह पसंद नहीं था कि मेरे दूसरे दोस्त खेलते थे। मैं आराम से टिफिन खा लेता था, लेकिन मेरे साथ हमेशा एक सिक्योरिटी गार्ड रहता था। मैं छोटा था, मुझे समझ नहीं आता था कि ये लोग हमेशा मेरे साथ क्यों थे, लेकिन अब मैं समझता हूं । बड़े होकर मुझे पता चला कि मेरे पिता की जान को खतरा है, लेकिन वह घर का माहौल खुशनुमा रखते थे। उनकी नौकरी कितनी खतरनाक थी, इसका असर बच्चों पर नहीं पड़ने दिया गया। मेरे हर बर्थडे पर पापा हमेशा पार्टी खुद ही ऑर्गनाइज करते थे। कौन सा संगीत बजाएं, जादूगर लाऊं, ताकि बच्चों को अच्छा लगे, मेरे लिए क्या गिफ्ट लाऊं। यह सब वह बहुत सोच-समझकर चुनते थे। अब मैं भी बड़ा हो गया हूं, काम करता हूं, अब सोचता हूं कि वह इतना शौकीन कैसे था, जबकि उसकी नौकरी इतनी मांग वाली थी, फिर भी वह समय निकालकर यह सब करता था। मुझे याद है कि मेरे 16वें जन्मदिन पर मेरे पिता ने मुझे स्वास्विकी का एक लॉकेट उपहार में दिया था। जो था ताला और चाबी (लॉक की)। पापा ने मेरे लिए कार्ड पर एक मैसेज लिखा, 'आशा है कि आपको अपने दिल की ख्वाहिशों को खोलने की चाबी मिल जाएगी। आप शायद नहीं जानते होंगे, लेकिन ताला भी आपके भीतर है और चाबी भी आपके भीतर है। वह बहुत कलात्मक था। मुझे याद है कि शुरुआत में मैं एक बार एक लड़की के जन्मदिन पर गया था और मैंने उसके पिता को उसका हाथ पकड़कर केक काटते देखा था। अचानक मेरी आंखों से आंसू छलक पड़े। मुझे अपने पिता की याद आई। अब मैं अपनी बेटियों को देखकर खुश हूं, मैं उनका जन्मदिन मनाता हूं। समय महान उपचारक है। पापा का शेड्यूल काफी व्यस्त था। उनकी पोस्टिंग हमेशा चुनौतीपूर्ण थी। वह खुद को ड्यूटी में झोंक

शहीद हेमंत करकरे की बेटी जुई ने उठाए सवाल...

देता था। मां को कई बार अकेले रहना पड़ा। जब मेरे भाई का जन्म हुआ तो पापा को तुरंत चंद्रपुर ज्वाइन करना पड़ा। पिता को इस बात की परवाह नहीं थी कि उनके बच्चे का जन्म हुआ है। उस समय मेरी बहन ने मेरी मां और भाई की देखभाल की। पापा हमेशा घर देर से आते थे, माँ टीचर थी। उसे भी सुबह जल्दी उठकर स्कूल जाना था। जीवन बहुत कठिन था, लेकिन वे संभाल लेते थे। फालतू के ख़र्च से पापा बहुत नाराज़ हो जाते थे। उदाहरण के लिए, यदि माँ महंगे कपड़े खरीदती थी, तो पिता को गुस्सा आता था कि यह केवल एक फिल्म स्टार के बच्चे को ही सूट करेगा। जब वे डीसीपी नारकोटिक्स थे, तो उन्होंने न केवल ड्रग्स पेडलर को पकड़ना जरूरी समझा बल्कि युवाओं को प्रेरित किया, आप इस धंधे में नहीं आते। वह यूनिफॉर्म में एनजीओ के साथ स्कूल जाता था। युवाओं से निजी तौर पर बात करते थे कि बच्चों का स्कूल आना जरूरी है। पापा ने नशा करने वालों को पुनर्वास केंद्र भी भेजा ताकि वे बाहर आकर अच्छा जीवन जी सकें। पापा को इंटीरियर डेकोरेशन का बहुत शौक था। पापा की विएना में डिप्लोमैटिक पोस्टिंग होने के कारण घर में लोगों का मनोरंजन करना बहुत जरूरी था। उसने कुछ राजस्थानी गुड़िया, राजरानी, शतरंज खरीदी, वे बहुत महंगी थीं, इसलिए माँ ने कहा कि यह बजट में नहीं है, लेकिन पिता ने सभी को वापस कर दिया। माता-पिता का एक-दूसरे पर नियंत्रण था। पापा हमेशा कहते थे कि तुम्हारे पास इतनी अच्छी किताबें हैं। तुम इतने अच्छे स्कूल में पढ़ते हो। मेरे ससुर एक किसान के बेटे हैं, जब वे गाय चराने का काम करते थे तो वहीं बैठकर यूपीएससी की तैयारी करते थे। सिविल सेवा परीक्षा छह-सात बार उत्तीर्ण की। वास्तविक दुनिया आपके पास जो है उससे बहुत अलग है। लोगों के पास वास्तविक दुनिया में कुछ भी नहीं है। पापा हमें हमेशा याद दिलाते थे कि इसे कभी भी हल्के में न लें कि आपके पास सब कुछ है। वह हमेशा आभारी रहता था। पापा चाहते थे कि मैं सिविल सेवा की परीक्षा दूं, लेकिन किसी कारणवश मैं उस लाइन में नहीं जा सका। मुझे लगता है कि मैं भाग्यशाली हूं कि मैं ऐसे माता-पिता के साथ हूं। बेशक मेरे जीवन में एक शून्य है। जैसे जब मेरी बेटी के दादा आते हैं तो दिन भर उनके साथ खेलते हैं, क्राफ्ट करते हैं। मेरे पति कहते हैं कि उनके पिता दादा बनकर पिघल गए हैं। जबकि वह खुद बचपन में उनसे बात करने से डरते थे। बहुत डर रहे थे मुझे याद आ रहा है कि जैसे नाना मेरे पापा होते तो मेरी बेटियों के साथ खेलते, वो कैसे पिघलते? पापा के बारे में मेरे सवाल ऐसे हैं कि अगर सवाल नहीं पूछे गए तो उनका जवाब नहीं दिया जाएगा। मुंबई हमले के दौरान आतंकियों के पास आधुनिक हथियार थे। पुलिसकर्मियों के पास जहां पुराने हथियार थे, वहीं उनसे भी लड़े। मुझे याद है कि सीएसटी स्टेशन पर एक अधिकारी ने अपनी कुर्सी को हिलाया ताकि आतंकवादी का ध्यान भटक सके, लेकिन उसकी राइफल फायरिंग तक नहीं कर रही थी। यह सब बदलना चाहिए। शायद चीजें भी बदल गई हैं। पापा कहते थे कि गुंजाइश इंसान में होती है, फील्ड में नहीं...कोई भी फील्ड चुनो। आप जो भी पढ़ें, मन लगाकर पढ़ें, जो भी करें, मन से करें। न्यू इंग्लैंड में पतझड़ का मौसम खूबसूरत होता है जब मैं इसे देखता हूं। पेड़ों पर हर साल नए पत्ते दिखाई देते हैं। परिवर्तन चक्र नियम है। जो आता है उसे जाना ही पड़ता है

फिट नहीं जिले के 600 से अधिक शिक्षकों व प्राचार्य सीएम राइज योजना में, देंगे लिखित परीक्षा

इंदौर से एक बड़ी खबर निकल कर सामने आ रही है जिसमे सरकारी स्कूलों में छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकार ने सीएम राइज योजना शुरू की है। योजना में इंदौर के छह और जिले के 11 सहित प्रदेश भर के 276 सरकारी स्कूलों को शामिल किया गया है। इन स्कूलों को निजी स्कूलों की तर्ज पर विकसित कर पूरी तरह से सुसज्जित किया जाएगा। प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों को अलग से तैनात किया जाएगा। शहर के छह स्कूलों में 15 साल से तैनात करीब 200 शिक्षक व प्रधानाध्यापक इस योजना में शामिल होने के लिए शिक्षकों की निर्धारित योग्यता पर खरे नहीं उतरे हैं। अब इन शिक्षकों और प्राचार्यों को अपनी उपयोगिता साबित करने के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार से गुजरना होगा। जिले के 11 स्कूलों के 14 प्रधानाध्यापकों का साक्षात्कार शनिवार को मोतीतबेला स्थित शासकीय मालव कन्या उमावी में होगा। वहीं, जिले के 600 से अधिक शिक्षकों की लिखित परीक्षा 28 नवंबर को सुबह और दोपहर दो सत्रों में होगी।

आयु सीमा में अपात्र ये है

प्राचार्य राजू मेहरा, सुनीता ठक्कर, मनमोहन तिवारी और सीमा श्रीवास्तव, जो आयु सीमा से अपात्र हैं, सेवानिवृत्ति में पांच वर्ष से कम होने के कारण पात्रता से बाहर हैं। अहिल्या आश्रम न। 1 में यदि वर्तमान में प्राचार्य का पद रिक्त है तो उसके लिए वहां नया प्राचार्य आएगा।

इंफ्रास्ट्रक्चर में भी परिवर्तन

योजना न सिर्फ शिक्षा की गुणवत्ता बल्कि स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी काम करेगी। निजी स्कूलों की तरह छात्रों को परिवहन के लिए बस आदि की सुविधा उपलब्ध कराने पर भी काम किया जाएगा।

स्कूल शिक्षा विभाग ने मौका दिया था

स्कूल शिक्षा विभाग ने दो महीने पहले सलाह दी थी कि यदि शिक्षक मौजूदा स्कूलों में काम करना जारी रखना चाहते हैं। तो आपको अनिवार्य रूप से सीएम राइज परीक्षा में शामिल होना होगा और इसे पास करना होगा। योजना में शहर के इन स्कूलों का चयन किया गया हायर सेकेंडरी स्कूल नंदनगर, श्री। मालव कन्या मोती तबेला, श्री। अहिल्या आश्रम न। 1 पोलोग्राउंड , श। अहिल्या आश्रम नंबर 2 महाराणा प्रताप नगर, श्री मल्हार आश्रम चिमनबाग, श्री। हायर सेकेंडरी स्कूल मुसाखेड़ी शामिल है। नई पोस्टिंग तक अपात्र शिक्षक उन्हीं विद्यालयों में पढ़ा सकेंगे अपात्र शिक्षक नए शिक्षकों की भर्ती होने तक उन्हीं विद्यालयों मे कार्य करते रहेंगे। परीक्षा के बाद नए साल में ही शिक्षकों की तैनाती कर दी जाएगी। केवल वे शिक्षक जिनकी सेवानिवृत्ति में 5 वर्ष या उससे अधिक शेष हैं, वे परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे। शहर के 6 स्कूलों में 35 से 61 साल की उम्र के 200 शिक्षकों को 15 साल के लिए तैनात किया गया है। इस आयु सीमा के नियम के तहत 25 से 30 शिक्षक अपात्र हो गए हैं।

तुलसी का पौधा

कैसे घर में आने वाली परेशानियों का संकेत दे सकता है...

अगर आपके घर में तुलसी का पौधा लगा है तो ये कई बार कुछ ऐसे संकेत देता है, जिससे भविष्य में आने वाली कुछ परेशानियों का संकेत मिलता है। अक्सर आपने ज्योतिष शास्त्र में सुना होगा कि यदि घर में कोई ऐसे संकेत दिखाई दें जो आपको रोज़ की गतिविधियों से अलग लगें तो ये किसी आने वाली घटना का संकेत भी हो सकते हैं। जैसे यदि बिल्ली रास्ता काटे तो उस रास्ते में न जाएं क्योंकि ये किसी अनहोनी का संकेत हो सकता है। ऐसे ही आपने सुना होगा कि घर के आस-पास कुत्ते का रोना भी कोई अशुभ संकेत ला सकता है। ऐसे ही कुछ पौधे हैं जो हमें आने वाली घटना के बारे में कुछ संकेत देते हैं। यदि अंधविश्वास की बात न भी करें तब भी ये पौधे हमें अपने आने वाले भविष्य के प्रति सजग करते हैं। ऐसे ही पौधों में से एक है तुलसी का पौधा। यह पौधा हिन्दू धर्म के सबसे पवित्र पौधों में से एक माना जाता है और ऐसा कहा जाता है कि पूजा पाठ भी इस पौधे के बिना संपन्न नहीं होते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपके घर में लगा हुआ तुलसी का पौधा आपके भविष्य में आने वाली कुछ परेशानियों का संकेत दे सकता है? जी हां, शास्त्रों में इस बात का जिक्र किया गया है कि घर में लगे हुए तुलसी के पौधे को देखकर आपके भविष्य की कुछ परेशानियों का पता लगाया जा सकता है।

आइए नई दिल्ली के जाने माने पंडित, एस्ट्रोलॉजी, कर्मकांड,पितृदोष और वास्तु विशेषज्ञ प्रशांत मिश्रा जी से जानें कि तुलसी के पौधे को देखकर कैसे किसी अनहोनी का पता लगाया जा सकता है और इससे बचने के उपाय क्या हैं। आजकल सभी के घर में तुलसी का पौधा जरूर होता है और इस पौधे की पूजा भी नियमित रूप से घरों में की जाती है। वैसे कई बार आपकी ठीक से देखभाल न करने, बहुत ज्यादा पानी देने या फिर ज्यादा ठंड के मौसम में तुलसी का पौधा सूखना एक आम बात हो सकती है। लेकिन यदि घर में मौजूद हरा -भरा पौधा अचानक से सूख जाए तो ये आपके घर में आने वाली किसी परेशानियों का संकेत भी हो सकता है। ये इस बात को दिखाता है भगवान विष्णु की कृपा घर पर नहीं है, क्योंकि तुलसी को विष्णु प्रिया माना जाता है। इसलिए ऐसा कोई भी संकेत मिलने पर आपको थोड़ा सतर्क होने की जरूरत है।

तुलसी का पौधा पितृ दोष का देता है संकेत

कई बार आपके घर में पितृ दोष होता है। ऐसे में आप जब भी घर में तुलसी का नया पौधा लगाती हैं वह एक या दो दिन में ही सूखकर झड़ने लगता है। ऐसे में आपको ये समझ लेना चाहिए कि पितृ दोष के कारण आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। पितृ दोष की वजह से घर में बार-बार लड़ाई झगडे होते हैं और कलह कलेश होती है। ऐसे में आपको बार-बार सूखने वाले तुलसी के पौधे को देखकर यह अंदाजा लगा लेना चाहिए कि परेशानियों का कारण पितृ दोष है और उसके निवारण के लिए काम करना चाहिए।

दूध और शहद के साथ करें चिया बीज का सेवन, इन बीमारियों का खतरा होगा कम

दूध और शहद के साथ करें चिया बीज का सेवन, इन 6 बीमारियों का खतरा हो जाएगा कमदैनिक जीवन में हम विभिन्न प्रकार के अनाज खाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। यह अनाज सस्ते होने के कारण हमें बड़ी आसानी से उपलब्ध भी हो जाते हैं। फिर भी बहुत लोगों को ऐसे खास अनाज के फायदों के बारे में पता नहीं होता है। ऐसे ही एक विशेष अनाज का नाम चिया बीज है जो आमतौर पर पूरे भारत में बड़े चाव से खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। सेहत से जुड़े फायदों को जानने के बाद अभी इसका सेवन करने से अपने आप को रोक नहीं पाएंगे। कहा जाता है कि दूध और शहद के साथ अगर चिया बीज के पाउडर का सेवन किया जाए तो सेहत से जुड़ी कई प्रकार की गंभीर बीमारियों को दूर करने के साथ-साथ यह आपको स्वस्थ बनाए रखने में भी काफी मदद करता है। आइए सेहत से जुड़े इसके बेहतरीन फायदों के बारे में जानते हैं।

हाई ब्लड प्रेशर को कम करे

हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को हाइपरटेंशन के नाम से भी जाना जाता है। यह विभिन्न प्रकार के हृदय रोग और स्ट्रोक का एक प्रमुख कारण भी है। इस मेडिकल कंडीशन से बचे रहने के लिए चिया बीज का सेवन काफी फायदेमंद होगा। चिया बीज में मैग्नीशियम नामक पोषक तत्व पाया जाता है। यह पोषक तत्व मुख्य रूप से ब्लड प्रेशर को संतुलित बनाए रखने और हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कम करने के लिए प्रभावी रूप से कार्य करता है। इसलिए चिया बीज का दूध और शहद के साथ किया गया सेवन हाई ब्लड प्रेशर की समस्या को कम करने में लाभदायक असर दिखा सकता है।

खून की कमी का जोखिम कम

खून की कमी से बचने के लिए हर कोई ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करता है जिसमें आयरन की भरपूर मात्रा हो। चिया बीज में भी आयरन की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है और इसके वैज्ञानिक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। इसलिए जिन लोगों को खून की समस्या से बचे रहना है उन्हें चिया बीज का सेवन जरूर करना चाहिए। आप चाहें तो इसे दूध के साथ उबालकर भी खा सकते हैं। पूरी दुनिया में हृदय रोग के कारण हर साल लाखों लोग की मौत होती है। भारत में भी यह आंकड़ा काफी डराने वाला है। अगर देखा जाए तो आपके जान पहचान में भी कई सारे ऐसे लोग होंगे जो दिल से जुड़ी विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे होंगे। हृदय रोग के खतरे को कम करने के लिए चिया बीज का सेवन काफी फायदेमंद साबित हो सकता है।

कोलेस्ट्रॉल लेवल संतुलित

कोलेस्ट्रॉल एक मोम जैसा पदार्थ होता है जो हमारे शरीर की सभी कोशिकाओं के अंदर पाया जाता है। इसमें जरा सी भी गड़बड़ी विभिन्न प्रकार के रोगों को जन्म दे सकती है। जबकि चिया बीज में ऐसे विशेष गुण पाए जाते हैं जो शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को संतुलित करने और खराब कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करने का विशेष प्रभाव रखते हैं। इसलिए कोलेस्ट्रॉल को संतुलित करने के लिए चिया बीज का सेवन एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है।

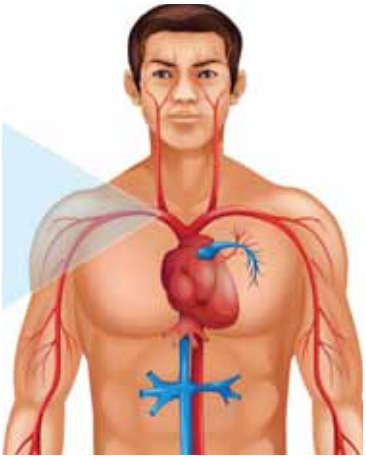

हड्डी रोगों से बचाए रखने में मदद

चिया बीज में कैल्शियम की भी मात्रा पाई जाती है जो विभिन्न प्रकार के हड्डी रोगों से आपको बचाए रखता है। इतना ही नहीं, गठिया और अर्थराइटिस जैसी गंभीर बीमारियों की चपेट में आने से बचे रहने के लिए भी कैल्शियम पोषक तत्व की पर्याप्त मात्रा में पूर्ति जरूर होनी चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए चिया बीज का सेवन करके आप अपने शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम की आपूर्ति कर सकते हैं और हड्डी से जुड़े हुए विभिन्न प्रकार के रोगों से भी बचे रह सकते हैं।

ऐतिहासिक और पवित्र दर्शनीय शहर

अयोध्या भारत के उत्तरप्रदेश राज्य का एक जिला है। यह सरयू नदी के पावन तट पर स्थित है। अयोध्या रेल या बस द्वारा जाया जा सकता है। यह लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, प्रयागराज और गोरखपुर जैसे महत्वपूर्ण शहर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। अयोध्या हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। अयोध्या को अवध और साकेत के नामों से भी जाना जाता है। अयोध्या का शाब्दिक अर्थ होता है जिसे युद्ध द्वारा जीता ना जा सके, और अवध का मतलब होता है जहां किसी का वध ना होता हो। अयोध्या को सिर्फ भगवान राम के जन्म स्थान के रूप में ही नहीं जाना जाता है, बल्कि हिन्दू धर्म के सात सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक के रूप में भी माना जाता है। रामायण काल में अयोध्या को कोसल राज्य की राजधानी के रूप में जाना जाता था। भगवान राम के पुत्र लव ने श्रीवस्ती नगरी बसाई थी जो बौद्ध काल में इस राज्य का एक प्रमुख शहर बन गया और साकेत के नाम से मशहूर हो गया। कालिदास ने तो अयोध्या और साकेत दोनों ही नामों का वर्णन किया है।

राम के जन्म स्थान को एक मंदिर के प्रतीक के रूप में वर्णित किया गया था, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह मुगल बादशाह बाबर के द्वारा ध्वस्त कर दिया गया था और इसके स्थान पर एक मस्जिद बनाई गई थी जो बाद में एक विवाद का कारण बनी थी। मुग़ल बादशाह बाबर ने 16 वीं शताब्दी के शुरुआत में बाबरी मस्जिद को ऐसी जगह पर बनवाया था जहां प्राचीन हिंदू मंदिर और राम जन्मभूमि का स्थान था। प्रारंभिक बौद्ध और जैन ग्रंथों में ऐसा उल्लेख है कि धार्मिक गुरु गौतम बुद्ध और महावीर इस शहर में आए थे और काफी समय तक यहां निवास किया था। जैन ग्रंथ इसे पांच तीर्थंकरों- ऋषभनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ के जन्मस्थान के रूप में भी मानते हैं।

भौगोलिक स्थिति

अयोध्या भारत के उत्तरप्रदेश राज्य का एक जिला है। यह सरयू नदी के पावन तट पर स्थित है। अयोध्या रेल या बस द्वारा जाया जा सकता है। यह लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, प्रयागराज और गोरखपुर जैसे महत्वपूर्ण शहर से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, यहाँ पर अभी

एयरपोर्ट नहीं है, लेकिन फैज़ाबाद तक हवाईजहाज से जाकर अयोध्या पंहुचा जा सकता है। वैसे लखनऊ एयरपोर्ट भी यहां से सिर्फ 150 किलोमीटर दूर है।

अयोध्या के मुख्य आकर्षण

राम जन्मभूमि हिंदू देवता भगवान राम की जन्म भूमि रही है। भारतीय महाकाव्य के अनुसार राम भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे। राम जन्मभूमि हिंदू भक्तों के लिए एक अत्यंत पूजनीय स्थल है। मार्च और अप्रैल के महीने में मनाया जाने वाला हिन्दुओं का एक प्रमुख त्यौहार, रामनवमी जो कि भगवान राम के जन्म दिवस का प्रतीक है, यहां इस जन्मभूमि स्थल पर हर साल बहुत ही हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है।

हनुमानगढ़ी

हनुमान गढ़ी एक मंदिर है जो साईं नगर में स्थित और हिंदू भगवान हनुमान को समर्पित है। एक किंवदंती के अनुसार हनुमान जी यहाँ एक गुफा में रहते थे और जन्मभूमि की रक्षा करते थे।

कनक भवन

कनक भवन राम जन्मभूमि के पूर्वोत्तर कोने की तरफ स्थित है जो तुलसी नगर इलाके में आता है। इस मंदिर को "सोने का घर" के नाम से भी जाना जाता है, जिसका निर्माण 1891 में किया गया था। कहा जाता है कि कनक भवन को राम की सौतेली माँ कैकेयी ने सीता और राम को शादी के उपहार के रूप में दिया था और इसमें केवल राम और सीता की ही मूर्तियाँ हैं।

देश के 7 प्रमुख स्थलों में से एक हरिद्वार

हवा में घुली पवित्रता, चारों ओर आरती और मंत्रों की आवाज़ और घाट-घाट पर गंगा का पानी... अगर आप भी कुछ ऐसा अनुभव करना चाहते हैं तो हरिद्वार जाने का प्लान ज़रुर बनाएं। हरिद्वार देश के सात प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। माना जाता है कि गंगा में डुबकी लगाने से सारे पाप धुल जाते हैं, यही कारण है कि दूर-दूर से लोग यहां आते हैं। यहां घूमने के लिए बहुत से मंदिर और ऋषि-मुनियों के आश्रम हैं। प्राचीन मान्यता के अनुसार ये उन चार जगहों में से एक है जहां समुद्र मंथन के दौरान अमृत की बूँदे गिरी थी इसीलिए यहां हर 12 साल में महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। हरिद्वार की गंगा आरती बहुत प्रसिद्ध है और दुनिया भर से लोग इस आरती में शामिल होते हैं। हरिद्वार से 25 किमी दूर ऋषिकेश भी है। प्राचीन समय में ऋषियों और मुनियों ने यहां पर ध्यान, योग और प्रार्थना किया था जिसकी वजह से इस जगह को पवित्र माना जाता है। ऋषिकेश में हिमालय की चोटियाँ बहुत ही खूबसूरत नज़र आती है। इसके साथ ही ऋषिकेश को देवभूमि का प्रवेश द्वार भी कहते हैं। ऋषिकेश को 'योग कैपिटल ऑफ़ द वर्ल्ड' के रुप में जाना जाता है। ऋषिकेश तीन जिलों से घिरा हुआ है टेहरी गढ़वाल, पौरी गढ़वाल और हरिद्वार। आज के इस लेख में हम आपको हरिद्वार और ऋषिकेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों के बारे में बताने जा रहे हैं। अगर आप अपनी रोज़ की भाग-दौड़ भरी ज़िन्दगी से दूर, कहीं सुकून पाना चाहते हैं तो हरिद्वार और ऋषिकेश की यात्रा का प्लान बना सकते हैं-

हरिद्वार में घूमने की जगहें

हर की पौड़ी

हर की पौड़ी हरिद्वार की प्रमुख जगहों में से एक है। हर की पौड़ी का अर्थ है - प्रभु के पैर। ऐसा माना जाता है कि यहां भगवान विष्णु प्रकट हुए थे और हरि की पौड़ी पर एक पत्थर पर भगवान के पदचिन्ह भी हैं। इस घाट से गंगा पहाड़ों को छोड़ मैदान की तरफ मुड़ती है। इस घाट पर श्रद्धालुओं की सबसे ज्यादा भीड़ होती है। प्रतिदिन गंगा आरती का आयोजन भी इसी घाट पर होता है।

सप्तऋषि आश्रम

यह आश्रम सात ऋषियों के नाम पर बनाया गया है। माना जाता है कि यहां सात ऋषि बैठकर पूजा करते थे इसलिए इसे सप्तऋषि कुंड भी कहा जाता है। इस आश्राम के परिषर में कई मंदिर भी बने हुए हैं।

वैष्णो माता मंदिर

इस मंदिर का निर्माण 10 साल पहले हुआ था लेकिन यह हरिद्वार के सबसे प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह मंदिर कटरा में बने वैष्णो माता के मंदिर का रेप्लिका है। इस मंदिर में भी वैष्णो देवी की तरह गुफाएं बनाई गई हैं।

भारत माता मंदिर

भारत माता मंदिर को मदर इंडिया मंदिर भी कहा जाता है। यह मंदिर भारत माता को समर्पित है और यह देश का इकलौता ऐसा मंदिर है जहाँ भारत माता की मूर्ती की पूजा होती है। इस मंदिर का निर्माण 1983 में स्वामी सत्यमित्रानंद द्वारा किया गया था और इसका उद्घाटन इंदिरा गाँधी ने किया था। यह मंदिर 108 फीट ऊंचा है और इसमें कुल 8 मंजिलें हैं। हर एक मंजिल में अलग अलग देवी-देवतों और स्वतंत्रता संग्रामियों की मूर्ती व फोटो हैं।

विष्णु घाट

हरिद्वार के सबसे प्रसिद्ध घाटों में से एक विष्णु घाट है। ऐसा माना जाता है की यहां भगवान विष्णु ने स्नान किया था और यहां स्नान करने से सभी पाप मिट जाते हैं, इसी वजह से यहां श्रद्धालुओं की बड़ी भीड़ देखने को मिलती है।

पारद शिवलिंग

हरिद्वार से 2 किलोमीटर दूर स्थित कनखल का पारद शिवलिंग हरिहर आश्रम बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ शुद्ध पारे से बने १५१ किलो के शिवलिंग की स्थापना की गई है। यहां हर साल लाखों भक्त आते हैं। यहाँ एक रूद्राक्ष का पेड़ भी है जो श्रद्धालुओं के बीच आकर्षण का केंद्र है।

मनसा देवी मंदिर

हरिद्वार से 3 किलोमीटर की दूरी पर बिलवा पर्वत पर स्थित यह मंदिर आस्था का एक प्रमुख स्थल है। मनसा देवी को पार्वती का ही एक रूप कहा गया है। माना जाता है कि मनसा देवी मंदिर में मांगी गई मन्नत ज़रूर पूरी होती है इसलिए दूर-दूर से श्रद्धालु यहां आते हैं। हरिद्वार से यहां तक चल कर आया जा सकता है या रोपवे के जरिए भी पहुंचा जा सकता है।

हेयर डाई मे प्रयुक्त हानिकारक रसायन और उनसे होने वाले साइड इफेक्ट्स

आज मनुष्य जिस रंग से बालों को काला करने के लिए प्रयोग कर रहा है, वह कैंसर और कई बीमारियों का कारण बन रहा है। मनुष्य को रोगग्रस्त कर रहे कुछ ऐसे खतरनाक रसायन हेयर डाई में होते हैं जो मनुष्य के लिए हानिकारक होते हैं।

1 **पी.पी.डी. (पैरा-फेनिलेनेडियम)**:-इसका उपयोग गहरे रंग प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह बिटुमेन से बनाया जाता है, एक पेट्रोलियम-दृश्यमान रसायन जिसमें बेंजीन, फिनोल, नेफ़थलीन, एनिलिन रसायन होते हैं। शोध से पता चला है कि हाइड्रोजन पेरोक्साइड के साथ पीपीडी बहुत जहरीले हो जाते हैं।

2 **हाइड्रोजन पैराक्साइड** :- इसका उपयोग बालों के प्राकृतिक रंग को हटाने के लिए किया जाता है।

3 **अमोनिया** :-इसका उपयोग बालों की बाहरी परत को खोलने के लिए किया जाता है ताकि डाई बालों के अंदर जा सके।

4 डीएमडीएम हाइडेंटोइनः यह कास्टिक जलन और फेफड़ों में जलन का कारण बनता है। यह एक संरक्षक है जो धीरे-धीरे जहरीले फॉर्मलाडेहाइड रसायनों को छोड़ता है। यह ऊतक को परेशान करता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है। इसका उपयोग कवक, खमीर और बैक्टीरिया को मारने के लिए किया जाता है।

5 **रेसोरिसिनॉल**ः यह अंतःस्रावी तंत्र को प्रभावित करने वाला एक एलर्जेन है।

6 **पैराबेंस** :-दो सबसे आम परबेन्स संरक्षक मिथाइलपरबेन्स और प्रोपाइलपरबेन्स हैं। यह गंभीर एलर्जी और त्वचा की जलन का कारण बनता है।

7 **लेड एसीटेट** :- उपयोग कलर एडिटिव के रूप में किया जाता है। जहरीला होता है। इसकी थोड़ी मात्रा भी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनती है।

8 **यूजीनलः-** यह जहरीली सुगंध कैंसर, एलर्जी, प्रतिरक्षा और तंत्रिका तंत्र के वायरस से जुड़ी है, और अधिक खतरनाक रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। इससे भी बालों की सेहत को हानि पहुंचती है।

कमजोर होती है आंखें और बढ़ जाता है मोतियाबिंद का खतरा

विटामिन सी यदि पर्याप्त मात्रा में लेते हैं तो यह मोतियाबिंद जैसी समस्या को दूर करने में भी मदद करता है। विटामिन सी हमारे शरीर में बहुत ही अति आवश्यक है इसमें एंटी ऑक्सीडेंट है जो कनेक्टिव टिशू को बेहतर बनाते हैं और जोड़ों को भी सपोर्ट देने का काम करते हैं अगर इसका नियमित सेवन किया जाए तो शरीर में इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करता है।

हेल्थ एक्सपर्ट बताते हैं कि विटामिन सी एक ऐसा तत्व है जो पानी में घुलनशील होता है यही कारण है कि विटामिन सी शरीर में स्टोर नहीं हो पाता, इसे शरीर में पर्याप्त मात्रा में बनाए रखने के लिए डाइट के फॉर्म में या सप्लीमेंट के रूप में ही लेना जरूरी होता है।विशेषज्ञों की मानें तो महिला में 75 mg पुरुष में 90 mg गर्भवती महिला में 35mg तथा ब्रेस्टफीडिंग में 120 mg का सेवन रोज करना जरूरी होता है। इसकी कमी से स्कर्वी नामक रोग,थकावट, दांतों का ढीलापन, कमजोर नाखून जोड़ों में दर्द तथा बालों का झड़ना जैसी समस्या का होती है। विटामिन सी खट्टे खाद्य पदार्थों में पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। आंवला,नींबू, संतरा, मौसंबी इसके प्रमुख स्रोत है विटामिन सी हमारे शरीर में इम्यून सिस्टम को भी बढ़ाता है कोरोना जैसी बीमारी को भी कंट्रोल करता है।

येह लेख पुरानी मान्यताओ पर केवल एक सुझव है इसे चिकित्सिय इलाज ना माने चिकित्सक का परामर्श आवश्यक है ।

4 हफ्तों तक रहता है टायफाइड...

टायफायड का बुखार करीब चार हफ्तों तक चलता है और इस बुखार का हर एक हफ्ता अपने खास लक्षण व जटिलता के लिए जाना जाता है। शुरुआत में इस बीमारी में आंतों में ही संक्रमण होता है। टायफायड यानी मियादी बुखार एक ऐसी बीमारी है जिससे रोगी एक लंबे और निश्चित समय तक पीड़ित रहता है। संसार में तीन करोड़ से भी ज्यादा लोग हर साल इसका शिकार होते हैं। यह रोग सालमोनेला टायफी नामक जीवाणु के संक्रमण से पैदा होता है। विकसित देशों में यह बीमारी बहुत कम होती जा रही है इसका कारण वहां पर उपलब्ध बेहतर जन-स्वास्थ्य की सुविधाएं हैं। इसके साथ ही वहां साफ सफाई और खानपान पर विशेष ध्यान दिया जाता है, लेकिन जनस्वास्थ्य सुविधाओं की सीमितता व अन्य कारणों की वजह से विकासशील देशों में आज भी यह बीमारी एक गंभीर रोग के रूप में मौजूद है।

टायफायड बुखार हर उम्र के बच्चों, युवाओं और बूढ़ों को होता है। परन्तु बच्चों में यह बुखार अधिक गंभीर, खतरनाक तथा समस्याएं उत्पन्न करने वाला साबित होता है। इसलिए टायफायड या मियादी बुखार बच्चों में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। टायफायड का बुखार करीब चार हफ्तों तक चलता है और इस बुखार का हर एक हफ्ता अपने खास लक्षण व जटिलता के लिए जाना जाता है। शुरुआत में इस बीमारी में रोगी की आंतों में ही संक्रमण होता है परन्तु रोग बढ़ने पर रोगी का प्रत्येक अंग इस जीवाणु के संक्रमण की गिरफ्त में आ जाता है। इसी वजह से टायफायड बुखार की जटिलताएं चिकित्सकों के लिए चुनौती बन जाती हैं। दशकों पुराना टायफायड या मियादी बुखार आज भी जनस्वास्थ्य के लिए खतरा बना हुआ है।

टायफायड का संक्रमण सालमोनेला टायफी नामक जीवाणु से फैलता है। यह जीवाणु रोगी से अन्य स्वस्थ बच्चों या बड़ों के संपर्क में आने पर मुंह के रास्ते आहार नलिका में प्रवेश करता है। वे लोग जो खान-पान के व्यवसाय से संबंध रखते हैं, टायफायड को फैलाने में अहम भूमिका अदा करते हैं।

सार्वजनिक स्थलों पर मलमूत्र त्यागने की गलत प्रथा से इस रोग को बढ़ावा मिलता है। गंदी जगह पर गलत ढंग से बनी खाने-पीने की चीजें खुले, कटे और सड़े गले फल, पीने का गंदा पानी, गंदी बर्फ व उससे जमी आइसक्रीम, गंदे दूध की वस्तुएं और गंदे तरीके से बनने वाले बेकरी के उत्पादों के कारण टायफायड रोग के जीवाणु स्वस्थ मनुष्य की आंतों में पहुंच जाते हैं और फिर लिंफ कोशिकाओं में लगातार अपनी संख्या को बढ़ाते हुए अपने शिकार की खून की नलिकाओं में संक्रमण उत्पन्न करते हैं।

खून की सहायता से टायफायड के जीवाणु शरीर के प्रत्येक अंग को संक्रमित कर देते हैं। विशेषकर छोटी आंत की आंतरिक संरचना को प्रभावित करके उसमें छोटे-छोटे जख्म पैदा कर देते हैं। ये खतरनाक बैक्टीरिया रोगी के मलमूत्र के रास्ते बाहर आ कर पूरे वातावरण में फैलते हैं और दूसरे स्वस्थ मनुष्यों को प्रभावित करते हैं। रोगी की आंतों में संक्रमण के पश्चात शरीर के प्रत्येक अंग में संक्रमण हो सकता है और मस्तिष्क ज्वर, ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, हृदय की मांसपेशियों में संक्रमण, हड्डियों में संक्रमण, पित्त की थैली का संक्रमण, गुर्दे में संक्रमण के साथ इसमें से किसी भी रोग की समस्या पैदा हो सकती है।

सही ढंग से रोगी को उपचार न मिलने को स्थिति में रोग काबू से बाहर होने लगता है। और अगर यह रोग एक बार काबू से बाहर हो जाए तो यह कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है। साधारण तौर पर ये समस्याएं रोगी के बुखार के 18-20 दिनों के बाद सामने आती हैं।

आंतों से रक्तस्राव की स्थित बिच्चों के लिए इस हद तक खतरनाक होती है कि उनकी जान को खतरा पैदा हो जाता है। रोग के संक्रमण की गंभीरता और शरीर की प्रतिरोधक क्षमता घट जाने की वजह से बेहोशी की अवस्था आ सकती है।

टायफायड के लक्षण सामने आते ही किसी अच्छे चिकित्सा विशेषज्ञ से इलाज आरंभ कर देना चाहिए। रोगी के खून व मलमूत्र की जांच करानी चाहिए। साथ ही ब्लड कल्चर तथा विडाल टेस्ट भी करना चाहिए। रोगी के आसपास व घर की सफाई का विशेष ख्याल रखना चाहिए। रोगी के कपड़ों, बिस्तर हाथ के नाखूनों आदि का भी ध्यान रखना चाहिए। टायफायड के बुखार में रोगी को कुछ विशेष प्रकार की दवाएं दी जाती हैं जिन्हें चिकित्सा विशेषज्ञ के संपर्क में रहकर उसकी सलाह से ही इस्तेमाल करना चाहिए जैसे, क्लोरेथ फेनिकाल, एमाक्सीसिलीन, कोट्राइमाक्साजोल, सेफट्राक्सोन, पेफ्लाक्सासीन, औफ्लाक्सासीन, एमाक्सीसिलीन, पेफलाक्सासीन, फ्यूरा-जालीडीन आदि दवाइयां।

मौसम में बदलाव... सर्दी-जुकाम और बुखार से बचने के लिए रखें ध्यान

मौसम में बदलाव के कारण हमारा इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है जिससे इंफेक्शन होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में सर्दी-जुकाम, खांसी, गले में खराश और बुखार जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। बदलते मौसम में बीमार होने से बचने के लिए हमें अपने खान-पान और रहन-सहन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है।

इन दिनों मौसम तेजी से करवट ले रहा है। भले ही आप दिन में पँखे या एसी के नीचे रहते हों और आपको गर्मी लगती हो लेकिन शाम होते ही ठंड बढ़ने लगी है। ऐसे में आपको अपनी सेहत के प्रति ज्यादा सचेत रहने की जरूरत है क्योंकि बदलते मौसम में जरा सी लापरवाही से आप बीमार पड़ सकते हैं। मौसम में बदलाव के कारण हमारा इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है जिससे इंफेक्शन होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में सर्दी-जुकाम, खांसी, गले में खराश और बुखार जैसी समस्याएँ हो सकती हैं। बदलते मौसम में बीमार होने से बचने के लिए हमें अपने खान-पान और रहन-सहन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। आज के इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी टिप्स बताने जा रहे हैं जिन्हें अपनाकर आप बदलते मौसम में बीमार होने से बच सकते हैं-

ठंडे पदार्थों से करें परहेज

बदलते मौसम में ठंडे पदार्थों का सेवन सर्दी-जुखाम और वायरल बुखार का कारण बन सकता है। ठंडे पदार्थ जैसे फ्रिज का ठंडा पानी, आइसक्रीम और कोल्ड ड्रिंक का सेवन ना करें, इससे गाला खराब हो सकता है। इसके साथ ही बदलते मौसम में तली-भुनी चीजें और बाजार की खाने वाली वस्तुएं जैसे पिज्जा, चाट आदि नहीं खाने चाहिए।

खान-पान पर रखें ख्याल

बदलते मौसम में बीमार होने से बचने के लिए पौष्टिक आहार लें और पर्याप्त मात्रा में पानी पिएँ।अपनी डाइट में मौसमी फलों और सब्जियों को शामिल करें। विटामिन सी युक्त फल जैसे संतरा, नींबू, पपीता आदि खाएँ, ये सभी फल शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ातें हैं।

पर्याप्त कपड़े पहनें

बदलते मौसम में दिन में हल्की गर्मी रहती है लेकिन शाम होते ही मौसम ठंडा हो जाता है। ऐसे में हम मौसम के बदलाव पर ज्यादा ध्यान नहीं देते और पर्याप्त कपड़े नहीं पहनते जिसकी वजह से हम अक्सर सर्दी-खांसी और बुखार की चपेट में आ जाते हैं।

च्यवनप्राश भी है फायदेमंद

आपकी माँ ने भी आपको बचपन में सर्दी-खाँसी से बचाने के च्यवनप्राश जरूर खिलाया होगा। दरअसल, च्यवनप्राश में कई तरह की औषधीय जड़ी-बूटियाँ मौजूद होती हैं इसलिए च्यवनप्राश का सेवन हमारी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। च्यवनप्राश में मौजूद जड़ी-बूटियों से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और सर्दी-जुकाम से भी बचाव होगा।

सर्दी और खांसी है तो...

अगर आप बदलते मौसम में सर्दी-खांसी और जुकाम की समस्या से परेशान हैं भाप लेना बेहद सरल और कारगर घरेलु नुस्खा है। भाप लेने से आपको सीने में जकड़न की समस्या में तुरंत आराम मिलेगा और बंद नाक भी खुलेगी। आप चाहें तो सादे पानी को उबाल कर भाप ले सकते हैं या फिर पानी में पुदीने और तुलसी की पत्तियां उबालकर भी भाप ले सकते हैं।

हल्दी वाले दूध से होगा फायदा

आयुर्वेद में हल्दी को औषधीय गुणों का खजाना माना गया है। वहीं, दूध में भी प्रोटीन, कैल्शियम और विटामिन जैसे कई तरह के पोषक तत्व मौजूद होते हैं। दूध में हल्दी मिलाकर पीने से स्वास्थ्य को बहुत लाभ होता है। दरअसल, हल्दी में एंटीबायोटिक गुण मौजूद होते हैं जिससे इंफेक्शन से बचाव होता है। नियमित रूप से रात में सोने से पहले एक गिलास गुनगुने दूध में थोड़ी सी हल्दी मिलाकर पिएँ, इससे आपको सर्दी-खांसी और वायरल फ्लू जैसी बीमारियाँ छू भी नहीं पाएंगी।

आवाज़ों से होती है चिड़चिड़ाहट और बेचैनी तो हो सकती है ये बीमारी...

क्या आप आवाज़ों को सुनकर अपना आपा खो बैठते हैं और आपको कहीं एकांत में चले जाने का मन करता है? अगर हाँ, तो आप मिसोफोनिया नामक बीमारी से ग्रस्त है। मेडिकल टर्म में मिसोफोनिया एक तंत्रिका तंत्र का मनोविकार है। इस बीमारी में किसी विशेष प्रकार की आवाज के कारण व्यक्ति को गुस्सा और घबराहट हो सकती है।

क्या आपको किसी के सांस लेने, चबाने या डकार लेने की आवाज से चिढ़ होती है? क्या आप ऐसी आवाज़ों को सुनकर अपना आपा खो बैठते हैं और आपको कहीं एकांत में चले जाने का मन करता है? अगर हाँ, तो आप मिसोफोनिया नामक बीमारी से ग्रस्त है। मेडिकल टर्म में मिसोफोनिया एक तंत्रिका तंत्र का मनोविकार है। इस बीमारी में किसी विशेष प्रकार की आवाज के कारण व्यक्ति को गुस्सा और घबराहट हो सकती है।

क्या है मीजोफोनिया- डॉक्टर्स के मुताबिक, मीजोफोनिया एक साउंड डिसऑर्डर है। इस बीमारी में मरीज किसी खास तरह की आवाज से परेशान हो उठता है। ऐसे में व्यक्ति को किसी के सांस लेने की आवाज, खाना खाने की आवाज, घड़ी की सुई की आवाज, किसी के कुछ निगलने की आवाज या कुछ चाटने की आवाज से तकलीफ होने लगती है। इन आवाजों के कारण मिसोफोनिया से ग्रस्त व्यक्ति को तनाव, गुस्सा या चिड़चिड़ाहट होने लगती है। इन आवाज़ों के कारण व्यक्ति का स्वभाव आक्रामक हो जाता है। ऐसे में मिसोफोनिया से ग्रस्त व्यक्ति को गुस्सा या चिड़चिड़ाहट होने लगती है और व्यक्ति हिंसक हो जाता है।

कैसी होती है मरीज की स्थिति- जिस आवाज से व्यक्ति को समस्या होती है, उसके संपर्क में आते ही व्यक्ति का स्वभाव काफी अलग तरह का हो जाता है। उसकी सांसें तेज हो जाती हैं, चेहरा गुस्से से लाल हो जाता है और वह अपने हाथ-पैर सिकोड़ने लगता है। कई बार व्यक्ति के शरीर में कंपन शुरू हो जाता है और वह इन आवाजों से दूर भागने की कोशिश करने लगता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति उस आवाज से काफी दूर अकेले में चला जाता है और घंटों एकांत में बैठा रहता है। कई बार व्यक्ति उन आवाजों से परेशान होकर आक्रामक हो जाता है और आवाज करने वाले व्यक्ति को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करने लगता है।

इलाज- इस बीमारी का इलाज बिहेवियरल थेरेपी से किया जाता है। इसमें कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी और टिन्नीटस मिसोफोनिया से मरीज का इलाज किया जाता है।

वेट लॉस करने से पहले जान लें इसके पीछे का साइंस

गर आप अपने वजन को कम करना चाहते हैं तो सबसे पहला और जरूरी नियम है कि आप अपने मेटाबॉलिक रेट पर काम करें। अगर आप मेटाबॉलिज्म बेहतर तरीके से काम करेगा तो ऐसे में आपके द्वारा खाया गया खाना जल्दी टूटकर एनर्जी में बदलेगा। आज के समय में अधिकतर लोग अपने बढ़ते वजन के कारण परेशान रहते हैं और वजन कम के लिए ना जाने कितनी जद्दोजहद करते हैं। जरूरत से ज्यादा एक्सरसाइज से लेकर सख्त डाइटिंग तक के नियम को फॉलो करते हैं। इससे उनका वजन कम भी हो जाता है, लेकिन जब वह अपने पुराने लाइफस्टाइल पर लौटते हैं तो फिर से उनका वजन तेजी से बढ़ना शुरू हो जाता है। ऐसे में उनका परेशान होना लाजमी है। अगर आपके साथ भी ऐसा ही कुछ होता है तो सबसे जरूरी है कि आप आंख मूंदकर कुछ भी फॉलो करने से पहले वेट लॉस के पीछे के साइंस को समझें। अगर आप अपने वजन को कम करना चाहते हैं तो सबसे पहला और जरूरी नियम है कि आप अपने मेटाबॉलिक रेट पर काम करें। अगर आप मेटाबॉलिज्म बेहतर तरीके से काम करेगा तो ऐसे में आपके

द्वारा खाया गया खाना जल्दी टूटकर एनर्जी में बदलेगा। वहीं, स्लो मेटाबॉलिज्म होने पर भोजन एनर्जी में नहीं बदल पाता और फिर वह बॉडी में फैट के रूप में स्टोर होने लगता है। इसलिए मेटाबॉलिज्म को बूस्ट अप करने के लिए आप खुद को फिजिकली एक्टिव रखें और अपने खान-पान पर विशेष रूप से फोकस करें।

रोज़-रोज़ का सिरदर्द कर रहा है परेशान तो करें ये योगासन...

आजकल की भागदौड़ भरी और तनावपूर्ण जीवनशैली में सिरदर्द की समस्या बहुत आम है। सिरदर्द कई कारणों से हो सकता है जैसे नींद पूरी ना होना, अत्यधिक तनाव, थकान और ज्यादा देर तक भूखा रहना। कई लोग सिरदर्द के लिए दवाइयों और पेनकिलर्स का सहारा लेते हैं लेकिन अगर आपको हर दूसरे दिन सिरदर्द होता है तो ज्यादा पेनकिलर खाना आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। ऐसे में रोजाना कुछ देर योग करने से आपको सिरदर्द से छुटकारा मिल सकता है।

बालासन

इस आसान को करने के लिए सबसे पहले ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ जाएं। ध्यान रखें कि आपके घुटने आपस में सटे हुए और पैर नितम्बों के ऊपर टिके हुए हों। अब शरीर को आगे की ओर झुकाते हुए, धीरे-धीरे सिर ज़मीन से लगाएं। अब दोनों हाथों को सिर से लगाते हुए आगे की ओर सीधा रखें और हथेलियों को ज़मीन से लगाएं। इस अवस्था में कम से कम 30 सेकेंड तक रहें। इस आसान को 4-5 बार दोहराएँ।

शवासन

ज़मीन पर पीठ के बल लेट जाएं। दोनों पैरों के बीच में थोड़ी दूरी रखें और हाथों को बगल में सीधा रखें। हथेलियों को ऊपर की ओर रखें और शरीर को ढ़ीला छोड़ दें। आंखों को बंद कर लें। सांस को सामान्य ही रखें और अपना पूरा ध्यान अब अपनी सांसों पर केंद्रित करें।

सेतुबंधासन

इस आसान को करने के लिए ज़मीन पर पीठ के बल लेट जाएं। हाथ को शरीर से सटा कर और हथेलियों को ज़मीन से लगा कर रखें। फिर धीरे-धीरे नितंबों, कमर और पीठ के सबसे ऊपरी हिस्से को ऊपर उठाएं। इस अवस्था में 3 से 5 मिनट तक रहें। सांस छोड़ते हुए आसन से बाहर आ जाएं।

पश्चिमोत्तानासन

इस आसन को करने के लिए सबसे पहले ज़मीन पर सीधा बैठ जाएं और दोनों पैरों को फैलाकर एक-दूसरे से सटाकर रखें। अब दोनों हाथों को ऊपर की ओर उठाएं। इस दौरान आपकी कमर बिल्कुल सीधी रहनी चाहिए। अब झुककर दोनों हाथों से अपने पैरों के दोनों अंगूठे पकड़ें। ध्यान रखें कि इस दौरान आपके घुटने मुड़ने नहीं चाहिए और पैर भी जमीन से सटे हुए होने चाहिए।

मकरासन

इस आसन को करने के लिए सबसे पहले पेट के बल लेट जाएं। अब अपने सिर और कंधों को ऊपर उठाएं और हथेलियों को जमीन पर टिका लें। इसके बाद रीढ़ की हड्डी में अधिक मोड़ लाने के लिए कोहनियों को एक साथ रखें। ध्यान दें कि अगर आपकी गर्दन पर ज्यादा दबाव हो तो कोहनियों को थोड़ा अलग कर लें।

ब्लड,शुगर लेवल कंट्रोल करने का उपाय है सहजन की पत्तियां

सरजन की पत्तियां में एंटी ऑक्सीडेंट और बायोएक्टिव तत्व होते हैं जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद करते हैं डायबिटीज एक ऐसी बीमारी है जिससे सिर्फ कंट्रोल किया जा सकता है इसलिए अगर ब्लड शुगर की समस्या का सामना कर रहा है तो आपको पूरी जिंदगी सतर्क रहने की आवश्यकता होती है।डायबिटीज को कंट्रोल करने के लिए आपको अपने खान-पान और लाइफस्टाइल का विशेष ध्यान रखने की जरूरत होती है ।लंबे समय तक भूखे नहीं रहना स्टार्च वाले फूड के साथ मीठी चीजों से दूरी बनानी होगी। अगर आपने जरा सी भी लापरवाही बरती,तो शुगर लेवल बढ़ सकता है इसलिए खानपान के साथ कुछ घरेलू उपाय भी अपना

सकते हैं ब्लड,शुगर को कंट्रोल करने के लिए कई तरीकों को अपनाते हैं ।ऐसे में आप चाहे तो सहजन

की पत्ती का सेवन कर सकते हैं सहजन को मोरिंगा की पत्ती के के नाम से भी जानते हैं सर जने की पत्तियां एनर्जी बढ़ाने के साथ-साथ ब्लड शुगर लेवल को नियंत्रित बनाए रखने की क्षमता के लिए जानी जाती है सहजन की पत्तियों में पोषक तत्व होते हैं जो शरीर में इंसुलिन के स्राव को बढ़ाते हैं इसके साथ ही एंटी इन्फ्लेमेटरी और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर होते हैं।

येह लेख पुरानी मान्यताओ पर केवल एक सुझव है इसे चिकित्सिय इलाज़ ना माने चिकित्सक का परामर्श आवश्यक है

सर्दियों में रोजाना क्यों पीना चाहिए गाजर का ज्यूस, जानिए फायदे

दिल को सेहतमंद रखने के अलावा, गाजर का ज्यूस ब्लड प्रेशर को कम करने में मदद करता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि गाजर के ज्यूस में मौजूद पोषक तत्व जिनमें फाइबर, पोटैशियम, नाइट्रेट्स और विटामिन सी, ब्लड प्रेशर को कम करने वाले तत्व होते हैं। सर्दियों में अपनी वर्कआउट ड्रिंक्स को लेकर लोग काफी कंफ्यूज रहते हैं, लेकिन क्या आपने कभी गाजर का ज्यूस ट्राई किया है? क्या आप जानते हैं कि गाजर का ज्यूस आपकी सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। गाजर के ज्यूस के सेहत संबंधी अनेक लाभ हैं, साथ ही यह आपके सौंदर्य के लिए भी फायदेमंद है। खाने में गाजर को शामिल करने से न सिर्फ आपकी आंखों की रोशनी तेज होगी, बल्कि आपका दिल भी सेहतमंद रहेगा। अगर आपका बाकी का खानपान भी ठीक रहेगा तो गाजर शामिल करने से आपका वज़न भी जल्दी घटेगा। बता दें कि गाजर में फैट न के बराबर होता है, लेकिन पौष्टिकता भरपूर मात्रा में होता है, जैसे- सोडयम, पोटाशियम, कार्बोहाइड्रेड, प्रोटीन, विटामिन ए, डी, सी, बी6 आदि होते हैं। इन पौष्टिकताओं के कारण गाजर को आधासीसी, कान का दर्द, मुंह का बदबू,पेट दर्द जैसे बीमारियों के लिए गाजर के जड़, फल और बीज का इस्तेमाल औषधि के लिए किया जाता है।

ऐसे बनाएं गाजर का ज्यूस

- दो कप पानी,दो गाजर,
- एक चम्मच अदरक बारीक कटी।
- एक बड़ा चम्मच नींबू का रस।
- एक छोटा चम्मच काला नमक (चाहें तो),स्वादानुसार नमक,
- एक चम्मच भुना जीरा पाउडर (चाहें तो)सबसे पहले गाजर को छील लें। इसके बाद अच्छी तरह धोकर उसे काट लें।
- अब एक मिक्सर जार में गाजर के टुकड़े, अदरक, पानी, नींबू का रस, भुना जीरा पाउडर, काला नमक और नमक मिलायें। सारी चीजों को ग्राइंडर में अच्छी तरह पीस कर ज्यूस बना लें।

ज्यूस पीने की सही समय

खाली पेट गाजर का ज्यूस पी सकते हैं, लेकिन कई लोगों को सुबह ज्यूस पीने से परेशानी होती है। ऐसे में सबसे सेफ तरीका यह है कि गाजर का ज्यूस दिन में किसी भी समय पी सकते हैं।

गाजर का ज्यूस पीने के फायदे

गाजर का ज्यूस पीने से चेहरे पर चमक आती है। इसके सेवन से कील-मुहासों से भी छुटकारा मिलता है। गाजर का ज्यूस पीने से शरीर में हिमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ जाती है।गाजर में अधिक मात्रा में फाइबर पाया जाता हैं, जो शरीर की पाचनशक्ति को बढ़ाता हैं। आंखों की रोशनी के लिए फायदेमंद होता है। गाजर में कैरोटीनायड होता है, जो हृदय रोगियों के लिए अच्छा होता है।गाजर का प्रतिदिन सेवन कालेस्ट्राल के स्तर को कम करता है।एंटी ऑक्सीडेंट्स से भरपूर।

गाजर के रस में मिश्री व काली मिर्च मिलाकर पीने से खाँसी ठीक हो जाती है।इम्यूनिटी बढ़ाने में रामबाण है।स्किन को हेल्दी रखने में मददगार साबित होता है। इसे खाने से मसूड़ों से ब्लड आना बंद हो जाता है और दांतों की चमक बढ़ती है।ब्लड शुगर लेवल को और ब्लड प्रेशर को भी रखता है नियंत्रित।लीवर को हमेशा हेल्दी रखता है प्रेग्नेंसी में भी फायदेमंद के साथ साथ,कैंसर के खिलाफ सुरक्षा। मेटाबॉलिज्म सुधरता है। गाजर खाने से पेट और फेफड़ों के कैंसर का जोखिम कम हो जाता है। गाजर के प्रतिदिन सेवन से रक्त में शर्करा का स्तर ठीक रहता है।

भगवान श्रीकृष्ण के साथ गाय और बछड़ों की पूजा करने की परंपरा

कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी को गोपाष्टमी पर्व मनाया जाता है। इस बार पंचाग में तिथि भेद होने की वजह से ये पर्व देश में कुछ जगहों पर 11 और कहीं 12 नवंबर को मनाया जाएगा। ये भगवान कृष्ण और गोपियों से जुड़ा त्योहार है। जो मथुरा, वृंदावन ब्रज और अन्य जगहों पर खासतौर से मनाया जाता है। मान्यता है कार्तिक महीने की प्रतिपदा तिथि को श्रीकृष्ण ने ब्रज वालों की रक्षा के लिए गोवर्धन पर्वत उठाया था। इसके बाद आठवें दिन यानी अष्टमी तिथि को इंद्र ने श्रीकृष्ण से माफी मांगी थी और कामधेनु ने अपने दुध से भगवान का अभिषेक किया था। इसलिए गोपाष्टमी पर गायों और बछड़ों को सजाया जाता है। उनकी पूजा होती है।

यह है मान्यता

एक कथा के मुताबिक इस दिन से ही श्रीकृष्ण ने गाय चरानी शुरू की थी। माता यशोदा प्रेम के कारण श्रीकृष्ण कभी गाय चराने नहीं जाने देती थीं, लेकिन एक दिन कृष्ण ने गाय चराने की जिद की। तब मां यशोदा जी ऋषि शांडिल्य से मुहूर्त निकलवाया और पूजन के लिए श्रीकृष्ण को गाय चराने भेजा। पुराणों में बताया गया है कि गाय में सभी देवी-देवताओं का वास होता है। इसलिए गाय की पूजा से सभी देवी-देवता प्रसन्न होते हैं।

भविष्य पुराण में महिमा

भविष्य पुराण के अनुसार गाय को माता यानी लक्ष्मी का स्वरूप माना गया है। गौमाता के पृष्ठदेश में ब्रह्म का वास है, गले में विष्णु का, मुख में रुद्र का, मध्य में समस्त देवताओं और रोमकूपों में महर्षिगण, पूंछ में अनंत नाग, खूरों में समस्त पर्वत, गौमूत्र में गंगादि नदियां, गौमय में लक्ष्मी और नेत्रों में सूर्य-चन्द्र विराजित हैं।

गोपाष्टमी की परंपराएं

गाय और बछड़े को सुबह नहलाकर तैयार किया जाता है। उसका श्रृंगार किया जाता हैं, पैरों में घुंघरू बांधे जाते हैं, अन्य आभूषण पहनाएं जाते हैं। गौ माता के सींगो पर चुनड़ी का पट्टा बाधा जाता है। सुबह जल्दी उठकर स्नान करके गाय के चरण स्पर्श किए जाते हैं। गाय की परिक्रमा की जाती हैं। इसके बाद उन्हें चराने बाहर ले जाते है। इस दिन ग्वालों को भी दान दिया जाता हैं। कई लोग ग्वालों को नए कपड़े देकर तिलक लगाते हैं। शाम को जब गाय घर लौटती है, तब फिर उनकी पूजा की जाती है, उन्हें अच्छा भोजन दिया जाता है। खासतौर पर इस दिन गाय को हरा चारा, हरा मटर एवं गुड़ खिलाया जाता हैं। जिनके घरों में गाय नहीं होती है वे लोग गौ शाला जाकर गाय की पूजा करते है, उन्हें गंगा जल, फूल चढाते है, दीपकल लगाकर गुड़ खिलाते है।

शांत मन संसार का सबसे शक्तिशाली हथियार है

वह रात को झोपड़ी में एक छोटा सा दीया जलाकर शास्त्र पढ़ रहा था। आधी रात बीत गई। थकान के साथ जब नींद आने लगी तो उसने फूंक मार कर दीया बुझा दिया। वह यह देख कर हैरान हो गया कि दीया बुझते ही झोपड़ी में चांदनी बिखर गई। सोच में पड़ गया कि यह चांदनी अब तक उसे क्यों नहीं दिखाई दी? क्या एक छोटे से दीए ने इतने बड़े चांद को बाहर रोक रखा था?

इस प्रश्न का जवाब झोपड़ी के साथ उसके मन को भी आलोकित कर गया। सोचने लगा कि मैंने तो अपने मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के एक नहीं, अनेक छोटे-छोटे दीए जला रखे हैं। शायद इसी कारण परमात्मा रूपी चांद का आलोक मेरे मन-मंदिर के बाहर ही खड़ा रह जाता है। मेरे मन के ये दीए दिखते तो जरा-जरा से हैं, लेकिन इनकी लौ से सब कुछ राख हो जाता है। कामनाएं सुख, चैन सब छिन जाते हैं। क्रोध जघन्य अपराध का जनक है। अहंकार का ही परिणाम संबंधों में विघटन, वर्ग संघर्ष, अमीरी-गरीबी भेदभाव हैं। मायावी का व्यवहार सरल और सहज नहीं होता और लोभ तो अनर्थों का मूल और हिंसा जैसे दोषों की खान है।

यह राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह जैसा विकार जीव का बंधन है। विवेक से इसे तोड़ना जीव का ही काम है। इस काम में सहयोगी होता है मन, जिसे वश में करना है। वास्तव में मानव मन में विषयों की आसक्ति है। मानव के जीवन का अंतिम लक्ष्य अंत में उस परमेश्वर की प्राप्ति ही है, लेकिन परमेश्वर कोई ऐसा फल नहीं है जिसे कोई भी तोड़कर किसी के मुख में डाल दे। इनमें से कोई न कोई विकार हमें प्रभु के रास्ते से भटका ही देता है। गले की प्यास पानी के हर घूंट पर कम होती जाती है, जबकि मन की प्यास प्रत्येक सामग्री की उपलब्धि पर बढ़ती जाती है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है, एक प्रखर, नियंत्रित और शांत मन संसार का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है, जिसके सामने संपूर्ण ब्रह्मांड नतमस्तक है।

उस व्यक्ति ने तो थकान और नींद के कारण दिया बुझाया। लेकिन हमें नींद से जाग कर चैतन्य होकर विकारों के इन छोटे-छोटे दीयों को बुझाने होंगे, ताकि परमेश्वर रूपी पूर्णचंद्र की आभा का हमारे हृदय में प्रवेश हो।

भात पूजा... कैसे की जाती है, क्या मिलते हैं लाभ

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से लग्न में (प्रथम), चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं। मांगलिक कुंडली वालों को विवाह के पूर्व भात पूजा करने की सलाह दी जाती है। आओ जानते हैं कि क्या होती है भात पूजा।

1. **भात पूजा** : भात अर्थात चावल। चावल से शिवलिंगरूपी मंगलदेव की पूजा की जाती है। जो मांगलिक हैं उन्हें विवाह पूर्व भात पूजा अवश्य करना चाहिए।

2. कैसे करते हैं भात पूजा : इस पूजा में सर्वप्रथम गणेशजी और माता पार्वतीजी का पूजना होता है। इसके बाद नवग्रह पूजन होता है फिर कलश पूजन एवं शिवलिंग रूप भगवान का पंचामृत पूजन एवं अभिषेक वैदिक मंत्रोचार दवरा किया जाता है। इसके बाद भगवान को भात अर्पित करने के उनका पूजकर किया जाता है। विधिवत रूप से भात पूजन, अभिषे और मंगल जाप के बाद फिर आरती उतारी जाती है।

3. कहां करते हैं भात पूजन : भात पूजन मंगल दोष निवारण हेतु किया जाता है। मंगलदेव की उत्पत्ति धरती माता से हुई थी। मंगलदेव का जन्म मध्यप्रदेश के अवंतिका अर्थात उज्जैन में हुआ था। जहां उनका जन्म हुआ था उसे मंगलनाथ स्थान कहते हैं। इस स्थान पर विश्व का एकमात्र मंगल ग्रह का मंदिर है। कहते हैं कि इस स्थान नर ही मंगल ग्रह की सीधी किरने धरती पर आती है। इसी स्थान से कर्क रेखा गुजरती है। कर्क रेखा से ये किरणें मंगल ग्रह के प्रतीक स्वयंभू शिवलिंग पर पड़ती है।

4. क्या है भात पूजन की कथाः कहते हैं कि अंधकासुर नामक दैत्य ने शिवजी की कठोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न कर लिया था। शिवजी ने उसे वरदान दिया कि उसके रक्त से सैंकड़ों दैत्य जन्म लेंगे। इस वरदान के बाद अंधकासुर ने उज्जैन नगरी में तबाही मचा दी। सभी ऋषि और मुनियों सहित अन्य लोगों का वध करना शुरु कर दिया। बाद में सभी ने शिवजी से प्रार्थना की तो शिवजी ने अंधकासुर से युद्ध किया। युद्ध के दौरान शिवजी का पसीना बहने लगा। शिवजी के पसीने की बूंद की गर्मी से उज्जैन की धरती फटकर दो भागों में विभक्त हो गई और मंगल ग्रह का जन्म हुआ। शिवजी ने दैत्य का संहार किया और उसकी रक्त की बूंदों को नव उत्पन्न मंगल ग्रह ने अपने अंदर समा लिया। कहते हैं इसलिए ही मंगल की धरती लाल रंग की है। जब मंगल उग्र अंगारक स्वभाव के हो गए तब सभी देवताओं सहित सभी ऋषिमुनियों सर्वप्रथम मंगल की उग्रता की शांति के लिए दही और भात का लेपन किया, दही और भात दोनों ही पदार्थ ठंडे होते हैं जिसके कारण मंगलदेव की उग्रता शांत हो गई। इसी कारण जिन जातकों की कुंडली में मंगल ग्रह अतिउग्र होता है उनको मंगल भात पूजा की सलाह दी जाती है।

क्या मिलते हैं लाभ

1. मंगलदोष निवारण के लिए विवाह पूर्व भात पूजा के अलावा पीपल विवाह, कुंभ विवाह, सालिगराम विवाह आदि के उपाय भी बताए जाते हैं। इन उपायों से वैधव्य योग समाप्त हो जाता है।

2. मंगल यंत्र पूजन का भी एक उपाय है परंतु यह विशेष परिस्थिति में किया जाता है। देरी से विवाह, संतान उत्पन्न की समस्या, तलाक, दाम्पत्य सुख में कमी एवं कोर्ट केस इत्यादि के समय ही मंगल यंत्र पूजन का विधान है। भात पूजा के समय भी यह कार्य किया जा सकता है। इससे दाम्पत्य जीवन में सुख की प्राप्ति होती है और संतान सुख मिलता है।

3. गोलिया मंगल 'पगड़ी मंगल' तथा चुनड़ी मंगल : जिस जातक की जन्म कुंडली में 1, 4, 7, 8, 12वें भाव में कहीं पर भी मंगल स्थित हो उसके साथ शनि, सूर्य, राहु पाप ग्रह बैठे हो तो व पुरुष गोलिया मंगल, स्त्री जातक चुनड़ी मंगल हो जाती है अर्थात द्विगुणी मंगली इसी को माना जाता है। भात पूजा करने से सभी का दोष निवारण हो जाता है।

मांगलिक कुंडली का मिलान : वर, कन्या दोनों की कुंडली ही मांगलिक हो तो विवाह शुभ और दाम्पत्य जीवन आनंदमय रहता है। एक सादी एवं एक कुंडली मांगलिक नहीं होना चाहिए। मांगलिक कुंडली के सामने मंगल वाले स्थान को छोड़कर दूसरे स्थानों में पाप ग्रह हो तो दोष भंग हो जाता है। उसे फिर मंगली दोषरहित माना जाता है तथा केंद्र में चंद्रमा 1, 4, 7, 10वें भाव में हो तो मंगली दोष दूर हो जाता है। शुभ ग्रह एक भी यदि केंद्र में हो तो सर्वारिष्ट भंग योग बना देता है।

इन खूबसूरत अदाकाराओं ने तलाकशुदा मर्दों से रचाई शादी

मनोरंजन जगत एक ऐसी जगह है जहां आए दिन रिश्ते बनते और बिगड़ते हुए नजर आते हैं। यहां पर कब किसका रिश्ता बन जाए और कब किसका बिगड़ जाए ये किसी को नहीं पता। कई लोगों को जल्दी ही उनका हमसफर मिल जाता है और कई लोगों को सच्चे प्यार की तलाश में दर-दर भटकना पड़ता है। बॉलीवुड में रिश्ते बनने और बिगड़ने की खबरें अक्सर आती रहती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी अदाकाराएं हैं जिन्होंने तलाकशुदा या फिर पहले से ही शादीशुदा पुरुषों के साथ शादी की है।

शादी के बाद जी रही हैं अच्छी जिंदगी

बॉलीवुड में कई ऐसी हसीनाएं हैं जिन्हें दूसरी पत्नी बनने से बिलकुल भी एतराज नहीं था और आज वो एक अच्छी जिंदगी जी रही हैं। अपने इस आर्टिकल में हम आपको उन अभिनेत्रियों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्होंने तलाकशुदा से शादी की और अपनी जिंदगी की नई शुरुआत की। तो चलिए देखते हैं इस लिस्ट में कौन कौन सी अभिनेत्रियां शामिल हैं।

अमृता अरोड़ा

अभिनेत्री अमृता अरोड़ा ने साल 2009 में रियल स्टेट बिजनेसमैन शकील लद्दाख से शादी की थी। अमृता की ये पहली शादी थी, लेकिन शकील की ये दूसरी शादी थी। शकील लद्दाख की पहली शादी अमृता की करीबी दोस्त निशा राणा से हुई थी। निशा ने खुलेआम अमृता पर ये आरोप लगाया था कि वह उनके और शकील के रिश्ते के बीच में आई हैं।

विद्या बालन

विद्या बालन ने 14 दिसंबर साल 2012 में सिद्धार्थ रॉय कपूर से निजी समारोह के दौरान शादी की थी। विद्या की जहां ये पहली शादी थी, तो वहीं सिद्धार्थ रॉय कपूर की ये तीसरी शादी है। हालांकि इस कपल का खास बॉन्ड देखने के बाद इस बात का अंदाजा लगाना बिलकुल भी मुश्किल नहीं है कि ये दोनों साथ में कितने ज्यादा खुश थे।

लारा दत्ता

मिस यूनिवर्स रह चुकी लारा दत्ता ने 16 फरवरी 2011 को टेनिस प्लेयर महेश भूपति से शादी की थी। महेश भूपति की पहली शादी पूर्व मिस इंडिया इंटरनेशनल श्वेता जयशंकर से हुई थी, जो साल 2009 में टूट गई थी। लारा दत्ता ने महेश की टूटी हुई शादी से बाहर निकलने में बहुत मदद की थी, जिसके बाद से ही दोनों एक-दूसरे को अपना दिल दे बैठे।

रानी मुखर्जी

रानी मुखर्जी और आदित्य चोपड़ा ने लंबे समय तक एक-दूसरे को डेट किया। इन दोनों ने 21 अप्रैल साल 2014 में एक-दूसरे से शादी रचाई। रानी से पहले आदित्य चोपड़ा ने अपने दोस्त पायल खन्ना से शादी की थी, जोकि सात साल बाद टूट गई यही नहीं, रानी पर यह आरोप लगते आए हैं कि आदित्य संग बढ़ती नजदीकियों की वजह से ही उन्होंने तलाक दे दिया था।

रवीना टंडन

रवीना टंडन भी अनिल थडानी की दूसरी पत्नी हैं। रवीना और अनिल थडानी की शादी 22 फरवरी 2004 को राजस्थान के जग पैलेस में हुई थी। बता दें कि रवीना से पहले अनिल थडानी की शादी नताशा सिप्पी से हुई थी, जो कुछ समय में ही टूट गई थी। ऐसा कहा जाता है जब अनिल की मुलाकात रवीना से हुई थी तो उस दौरान वो तलाकशुदा थे।

अब कहां है वो घुंघराले बालों वाली लड़की, शादी करने के बाद छोड़ दिया बॉलीवुड

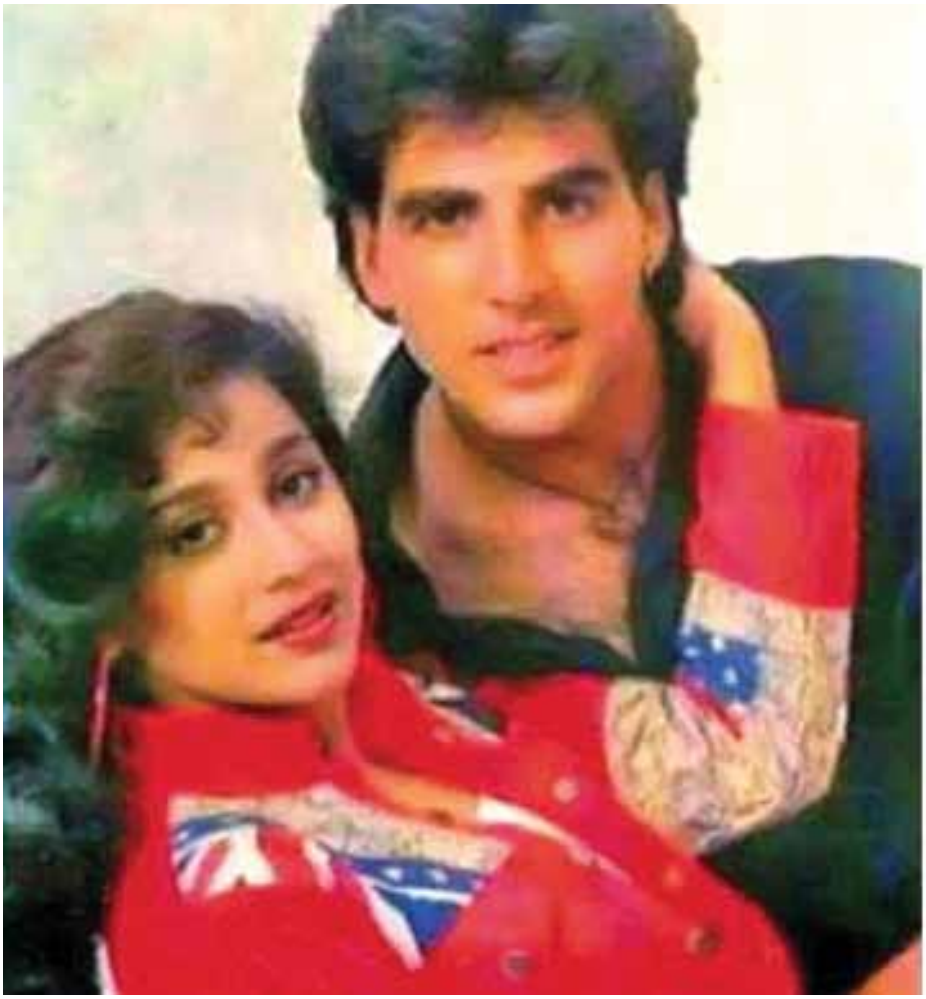

90 के दशक की कुछ अभिनेत्रियां ऐसी थीं जिनकी एक झलक लोगों को दीवाना बनाने के लिए काफी थी। हालांकि कुछ एक सुपरहिट फिल्में देने के बाद ये हसीनाएं या तो ग्लैमर की इंडस्ट्री से दूर हो गईं या फिर शादी कर अपना घर बसा लिया। ऐसी ही एक अभिनेत्री थीं फरहीन। साल 1992 में आई फिल्म 'जान तेरे नाम' (Jaan Tere Naam) से रातों रात हिट हुईं फरहीन उस वक्त हर किसी की पहली पसंद थीं लेकिन ऐसा क्या हुआ कि उन्होंने फिल्में करनी छोड़ दी।

फरहीन ने अपने करियर में अक्षय कुमार, रोनित रॉय जैसे टॉप स्टार्स के साथ काम किया है। आपको बता दें कि करियर के पीक पर फरहीन ने शादी कर ली थी और इंडस्ट्री से दूरी बना ली थी। फरहीन लगभग 24 सालों से इंडस्ट्री से दूर बनी हुई हैं लेकिन अब उनकी वापसी की खबरें हैं। फरहीन ने 1992 में आई फिल्म 'जान तेरे नाम' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। न सिर्फ ये फिल्म बल्कि इसके गाने भी सुपरहिट हुए थे। इसके बाद उन्होंने 'सैनिक', 'नजर के सामने', 'फौज', 'दिल की बाजी' और 'आग का तूफान' जैसी कुछ फिल्मों में काम किया।

उनकी पॉपुलैरिटी में भी इजाफा हो रहा था और शायद इसी के चलते उन्हें साउथ से भी खूब ऑफर आए। साउथ में भी उन्होंने कई फिल्मों में काम किया... लेकिन अचानक ही फरहीन ने फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया। दरअसल फरहीन ने का दिल क्रिकेटर मनोज प्रभाकर पर आ गया। दोनों ने इस प्यार भरे रिश्ते को शादी का रंग दे दिया। फिर क्या था फरहीन सबकुछ छोड़ पिया के घर चली गई।

कहा जाता है, शादी से पहले दोनों का चार साल तक अफेयर रहा। कहा तो ये भी जाता है कि फरहीन ने मनोज प्रभाकर से गुपचुप तरीके से निकाह किया था। हालांकि इसमें कितनी सच्चाई है ये नहीं पता। शादी के बाद फरहीन मुंबई से दिल्ली शिफ्ट हो गईं। फरहीन कहती हैं, 'शादी के बाद अगर मैं मुंबई में ही रहती तो शायद मैं आज भी काम कर रही होती।' फरहीन प्रभाकर ना सिर्फ अपने घर-परिवार को संभाल रही हैं, बल्कि वो आज एक सफल बिजनेसवूमन भी हैं। फरहीन का अपना हर्बल स्किन केयर प्रोडक्ट्स का बिजनेस है। वो नेचुरेंस हर्बल्स नाम की कंपनी की डायरेक्टर हैं जिसे उन्होंने अपने पति मनोज प्रभाकर के साथ मिलकर खोला। पिछले 20 सालों से वो इस कंपनी को संभाल रही हैं। इसके अलावा वह एक्टिंग की दुनिया में भी वापसी करना चाहती हैं।

एक्ट्रेस एवलिन ने दिया बेटी को जन्म, जून में किया था गुपचुप शादी का खुलासा

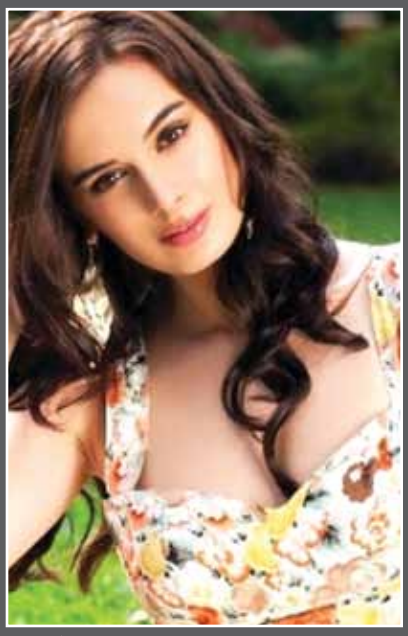

बॉलीवुड अभिनेत्री और मॉडल एवलिन शर्मा ने हाल ही में एक बेटी को जन्म दिया है। अभिनेत्री ने इस बारे में फैंस को अपने सोशल मीडिया अकाउंट के जरिए जानकारी दी। बेटी के जन्म के बाद से ही एवलिन और उनके पति तुषान भिंडी बेहद खुश हैं। इस खुशखबरी को फैंस के साथ बांटते हुए एक्ट्रेस इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर भी शेयर की। अपनी बेटी की पहली तस्वीर साझा हुए एक्ट्रेस ने उनका नाम भी बताया।

इतना ही नहीं उन्होंने अपनी बेटी के जन्म के साथ ही बेटी का इंस्टाग्राम अकाउंट भी बना दिया है। एवलिन ने शुक्रवार को पोस्ट शेयर करते हुए बताया कि उन्होंने बेटी एवा रानिया भिंडी को जन्म दिया। इसके साथ ही उन्होंने बेटी को चूमते हुए अपनी एक तस्वीर इंस्टाग्राम पर शेयर की और लिखा, 'मेरी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण किरदार। एवा रानिया भिंडी की मां।'

इस पोस्ट के साथ ही एवलिन शर्मा ने यह खुलासा किया कि उन्होंने अपनी बेटी का नाम एवा रखा है। एवा एक लैटिन नाम है, जिसका मतलब होता है 'चिड़िया', 'जिंदगी', 'पानी'। इसके अलावा इसका एक और महत्व है। सेंट एवा, राजा पेपिन की बेटी थीं, जो अंधेपन से ठीक हो गई थीं। इसके बाद वह एक नन बन गईं। गौरतलब है कि पेपिन रोमन साम्राज्य में जर्मन भाषी लोगों के राजा थे।

दोस्त की शादी में ऐसी ड्रेस पहनकर पहुंचीं आलिया

बॉलीवुड एक्ट्रेस आलिया भट्ट के फैशन सेंस को खूब पसंद किया जाता है। लेकिन हाल ही में आलिया भट्ट एक शादी में ऐसा ब्लाउट पहनकर पहुंच गईं जिसकी वजह से उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल किया जाने लगा। आलिया भट्ट हाल ही में आदित्य सील और अनुष्का रंजन की संगीत पार्टी में पहुंची थीं। इस पार्टी में आलिया भट्ट के बोल्ड आउटफिट से सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। आलिया भट्ट ने लाइन ग्रीन एंड पिंक कलर का लहंगा पहना हुआ था। इस लहंगे के साथ आलिया ने क्रॉस नेक्ड ब्लाउज विद ओपन बैक पेयर किया था। आलिया के ब्लाउड की डिजाइन लोगों को रास नहीं आई और उन्हें सोशल मीडिया पर ट्रोल कर दिया गया। एक यूजर ने लिखा, ये किस तरह का ब्लाउज आलिया ने पहना है। फैशन के नाम पर सब कुछ जायज है। एक अन्य ने लिखा, जल्दी जल्दी में ब्लाउज उल्टा ही पहन लिया। वहीं एक ने लिखा, फैशन डिजास्टर ऑफ द ईयर का अवॉर्ड मिस आलिया भट्ट को जाना चहिए। वर्कफ्रंट की बात करे तो आलिया भट्ट जल्द ही गंगूबाई काठियावाड़ी, ब्रह्मास्त्र, रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जैसी फिल्मों में दिखाई देंगी। इसके अलावा एक्ट्रेस अपनी शादी की खबरों को लेकर भी सुर्खियों में हैं।

जब प्यार के खातिर नयनतारा ने बदल दिया था अपना धर्म

दक्षिण भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की सफल अभिनेत्रियों में से एक नयनतारा आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। नयनतारा ने इस इंडस्ट्री को कई हिट फिल्में देकर खुद की एक अलग पहचान बनाई है और आज यही सफल अभिनेत्री अपना 37वां जन्मदिन मना रही हैं। जी हां, आज नयनतारा का जन्मदिन है। इस खास मौके पर फैंस से लेकर सेलेब्स तक, अभिनेत्री को अलग-अलग अंदाज में जन्मदिन की बधाई दे रहे हैं। नयनतारा ने अपनी जिंदगी में खूब कामयाबी हासिल की है लेकिन इसके बावजूद वह अपनी लव लाइफ की वजह से अक्सर लाइमलाइट बटोरती रहती हैं। नयनतारा को दक्षिण भारतीय सिनेमा की लेडी सुपरस्टार के रूप में जाना जाता है और ये टैग उन्हें प्रभुदेवा ने दिया था। एक समय था जब नयनतारा और प्रभुदेवा एक दूसरे के प्यार में थे। दोनों शादी करना चाहते थे। लेकिन अचानक दोनों अलग हो गए। आइए आज आपको दोनों की लव स्टोरी बताते हैं।

नयनतारा का बचपन

नयनतारा का जन्म 18 नवंबर 1984 को बेंगलुरु में एक मलयाली क्रिश्चियन फैमिली में हुआ था। उनका असली नाम डायना मरियम कुरियन है। एक्ट्रेस के पिता कुरियन कोदियात्तु वायुसेना अधिकारी थे। इसी वजह से नयनतारा का बचपन देश के अलग-अलग शहरों में गुजरा है। उन्होंने चेन्नई, दिल्ली, गुजरात और थिरुवला जैसी जगहों पर रहकर अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी की। नयनतारा ने स्कूल के दिनों में ही मॉडलिंग की दुनिया में कदम रखा दिया था।

नयनतारा का फिल्मी सफर

नयनतारा ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत मलयालम फिल्म 'मनासिनकारे' से की थी। इस फिल्म में नयनतारा के साथ जयराम नजर आए थे। इसके बाद उन्होंने साल 2005 में फिल्म 'अय्या' से तमिल फिल्म इंडस्ट्री में एंट्री मारी और फिर फिल्म 'लक्ष्मी' से नयनतारा ने तेलुगू इंडस्ट्री में कदम रखा। अभिनेत्री की सबसे सफल फिल्म 'चंद्रमुखी' रही। इस फिल्म में नयनतारा के साथ रजनीकांत नजर आए।

प्रभु के साथ ऐसे शुरू हुआ रिश्ता

नयनतारा और प्रभुदेवा का रिश्ता फिल्म 'Villu' के सेट से शुरू हुआ था। इस फिल्म में नयनतारा बतौर लीड एक्ट्रेस नजर आई थीं और प्रभुदेवा इस फिल्म को डायरेक्ट कर रहे थे। नयनतारा उन दिनों सिंगल थीं लेकिन प्रभुदेवा शादीशुदा थे। दोनों ने एक-दूसरे को लंबे समय तक डेट किया। दावा किया जाता है कि दोनों लंबे समय तक लिव इन में भी रहे थे। नयनतारा और प्रभुदेवा शादी भी करना चाहते थे। लेकिन प्रभुदेवा की पहली पत्नी लता ने ऐसा होने नहीं दिया।

नागिन 6 में कौन बनेगी नागिन, मौनी रॉय या महक चहल...

छोटे परदे पर नागिन शो बेहद लोकप्रिय है। सीजन खत्म होते ही दर्शक अगले सीजन का इंतजार करने लगते हैं। उत्सुकता इस बात को लेकर भी होती है कि नागिन का रोल कौन निभाएगा। शो की निर्माता एकता कपूर इशारा कर चुकी हैं कि नागिन 6 इस बार 6 जनवरी 2022 से शुरू होगा। साथ ही उन्होंने यह इशारा भी किया कि इस बार नागिन का रोल निभाने वाली एक्ट्रेस का नाम 'एम' से शुरू होगा और इसका सलमान से खास रिश्ता है। एम से जो अनुमान सामने आए हैं उसमें महिमा मकवाना भी हो सकती हैं। कुछ लोगों का मानना है कि मौनी रॉय एक बार फिर नागिन के रोल में नजर आ सकती हैं। मौनी जैसी लोकप्रियता किसी और 'नागिन' को नहीं मिली। जहां तक सलमान से खास रिश्ते की बात है तो मौनी को सलमान बहुत पसंद करते हैं और अक्सर सलमान के शो 'बिग बॉस' में मौनी नजर आती हैं जहां सलमान उनसे ढेर सारी बात करते हैं।

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

विलौआ नगरपरिषद समस्त विलौआ नगर वासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद विलौआ की कचड़ा लेने आने बाली गाड़ी में डाले।
2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है ।
3. कोरोनॉ से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है बो दूसरा डोज अवश्य लगवाये , जिनको प्रथम डोज नही लगा है बो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और बैक्सीनेशन शिविर में जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।
4. विलौआ नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे विलौआ नगर परिषद का विकास हो सके।
5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाए।
6. करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करे ।

विश्राम सिंह बघेल
प्रशासक एवं नायब तहसीलदार विलौआ

कौशलेंद्र विक्रम सिंह, कलेक्टर ग्वालियर

पीयूष श्रीवास्तव
सीएमओ पीछोर नगर परिषद

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक प्रदीप शर्मा (एसडीएम)
डबरा नगर पालिका एवं डबरा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

महेश पुरोहित
सीएमओ डबरा नगर पालिका

डबरा नगर पालिका समस्त डबरा नगर वासियों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए यह अपील करती है...

1. स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता का ध्यान रखे साथ ही कचड़ा नगर परिषद की कचरा लेने आने बाली गाड़ी में डाले।
2. डेंगू बीमारी डेंगू मच्छरों के काटने से होती है इसलिए डेंगू विमारी से बचने के लिए , आस पास गदंगी ना फैलाये, और ना आस पास गंदे पानी को एकत्रित होने दे। क्योकि मच्छरों पनपने का ऐसे स्थान बहुत उचित होते है ।
3. कोरोना से बचने के लिए वैक्सीन अवश्य लगवाए जिन्होंने प्रथम डोज लगवा लिया है वो दूसरा डोज अवश्य लगवाये, जिनको प्रथम डोज नही लगा है वो अपने आधार कार्ड को लेकर अस्पताल और वैक्सीनेशन शिविर मैं जाकर रजिस्ट्रेशन कराए और तुरंत वैक्सीन लगवाये। जिससे आप भी सुरक्षित रहे साथ मैं माता पिता और परिवार को सुरक्षित रखे।
4. पिछोर नगर परिषद हमेशा आपकी सेवा मैं तत्यपर्य है आप भी नगर परिषद का सहयोग करे जिससे पीछोर नगर परिषद का विकाश हो सके।
5. पेड़ पौधों को अवश्य लगाएं।
6. करों, नलों के विल का भुगतान अवश्य करें ।